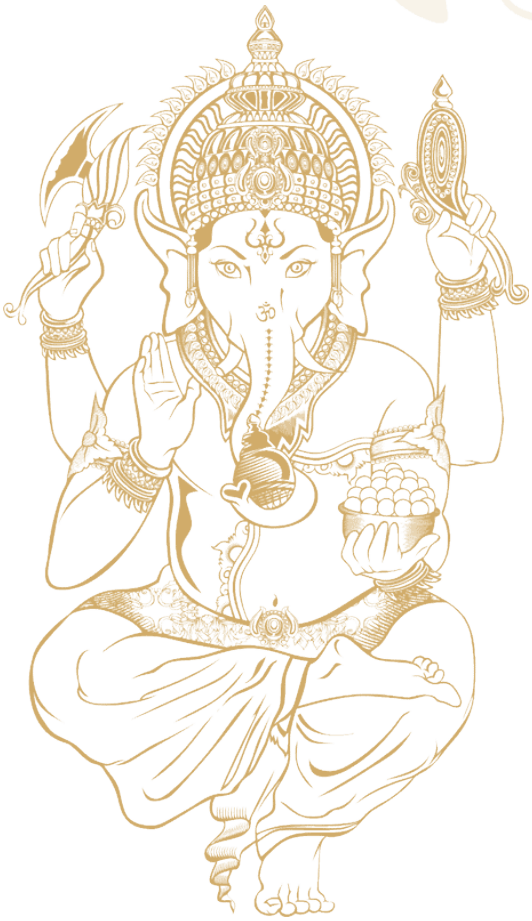

NARINDRA SHARMA

07 Sep 1980

04:40 PM

Rohru

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 119086001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**07/09/1980**
दिन	रविवार
जन्म समय	**16:40:00 घंटे**
इष्ट	26:43:52 घटी
स्थान	**Rohru**
राज्य	Himachal Pradesh
देश	India

अक्षांश	31:12:00 उत्तर
रेखांश	77:45:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:19:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	16:21:00 घंटे
वेलान्तर	00:01:59 घंटे
साम्पातिक काल	15:27:44 घंटे
सूर्योदय	05:58:27 घंटे
सूर्यास्त	18:34:59 घंटे
दिनमान	12:36:32 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	21:23:11 सिंह
लग्न के अंश	14:23:45 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मकर - शनि
राशि-स्वामी	**कर्क - चन्द्र**
नक्षत्र-चरण	**आश्लेषा - 4**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	शिव
करण	विष्टि
गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डो-डौली
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1902	भाद्रपद	16
पंजाबी	संवत : 2037	भाद्रपद	23
बंगाली	सन् : 1387	भाद्रपद	22
तमिल	संवत : 2037	आवनी	23
केरल	कोल्लम : 1156	चिगंम	23
नेपाली	संवत : 2037	भाद्रपद	23
चैत्रादि	संवत : 2037	भाद्रपद	कृष्ण 13
कार्तिकादि	संवत : 2037	श्रावण	कृष्ण 13

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 13
तिथि समाप्ति काल _____: 11:55:23
जन्म तिथि _____: 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 17:24:29 घंटे
जन्म योग _____: आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग ____: शिव
योग समाप्ति काल _____: 26:57:21 घंटे
जन्म योग _____: शिव
सूर्योदय कालीन करण ____: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 11:55:23 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 62:55:32
भभोग _____: 64:46:45
भोग्य दशा काल _____: बुध 0 वर्ष 5 मा 24 दि

घात चक्र

मास _____: पौष
तिथि _____: 2-7-12
दिन _____: बुधवार
नक्षत्र _____: अनुराधा
योग _____: व्याघात
करण _____: नाग
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: तुला
सूर्य _____: सिंह
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: कन्या
बुध _____: मिथुन
गुरु _____: तुला
शुक्र _____: वृश्चिक
शनि _____: कर्क
राहु _____: धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

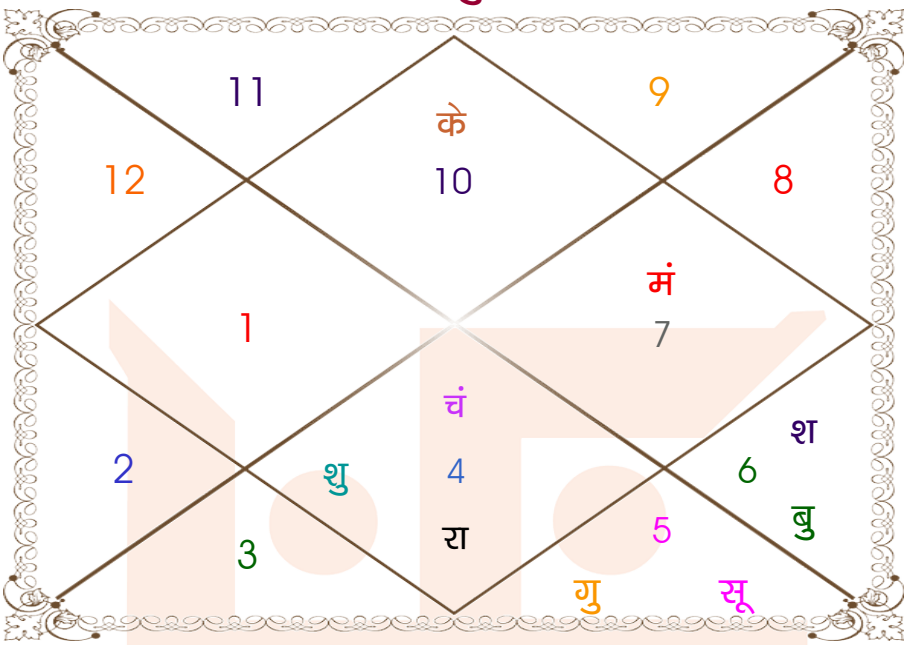

चन्द्र कुंडली

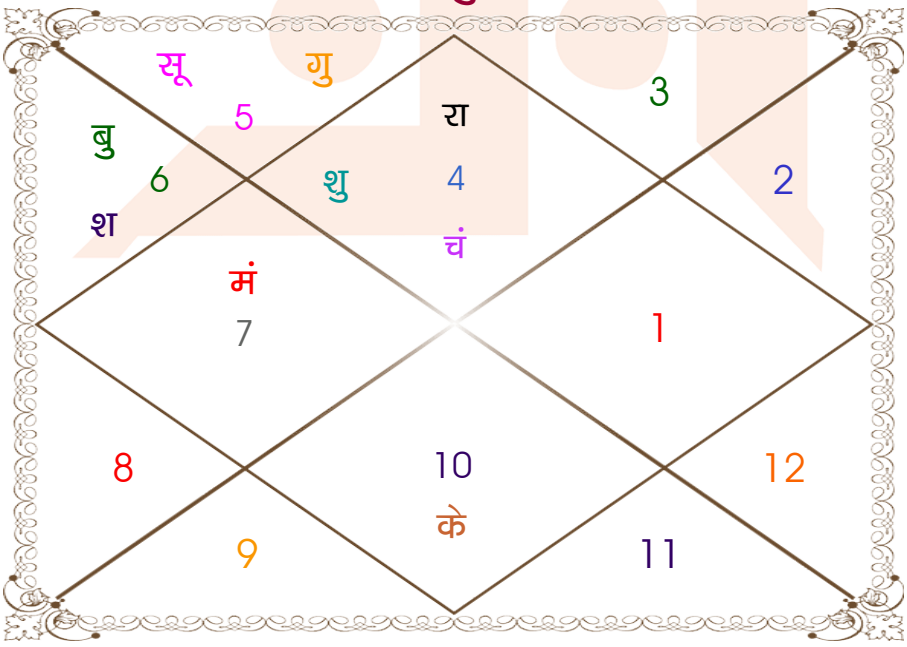

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

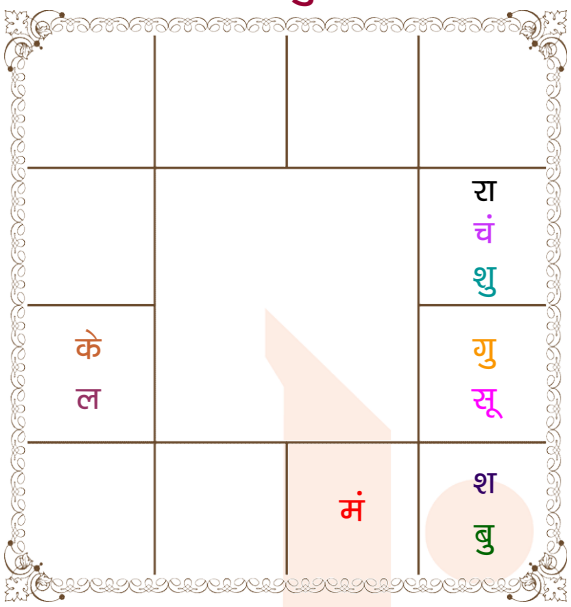

लग्न कुंडली

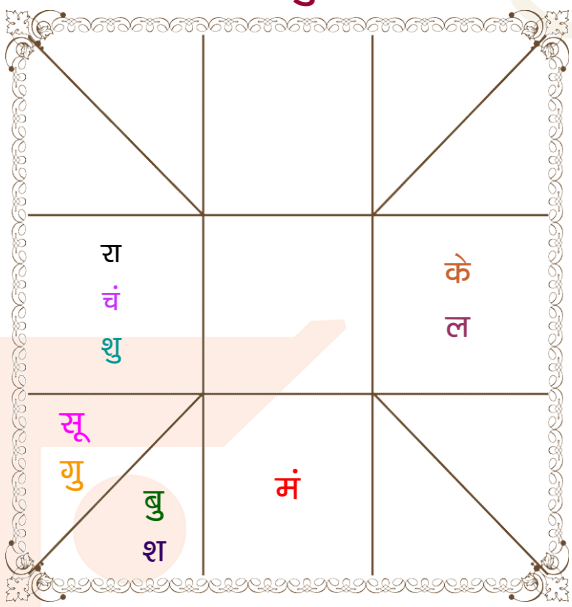

विंशोत्तरी
बुध 0वर्ष 5मा 24दि

बुध	
07/09/1980	
02/03/2084	
बुध	03/03/1981
केतु	02/03/1988
शुक्र	02/03/2008
सूर्य	03/03/2014
चन्द्र	02/03/2024
मंगल	03/03/2031
राहु	03/03/2049
गुरु	03/03/2065
शनि	02/03/2084

योगिनी
भ्रामरी 0वर्ष 1मा 11दि

उल्का	
19/10/2021	
19/10/2027	
उल्का	19/10/2022
सिद्धा	19/12/2023
संकटा	19/04/2025
मंगला	19/06/2025
पिंगला	19/10/2025
धान्या	20/04/2026
भ्रामरी	19/12/2026
भद्रिका	19/10/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	14:23:45	430:00:22	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	---
सूर्य			सिंह	21:23:11	00:58:16	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	स्वराशि
चंद्र			कर्क	29:37:16	12:15:43	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	स्वराशि
मंगल			तुला	12:28:06	00:39:48	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	सम राशि
बुध		अ	कन्या	01:56:56	01:43:53	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	उच्च राशि
गुरु		अ	सिंह	25:53:05	00:12:58	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	मित्र राशि
शुक्र			कर्क	06:07:12	01:02:43	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	बुध	शत्रु राशि
शनि		अ	कन्या	04:41:27	00:07:19	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	मित्र राशि
राहु	व		कर्क	26:35:11	00:00:17	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	गुरु	शत्रु राशि
केतु	व		मक	26:35:11	00:00:17	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष			तुला	28:33:49	00:01:57	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	---
नेप			वृश्चि	26:19:50	00:00:13	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	गुरु	---
प्लूटो			कन्या	26:41:31	00:02:02	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	गुरु	---
दशम भाव			वृश्चि	00:43:10	--	विशाखा	--	16	मंगल	गुरु	मंगल	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:35:03

लग्न-चलित

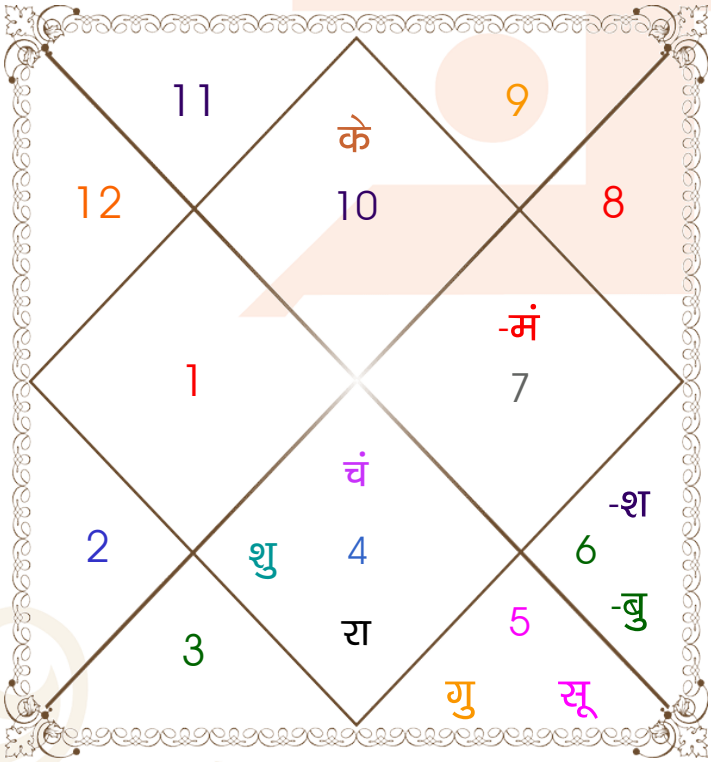

चन्द्र कुंडली

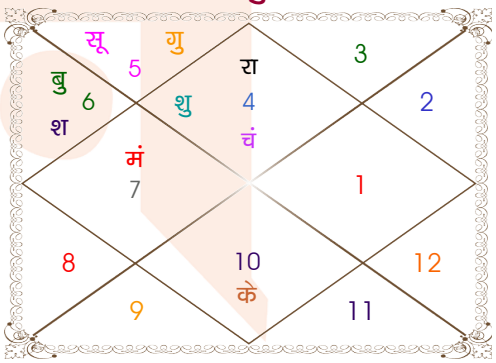

नवमांश कुंडली

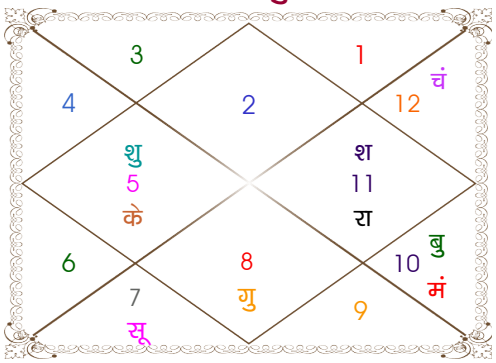

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मकर	02:06:59	मकर	14:23:45
2	कुम्भ	02:06:59	कुम्भ	19:50:13
3	मीन	07:33:28	मीन	25:16:42
4	मेष	12:59:56	वृष	00:43:10
5	वृष	12:59:56	वृष	25:16:42
6	मिथुन	07:33:28	मिथुन	19:50:13
7	कर्क	02:06:59	कर्क	14:23:45
8	सिंह	02:06:59	सिंह	19:50:13
9	कन्या	07:33:28	कन्या	25:16:42
10	तुला	12:59:56	वृश्चिक	00:43:10
11	वृश्चिक	12:59:56	वृश्चिक	25:16:42
12	धनु	07:33:28	धनु	19:50:13

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	14:23:45
2	कुम्भ	25:47:17
3	मेष	02:16:46
4	वृष	00:43:10
5	वृष	24:26:59
6	मिथुन	17:27:39
7	कर्क	14:23:45
8	सिंह	25:47:17
9	तुला	02:16:46
10	वृश्चिक	00:43:10
11	वृश्चिक	24:26:59
12	धनु	17:27:39

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

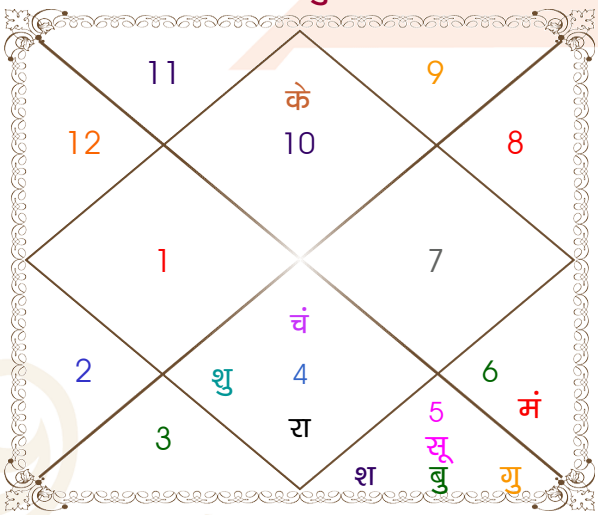

भाव कुंडली

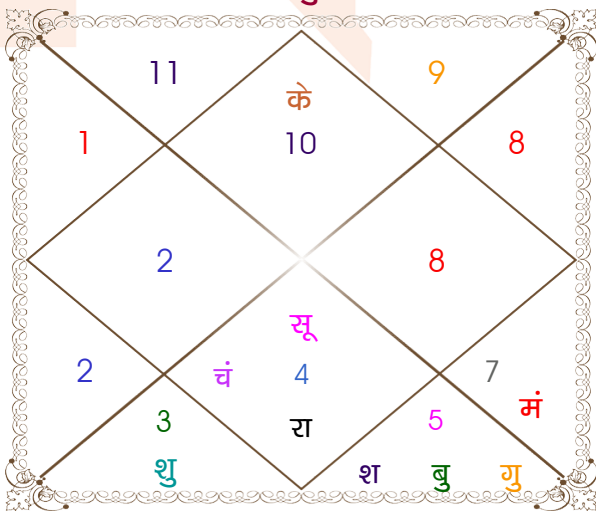

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	वृद्ध	स्वस्थ	उपवेशन	4.05	85 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	बाल	स्वस्थ	नेत्रपाणि	7.00	52 %
मंगल	मातृ	भ्रातृ	युवा	निपीदित	भोजन	2.48	24 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	मृत	विकल	भोजन	0.00	40 %
गुरु	अमात्य	धन	मृत	विकल	गमन	0.00	52 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	वृद्ध	खल	भोजन	1.44	54 %
शनि	ज्ञाति	आयु	मृत	विकल	भोजन	3.74	36 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	खल	भोजन	0.00	31 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	खल	भोजन	0.00	31 %
कुल						18.72	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

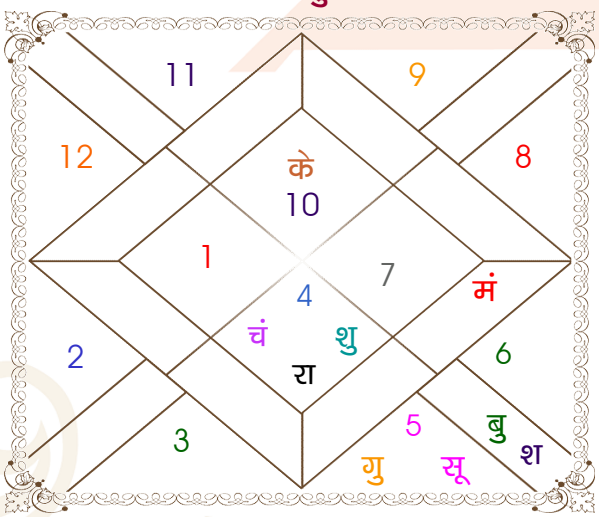

लग्न-चलित

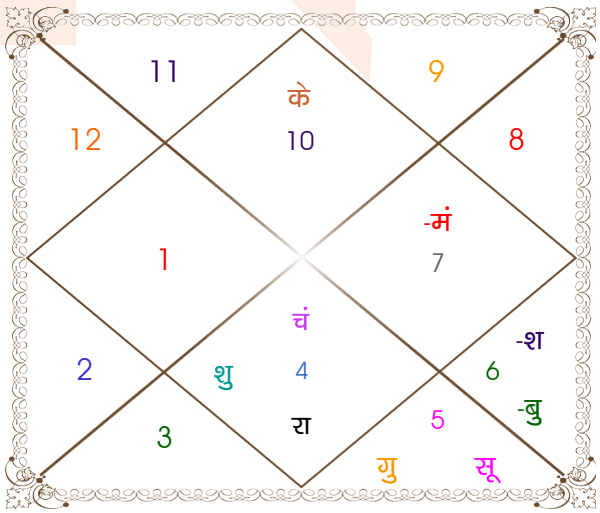

सुदर्शन चक्र

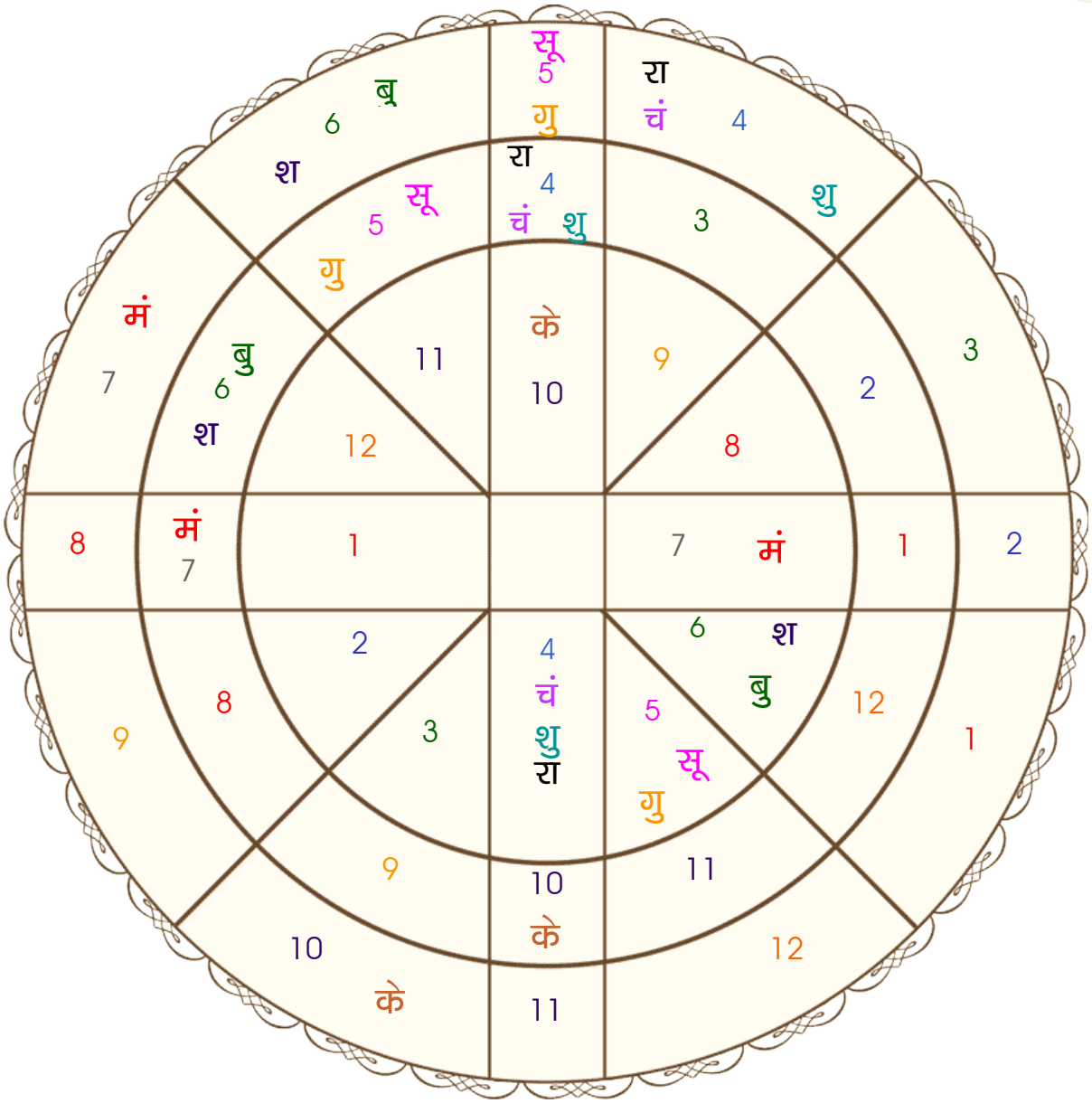

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : बुध 0 वर्ष 4 मास 8 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		सिंह	21:29:10	सूर्य	शुक्र	गुरु	चंद्र
चंद्र		कर्क	29:43:15	चंद्र	बुध	शनि	गुरु
मंगल		तुला	12:34:05	शुक्र	राहु	बुध	बुध
बुध		कन्या	02:02:55	बुध	सूर्य	गुरु	केतु
गुरु		सिंह	25:59:04	सूर्य	शुक्र	केतु	शुक्र
शुक्र		कर्क	06:13:11	चंद्र	शनि	बुध	सूर्य
शनि		कन्या	04:47:26	बुध	सूर्य	शनि	राहु
राहु	व	कर्क	26:41:10	चंद्र	बुध	गुरु	बुध
केतु	व	मक	26:41:10	शनि	मंगल	गुरु	बुध
हर्ष		तुला	28:39:48	शुक्र	गुरु	शुक्र	केतु
नेप		वृश्चि	26:25:48	मंगल	बुध	गुरु	शनि
प्लूटो		कन्या	26:47:30	बुध	मंगल	गुरु	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मक	14:29:44	शनि	चंद्र	गुरु	बुध
2	कुंभ	25:53:16	शनि	गुरु	केतु	शुक्र
3	मेष	02:22:44	मंगल	केतु	शुक्र	शनि
4	वृष	00:49:09	शुक्र	सूर्य	राहु	शुक्र
5	वृष	24:32:58	शुक्र	मंगल	राहु	गुरु
6	मिथु	17:33:38	बुध	राहु	सूर्य	मंगल
7	कर्क	14:29:44	चंद्र	शनि	राहु	शुक्र
8	सिंह	25:53:16	सूर्य	शुक्र	बुध	शनि
9	तुला	02:22:44	शुक्र	मंगल	केतु	गुरु
10	वृश्चि	00:49:09	मंगल	गुरु	मंगल	गुरु
11	वृश्चि	24:32:58	मंगल	बुध	राहु	गुरु
12	धनु	17:33:38	गुरु	शुक्र	मंगल	गुरु

के.पी. अयनांश : 23:29:04

फॉरच्युना : धनु 22:43:49

लग्न कुंडली

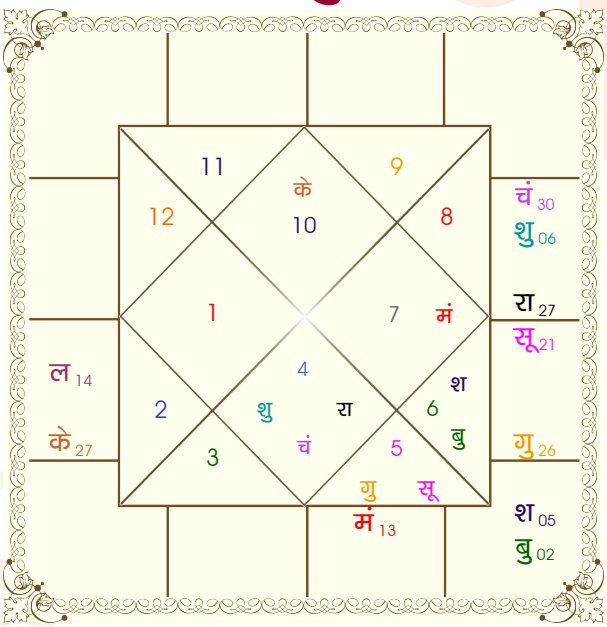

भाव कुंडली

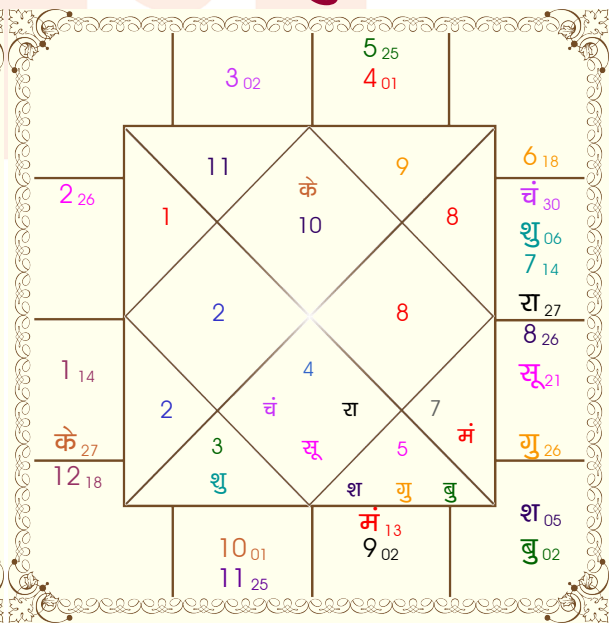

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र- शनि- केतु,
2	शुक्र- शनि-
3	मंगल- केतु-
4	सूर्य- गुरु- शुक्र-
5	सूर्य- गुरु- शुक्र-
6	सूर्य, चंद्र- बुध- गुरु, शुक्र, राहु-
7	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शनि, राहु,
8	सूर्य- चंद्र, बुध+ गुरु, शुक्र, शनि+ राहु,
9	सूर्य- मंगल, गुरु- शुक्र- केतु,
10	मंगल- केतु-
11	मंगल- केतु-
12	गुरु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 5- 6, 7, 8- 9-
चंद्र	6- 7, 8,
मंगल	3- 7, 9, 10- 11-
बुध	6- 7, 8+
गुरु	4- 5- 6, 8, 9- 12-
शुक्र	1- 2- 4- 5- 6, 8, 9-
शनि	1- 2- 7, 8+
राहु	6- 7, 8,
केतु	1, 3- 9, 10- 11-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	शनि

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	के	शु	श
2	--	--	शु	श
3	--	--	के	मं
4	--	--	सू गु	शु
5	--	--	सू गु	शु
6	सू गु	शु	चं रा	बु
7	मं बु श	सू चं रा	--	चं
8	चं शु रा	बु गु श	बु श	सू
9	के	मं	सू गु	शु
10	--	--	के	मं
11	--	--	के	मं
12	--	--	--	गु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	8	4	सिंह	7
चंद्र	7	1	कर्क	7
मंगल	3,10,11	5,9	तुला	9
बुध	6	11	कन्या	8
गुरु	12	2,10	सिंह	8
शुक्र	4,5,9	8,12	कर्क	6
शनि	1,2	7	कन्या	8
राहु	---	6	कर्क	7
केतु	---	3	मकर	1

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	4,5,9	8,12	6	12	2,10	8
चंद्र	6	11	8	1,2	7	8
मंगल	---	6	7	6	11	8
बुध	8	4	7	12	2,10	8
गुरु	4,5,9	8,12	6	---	3	1
शुक्र	1,2	7	8	6	11	8
शनि	8	4	7	1,2	7	8
राहु	6	11	8	12	2,10	8
केतु	3,10,11	5,9	9	12	2,10	8

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य 141.39	चंद्र 119.62	मंगल 192.47	बुध 151.95	गुरु 145.88	शुक्र 96.12	शनि 154.69	राहु 116.59	केतु 296.59	हर्ष 208.56	नेप 236.33	प्लूटो 176.69
सूर्य 141.39	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 4.48	युति 8.91	-- 0.00	युति 1.77	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	चतु 0.82	-- 0.00
चंद्र 119.62	-- 0.00	-- 0.00	पंचा 0.24	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.50	सप्त 9.50	चतु 2.89	पंच 1.95	तृती 2.16
मंगल 192.47	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	4था 0.92	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
बुध 151.95	युति 4.48	-- 0.00	नवां 0.69	-- 0.00	युति 8.05	-- 0.00	युति 9.59	-- 0.00	-- 0.00	तृती 1.90	चतु 0.30	-- 0.00
गुरु 145.88	युति 8.91	-- 0.00	-- 0.00	युति 8.05	-- 0.00	-- 0.00	युति 6.04	-- 0.00	षष्ठ 0.45	तृती 2.29	चतु 2.98	-- 0.00
शुक्र 96.12	अष्ट 0.91	-- 0.00	-- 0.00	तृती 1.38	-- 0.00	-- 0.00	तृती 2.79	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
शनि 154.69	युति 1.77	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.59	युति 6.04	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	3रा 8.01	-- 0.00	-- 0.00
राहु 116.59	-- 0.00	युति 9.50	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 10.00	चतु 2.61	पंच 2.99	तृती 3.00
केतु 296.59	-- 0.00	सप्त 9.50	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 10.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
हर्ष 208.56	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	चतु 2.61	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
नेप 236.33	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	तृती 2.99	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
प्लूटो 176.69	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	पंच 3.00	-- 0.00	तृती 2.99	-- 0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	284.40	319.84	355.28	30.72	55.28	79.84	104.40	139.84	175.28	210.72	235.28	259.84
सूर्य	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच
141.39	0.00	9.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.87	0.00	0.00	1.57	2.76
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	--	तृती	चतु	पंच	--
119.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.26	2.88	1.26	0.00
मंगल	4था	--	--	8वां	8वां	--	--	--	--	--	--	--
192.47	9.80	0.00	0.00	3.34	2.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
बुध	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--
151.95	0.00	2.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.98	0.00	2.85	0.00	0.00
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां
145.88	0.00	8.06	0.00	8.75	0.00	0.00	0.00	8.06	0.00	0.90	2.96	8.06
शुक्र	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	पंच	--	--
96.12	6.47	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.47	0.00	0.00	0.47	0.00	0.00
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	--
154.69	0.00	0.15	0.00	0.00	5.52	0.00	0.00	0.15	0.00	9.15	0.00	0.00
राहु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--
116.59	2.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.90	0.00	2.83	1.41	2.83	0.00
केतु	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
296.59	2.90	0.00	2.83	1.41	2.83	0.00	2.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--
208.56	0.00	0.00	0.00	9.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--
236.33	0.00	0.00	2.89	0.00	9.94	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--
176.69	0.00	0.00	9.89	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.89	0.00	2.80	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	284.40	325.79	2.28	30.72	54.45	77.46	104.40	145.79	182.28	210.72	234.45	257.46
सूर्य	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--	चतु	पंच
141.39	0.00	8.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.96	0.17	0.00	2.09	1.55
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	--	तृती	चतु	पंच	--
119.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.30	2.88	0.65	0.00
मंगल	4था	--	--	8वां	8वां	--	--	--	युति	--	--	तृती
192.47	9.80	0.00	0.00	3.34	3.11	0.00	0.00	0.00	4.83	0.00	0.00	0.78
बुध	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--
151.95	0.00	7.99	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.99	0.00	2.85	0.00	0.00
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां
145.88	0.00	10.00	0.00	8.75	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.90	2.79	6.35
शुक्र	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	चतु	पंच	--	--
96.12	6.47	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.47	0.00	1.61	0.47	0.00	0.00
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	10वा	--	युति	--	3रा	--	--
154.69	0.00	5.96	0.00	0.00	4.78	2.31	0.00	5.96	0.00	9.15	0.00	0.00
राहु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--
116.59	2.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.90	0.00	0.24	1.41	2.54	0.00
केतु	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
296.59	2.90	0.00	0.24	1.41	2.54	0.00	2.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--
208.56	0.00	2.24	0.00	9.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--
236.33	0.00	2.97	0.04	0.00	9.81	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--
176.69	0.00	0.15	8.34	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.34	0.00	2.50	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

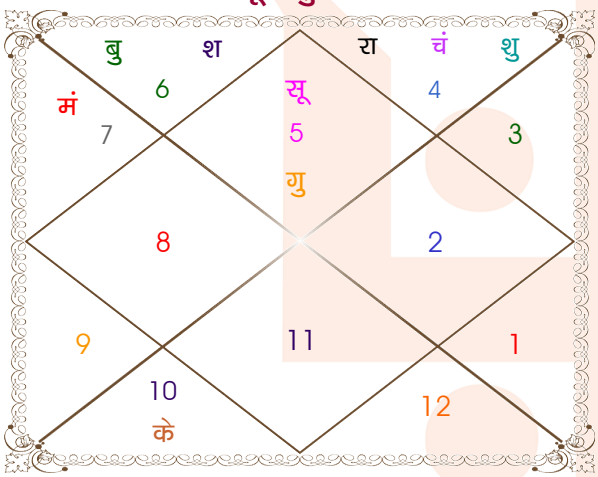

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

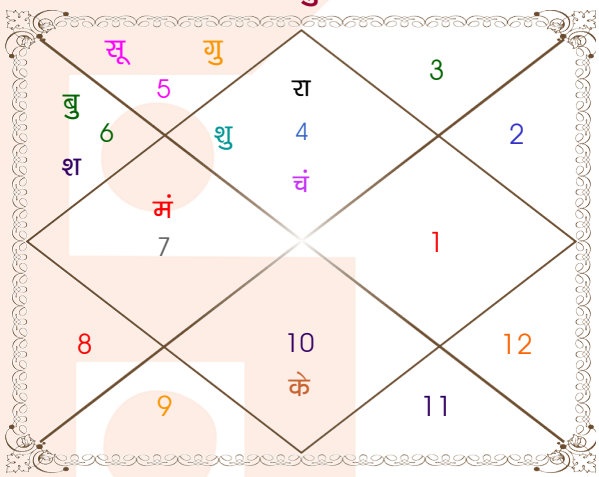

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

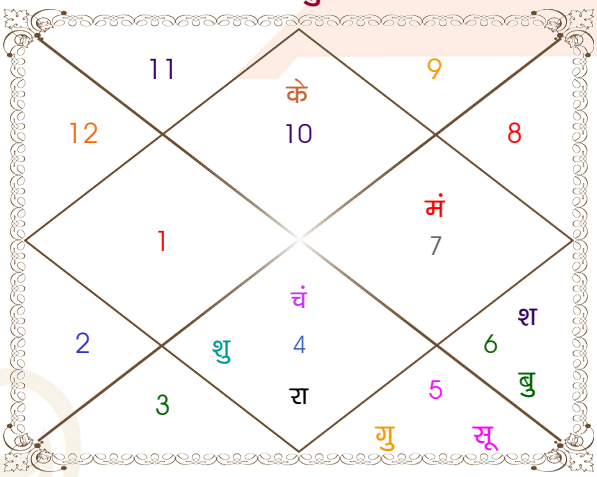

देह विचारः

होरा कुंडली

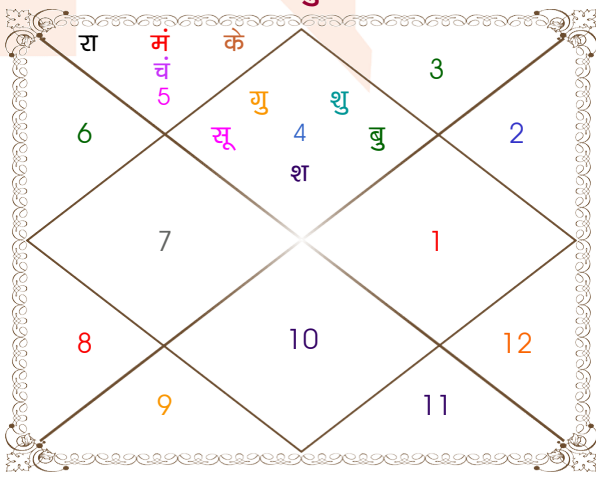

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

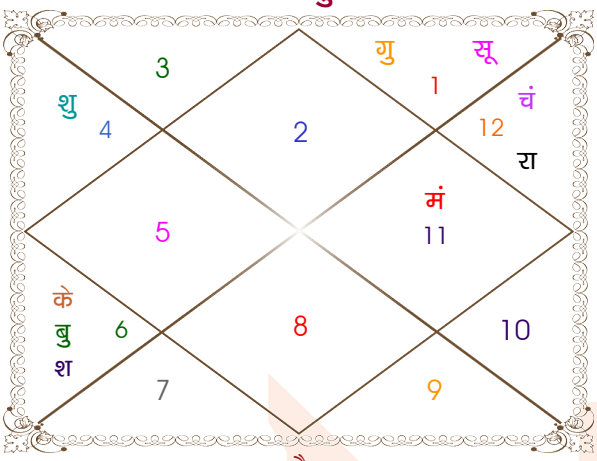

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

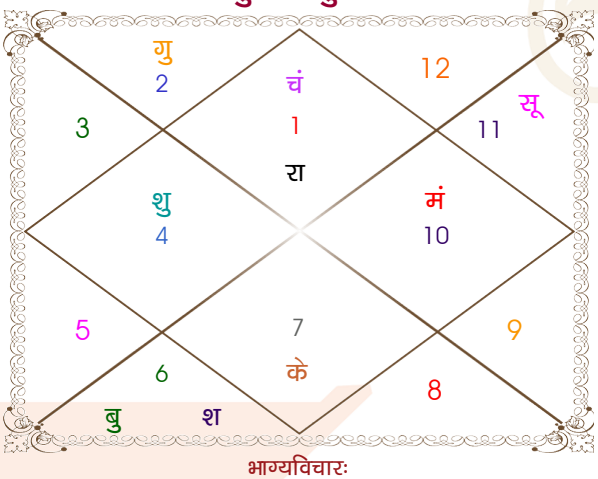

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

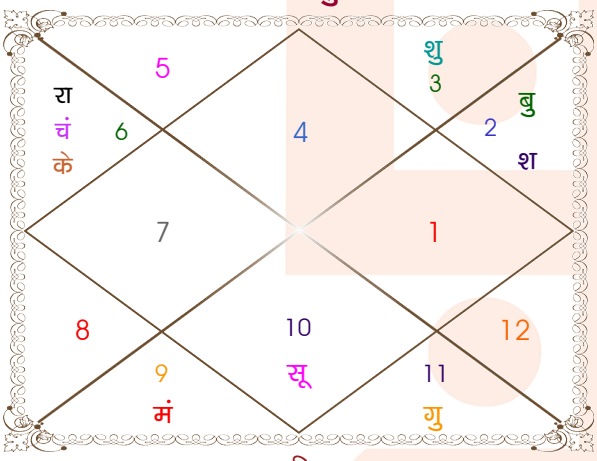

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

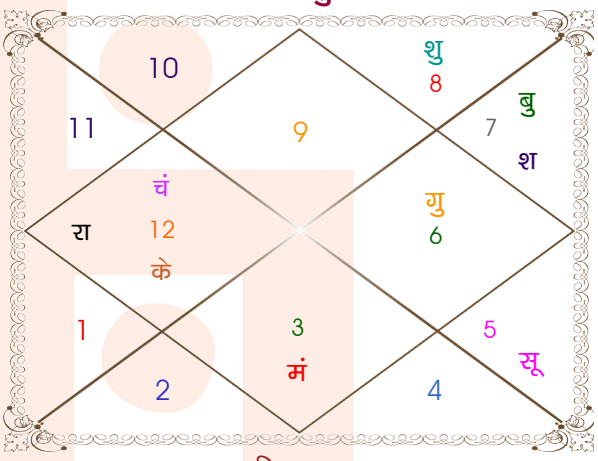

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

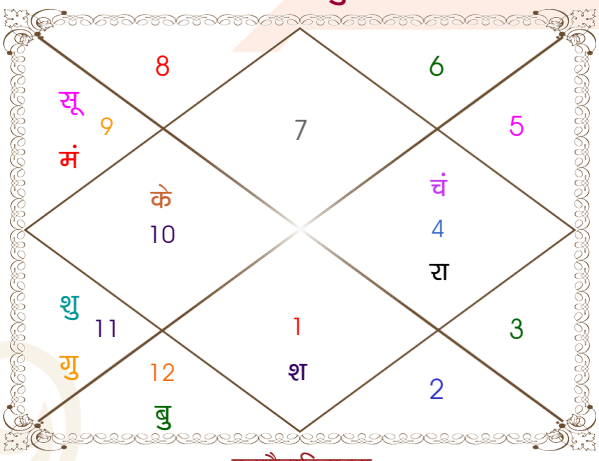

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

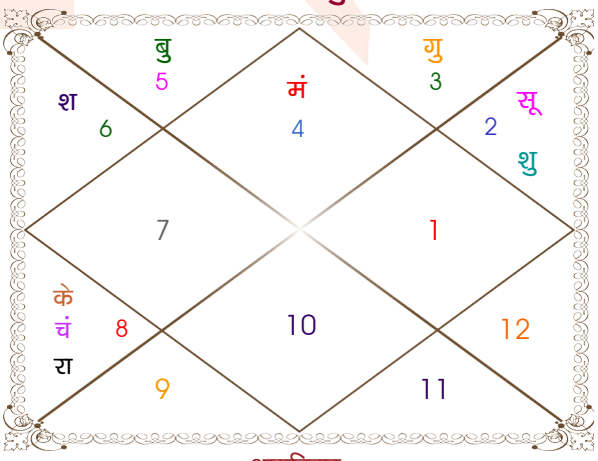

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

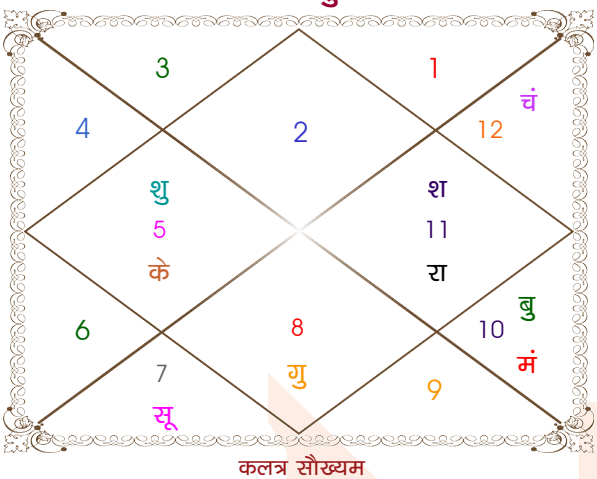

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

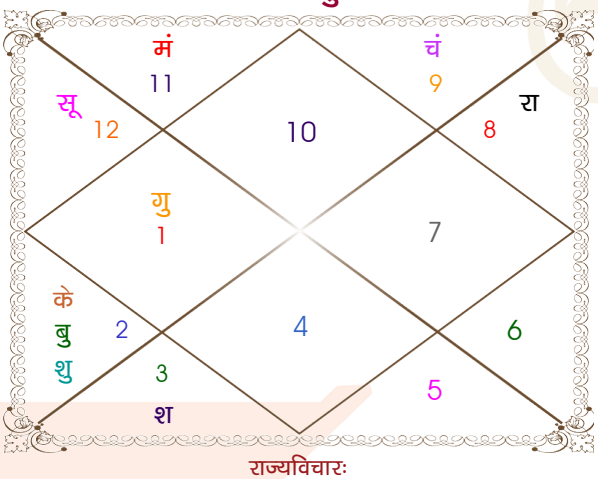

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

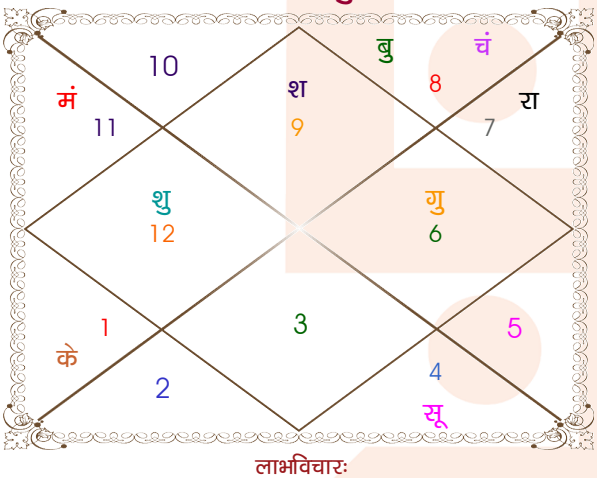

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

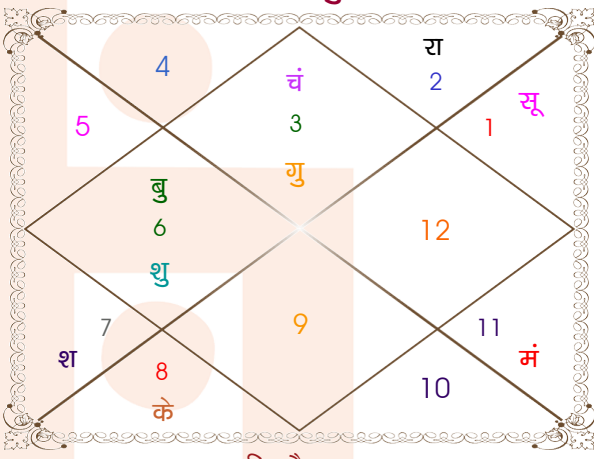

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

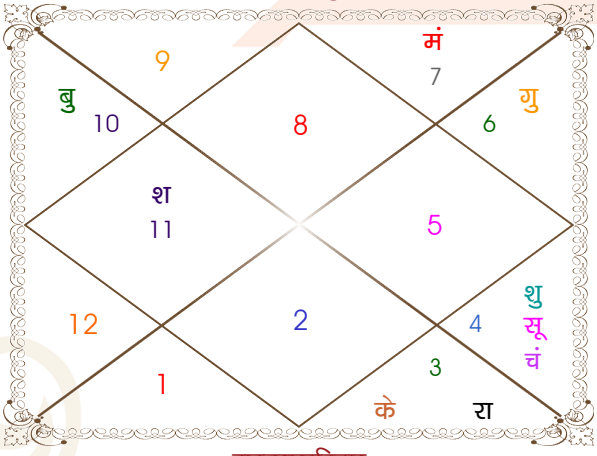

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

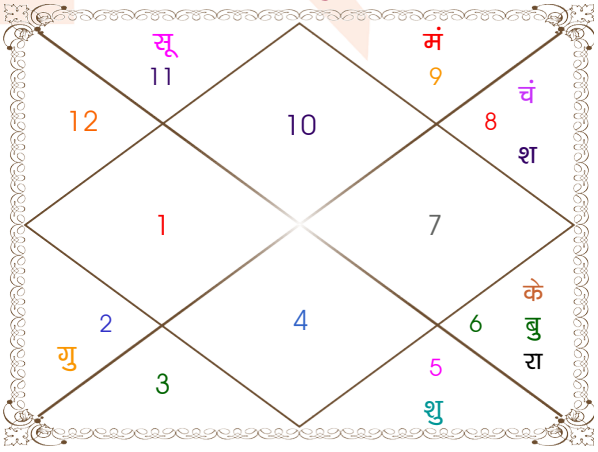

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

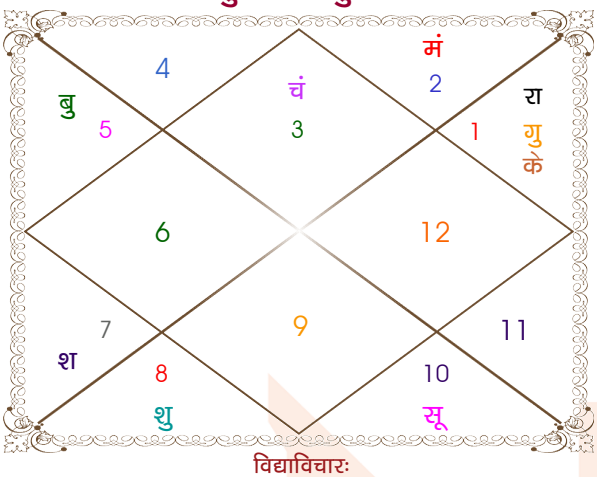

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

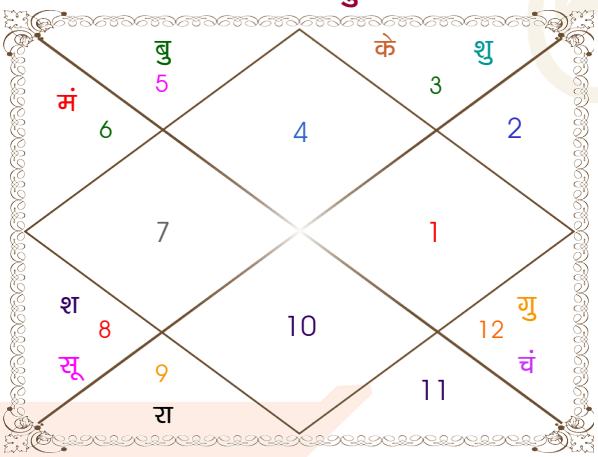

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

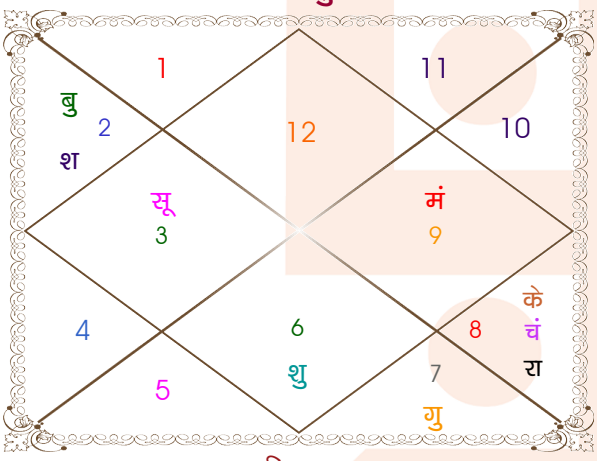

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

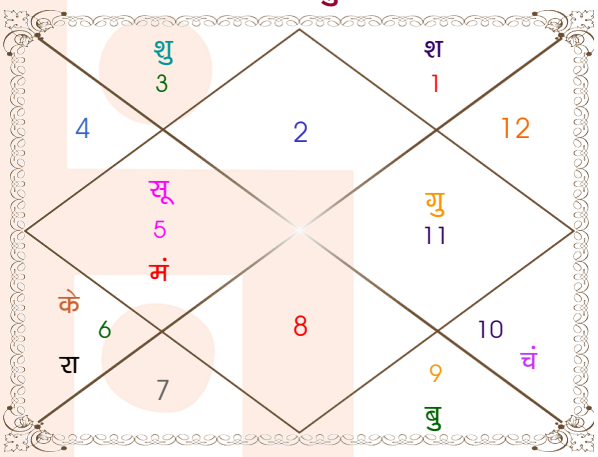

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

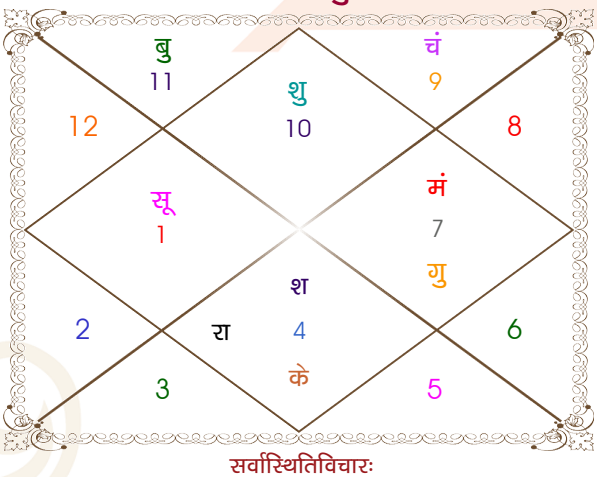

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

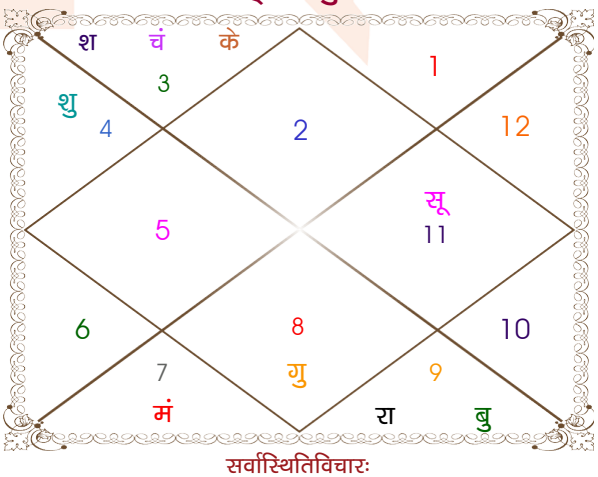

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मक	सिंह	कर्क	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	कन्या	कर्क	मक
होरा	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	वृष	मेष	मीन	कुंभ	कन्या	मेष	कर्क	कन्या	मीन	कन्या
चतुर्थांश	मेष	कुंभ	मेष	मक	कन्या	वृष	कर्क	कन्या	मेष	तुला
सप्तमांश	तुला	धनु	कर्क	धनु	मीन	कुंभ	कुंभ	मेष	कर्क	मक
नवमांश	वृष	तुला	मीन	मक	मक	वृश्चि	सिंह	कुंभ	कुंभ	सिंह
दशमांश	मक	मीन	धनु	कुंभ	वृष	मेष	वृष	मिथु	वृश्चि	वृष
द्वादशांश	मिथु	मेष	मिथु	कुंभ	कन्या	मिथु	कन्या	तुला	वृष	वृश्चि
षोडशांश	वृश्चि	कर्क	कर्क	तुला	मक	कन्या	कर्क	कुंभ	मिथु	मिथु
विंशांश	मक	कुंभ	वृश्चि	धनु	कन्या	वृष	सिंह	वृश्चि	कन्या	कन्या
चतुर्विंशांश	मिथु	मक	मिथु	वृष	सिंह	मेष	वृश्चि	तुला	मेष	मेष
सप्तविंशांश	कर्क	वृश्चि	मीन	कन्या	सिंह	मीन	मिथु	वृश्चि	धनु	मिथु
त्रिंशांश	मीन	मिथु	वृश्चि	धनु	वृष	तुला	कन्या	वृष	वृश्चि	वृश्चि
खवेदांश	वृष	सिंह	मक	सिंह	धनु	कुंभ	मिथु	मेष	कन्या	कन्या
अक्षवेदांश	मक	मेष	धनु	तुला	कुंभ	तुला	मक	कर्क	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	वृष	कुंभ	मिथु	तुला	धनु	वृश्चि	कर्क	मिथु	धनु	मिथु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	5 कन्दुक
चन्द्र	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
मंगल	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
बुध	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	5 कन्दुक
गुरु	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
शुक्र	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
राहु	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	16.45	17.10	15.45	15.65	14.40	8.20	13.70	11.50	7.35
सप्तवर्ग	15.55	17.48	15.83	15.35	14.43	9.70	13.45	10.68	7.25
दशवर्ग	14.28	17.70	15.68	15.38	14.78	9.43	12.70	11.48	8.13
षोडशवर्ग	14.45	17.40	15.40	14.43	14.50	8.78	13.30	12.20	7.40

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	सम	सम
शनि	सम	सम	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	16	31	25	56	43	27	45
सप्तवर्गज बल	143	150	128	154	105	81	105
ओजयुग्मक बल	30	30	15	0	15	15	15
केन्द्र बल	30	60	60	15	30	60	15
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	219	286	227	224	193	183	180
कुल दिग्बल	37	30	54	16	14	38	43
नतोन्नत बल	38	22	22	60	38	38	22
पक्ष बल	53	105	53	53	7	7	53
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	76	12	12	32	35	56	29
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	211	199	87	145	141	101	209
कुल चेष्टाबल	0	0	23	8	1	34	3
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	2	-2	1	3	2	-5	3
कुल षट्बल	529	566	409	422	385	395	446
रूप षट्बल	8.8	9.4	6.8	7.0	6.4	6.6	7.4
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.8	1.6	1.4	1.0	1.0	1.2	1.5
संबंधित पद	1	2	4	6	7	5	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	23.82	15.03	23.94	20.92	5.83	30.30	10.74
कष्ट फल	33.08	39.02	36.04	15.06	31.69	29.28	29.45

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	446	446	385	395	395	422	566	529	422	409	409	385
भावदिग्बल	30	50	50	0	10	10	30	40	20	30	20	40
भावदृष्टि बल	44	53	61	58	42	-11	-4	2	5	22	45	51
कुल भाव बल	520	549	496	453	446	421	592	571	447	461	474	476
रूप भाव बल	8.7	9.2	8.3	7.5	7.4	7.0	9.9	9.5	7.4	7.7	7.9	7.9
संबंधित पद	4	3	5	9	11	12	1	2	10	8	7	6

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

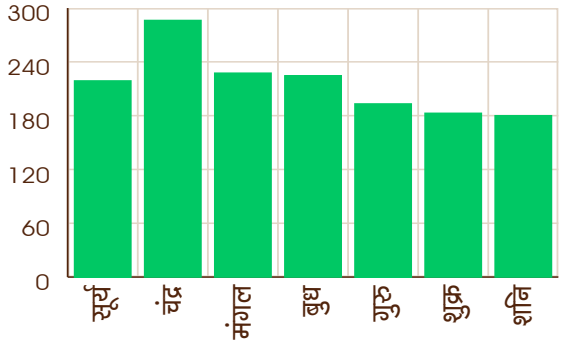

दिग्बल

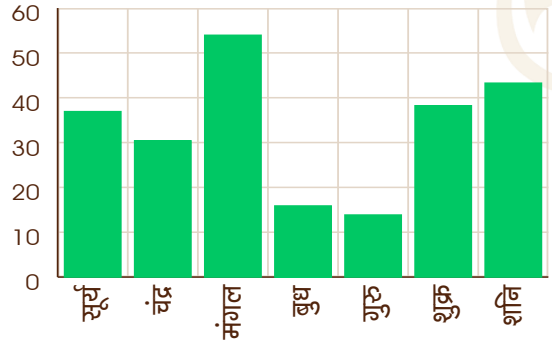

कालबल

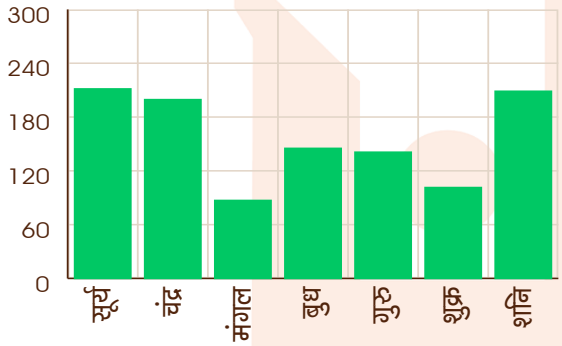

चेष्टाबल

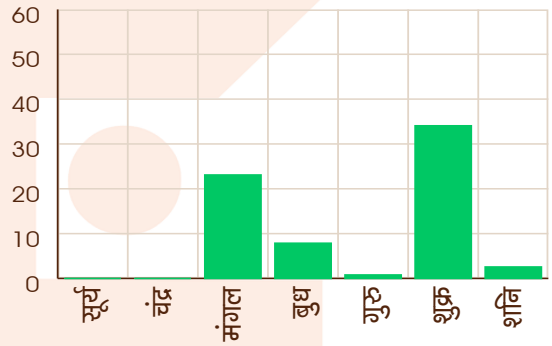

नैसर्गिक बल

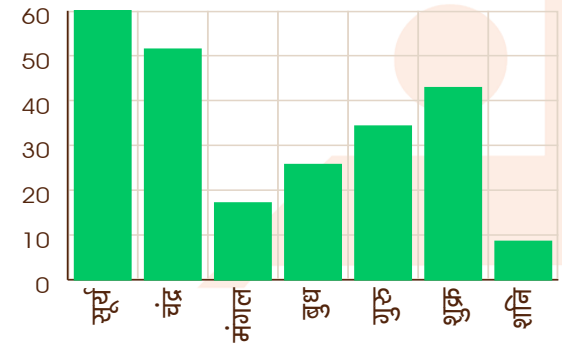

दृग्बल

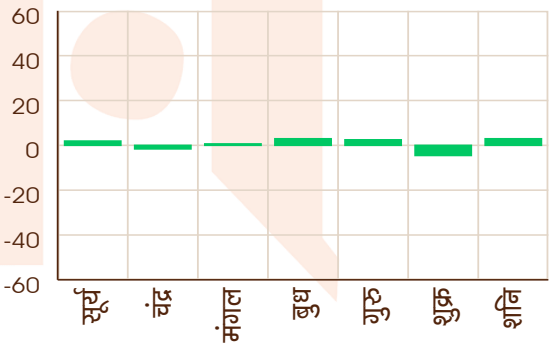

रूप षट्बल

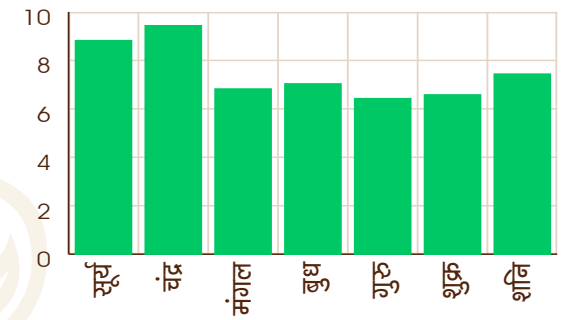

न्यूनतम षट्बल

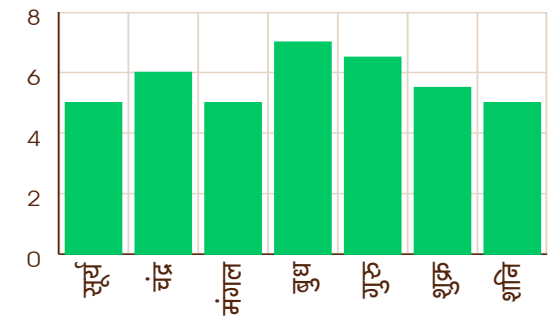

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

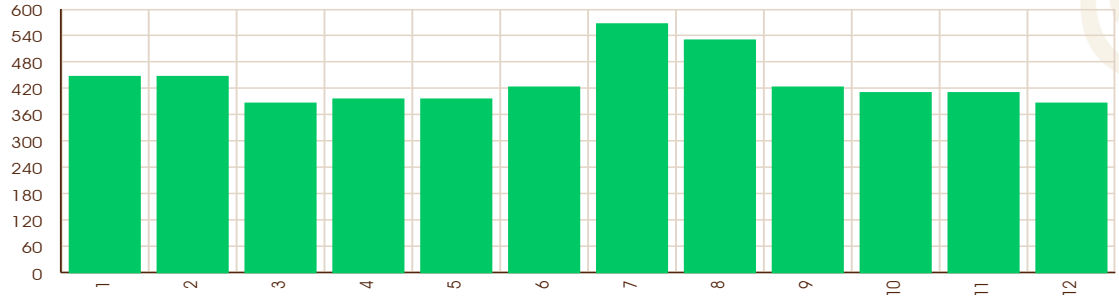

भावदिग्बल

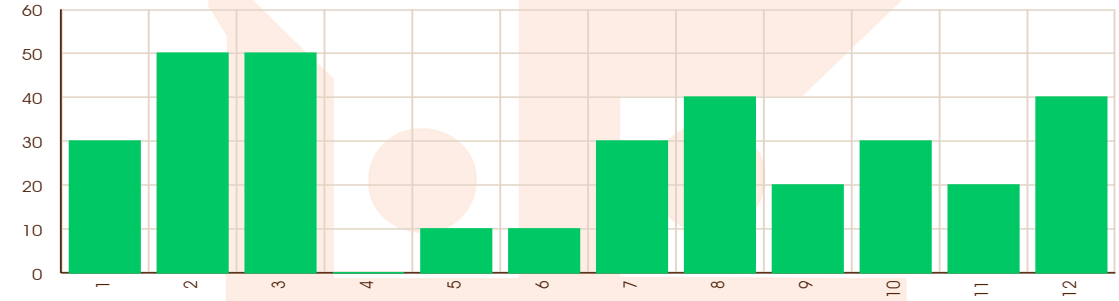

भावदृष्टि बल

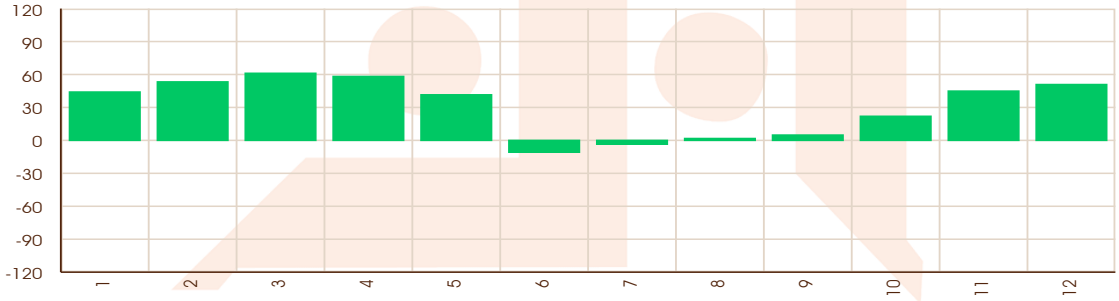

भाव बल

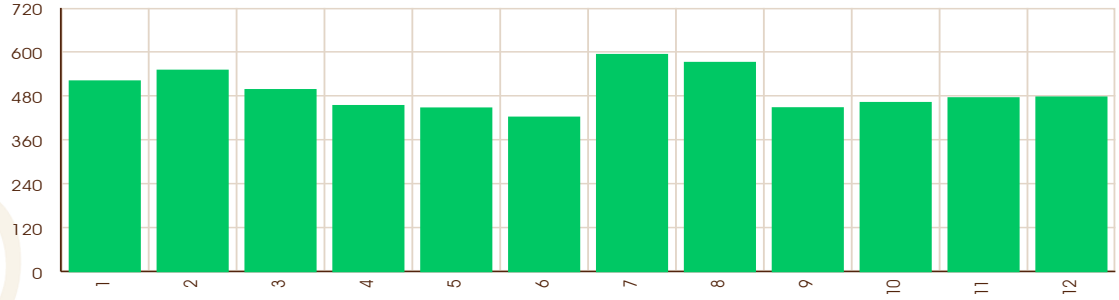

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

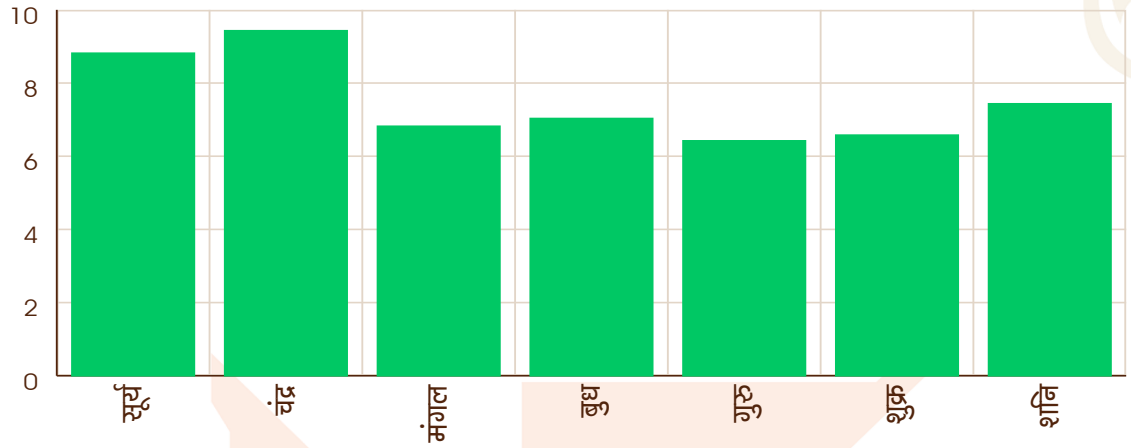

इष्ट - कष्ट फल

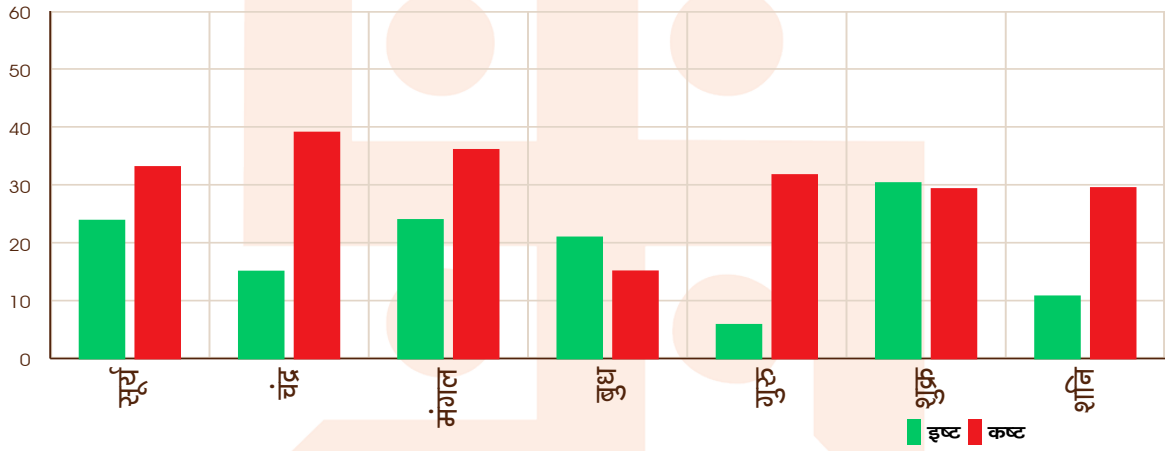

रूप भाव बल

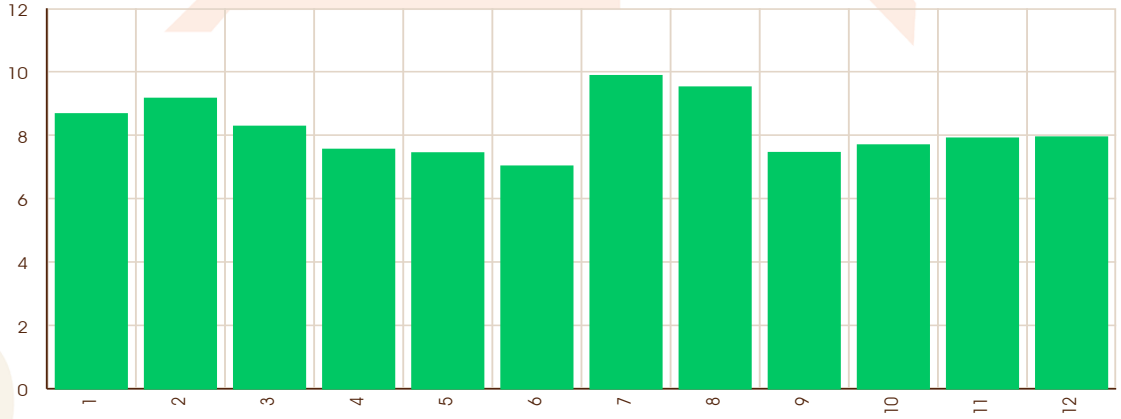

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मक	14:23:45	--	--	श्रवण	2	22
गुलिक	गु	मक	20:37:07	--	--	श्रवण	4	22
काल	का	कन्या	10:34:07	--	--	हस्त	1	13
मृत्यु	मृ	तुला	20:57:56	--	--	विशाखा	1	16
यमघंटक	यम	धनु	01:21:15	--	मूल	मूल	1	19
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	वृश्चि	11:03:57	--	--	अनुराधा	3	17
धूम	धू	मक	04:43:11	--	मूल	उत्तराषाढ़ा	3	21
व्यतिपात	व्य	मिथु	25:16:49	--	मूल	पुनर्वसु	2	7
परिवेश	परि	धनु	25:16:49	नीच	मूल	पूर्वाषाढ़ा	4	20
इन्द्रचाप	इ	कर्क	04:43:11	--	मूल	पुष्य	1	8
उपकेतु	उप	कर्क	21:23:11	--	मूल	आश्लेषा	2	9

प्राणपद	:	मीन	19:06:17	कारकाँश लग्न	:	मीन	26:35:28
भाव लग्न	:	मिथु	24:46:54	होरा लग्न	:	धनु	05:10:03
घटी लग्न	:	वृश्चि	13:18:58	वर्णद लग्न	:	तुला	10:26:12

उपग्रह कुंडली

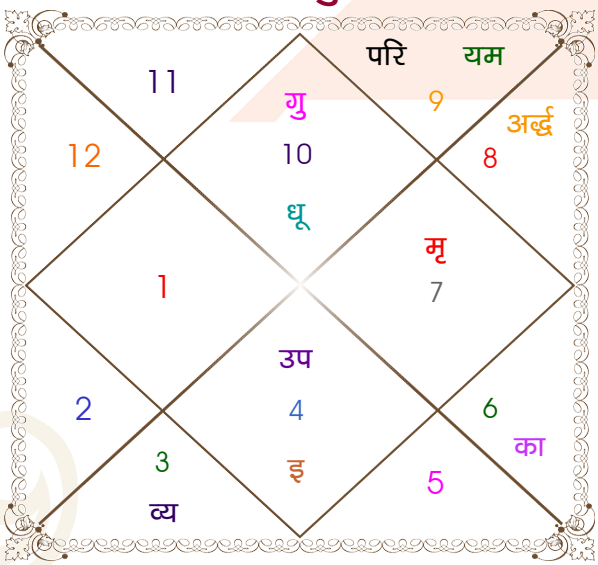

आरूढ़ कुंडली

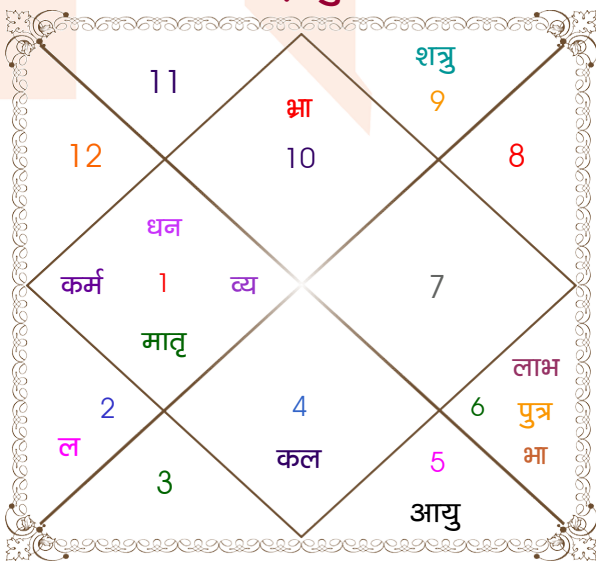

षन्नाडी चक्र

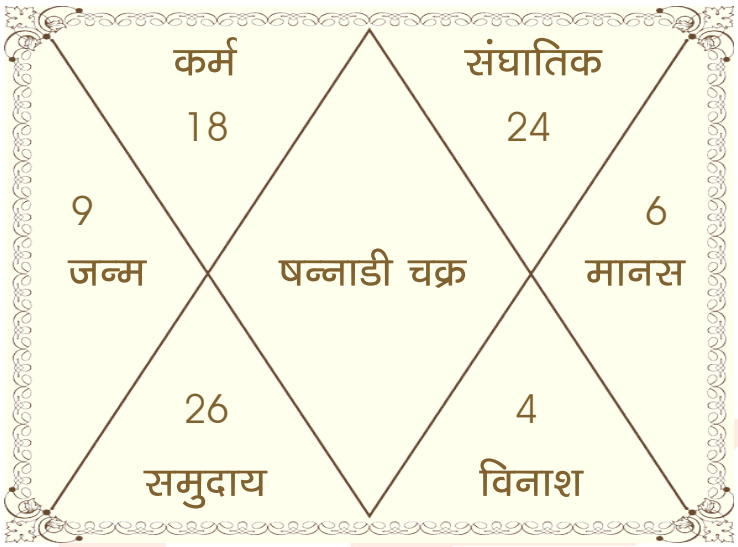

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	3	3	3	4	5	4	2	3	6	5	7	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	6
शुक्र	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	7
बुध	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
कुल	4	2	4	3	6	3	5	4	7	3	4	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	कुल
शनि	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	3	3	4	5	2	2	2	6	5	4	1	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	3	5	4	3	5	4	3	5	5	6	6	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
कुल	6	4	5	7	2	5	5	4	4	7	4	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	8
कुल	5	4	4	2	5	3	4	4	6	4	6	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	3	1	3	4	3	4	3	2	4	5	4	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
शुक्र	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	7
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	2	4	3	3	3	6	5	3	5	5	5	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	4	5	4	3	3	1	3	4	3	4	3	39
गुरु	4	7	4	3	6	4	5	7	2	5	5	4	56
मंगल	2	6	5	4	1	2	3	3	4	5	2	2	39
सूर्य	6	5	7	3	3	3	3	4	5	4	2	3	48
शुक्र	4	6	5	5	4	4	2	5	3	4	4	6	52
बुध	5	5	6	6	5	3	5	4	3	5	4	3	54
चंद्र	3	4	4	4	2	4	3	6	3	5	4	7	49
बिन्दु	26	37	36	29	24	23	22	32	24	31	25	28	337
रेखा	30	19	20	27	32	33	34	24	32	25	31	28	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	4	1	1	0	0	0	2	0	3	0	12
गुरु	2	3	0	0	4	0	1	4	0	1	1	1	17
मंगल	1	4	3	2	0	0	1	1	3	3	0	0	18
सूर्य	3	2	5	0	0	0	1	1	2	1	0	0	15
शुक्र	1	2	3	0	1	0	0	0	0	0	2	1	10
बुध	2	2	2	3	2	0	1	1	0	2	0	0	15
चंद्र	1	0	1	0	0	0	0	2	1	1	1	3	10
रेखा	10	14	18	6	8	0	4	9	8	8	7	5	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	4	1	1	0	0	0	2	0	3	0	12
गुरु	2	2	0	0	4	0	1	2	0	0	0	1	12
मंगल	0	3	3	2	0	0	1	0	3	3	0	0	15
सूर्य	2	1	5	0	0	0	1	1	2	1	0	0	13
शुक्र	1	2	3	0	1	0	0	0	0	0	2	1	10
बुध	1	1	2	3	2	0	1	1	0	2	0	0	13
चंद्र	1	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	2	6
रेखा	7	10	18	6	8	0	4	5	8	6	5	4	81

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	102	56	111	90	109	95	107
ग्रह पिंड	8	0	32	74	68	15	27
शोध्य पिंड	110	56	143	164	177	110	134

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

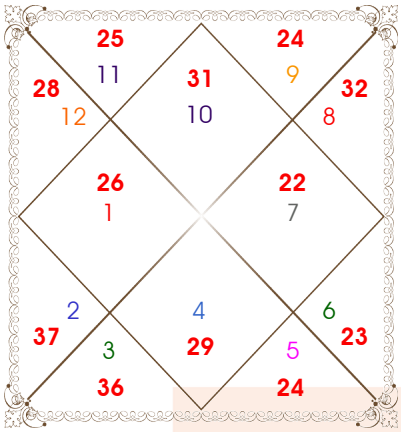

सूर्य का अष्टकवर्ग

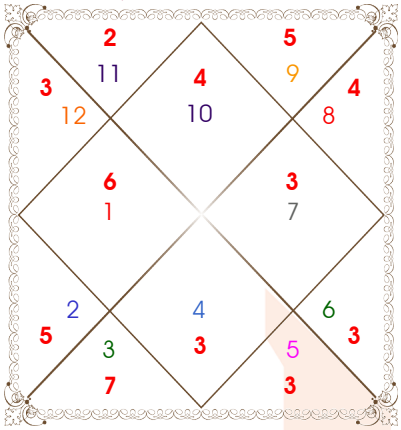

चंद्र का अष्टकवर्ग

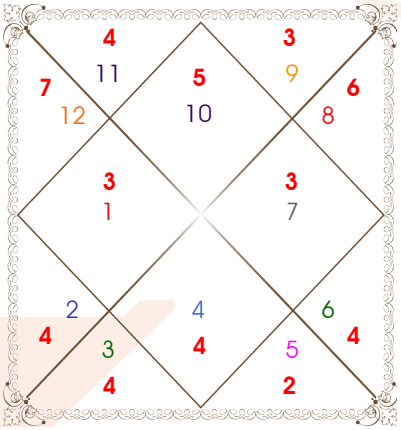

मंगल का अष्टकवर्ग

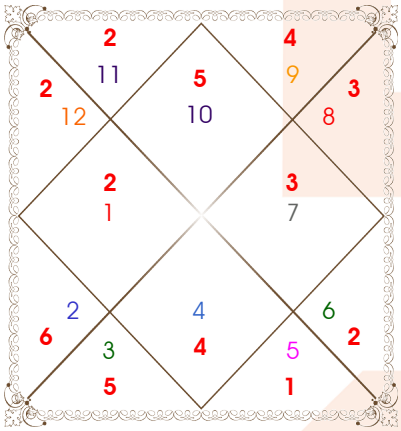

बुध का अष्टकवर्ग

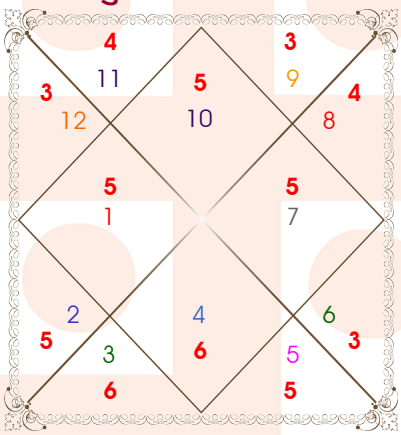

गुरू का अष्टकवर्ग

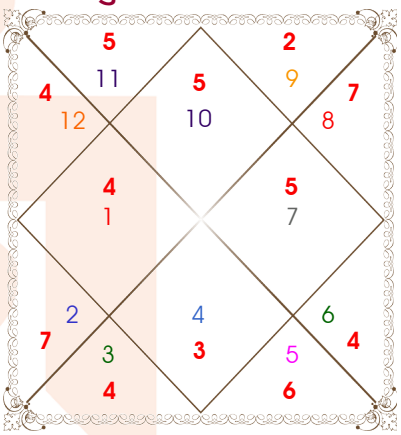

शुक्र का अष्टकवर्ग

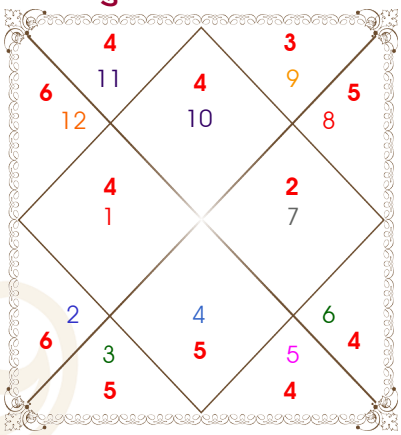

शनि का अष्टकवर्ग

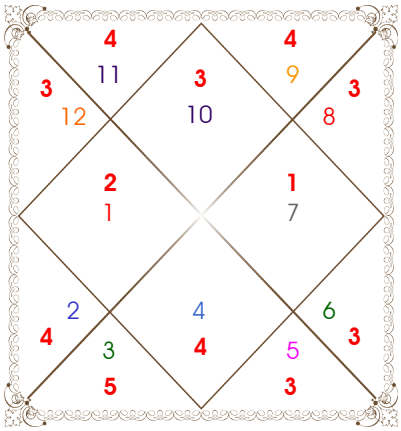

लग्न का अष्टकवर्ग

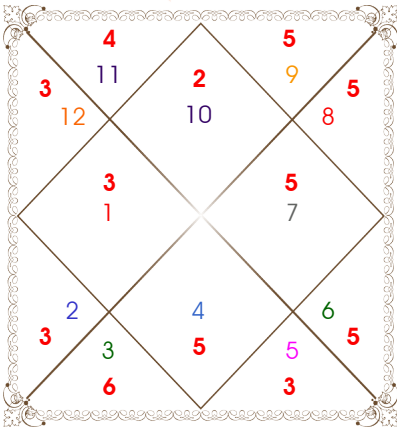

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

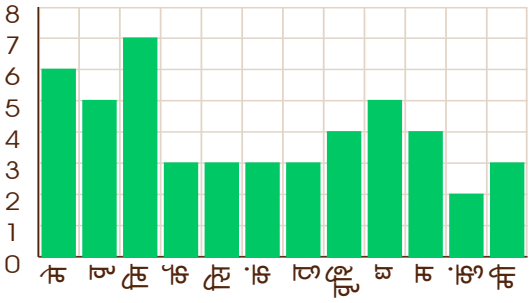

चन्द्र

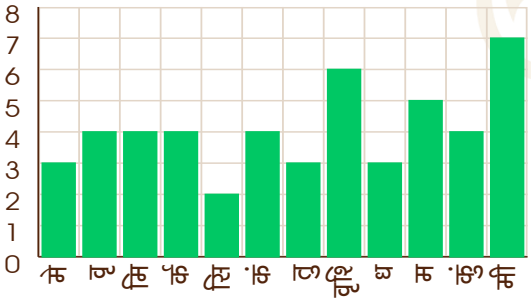

मंगल

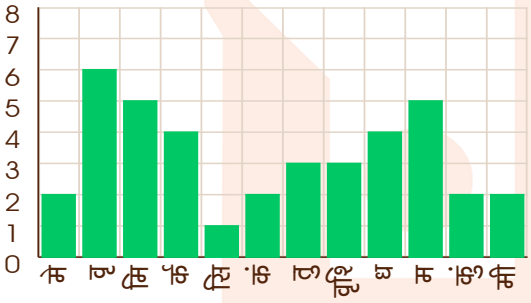

बुध

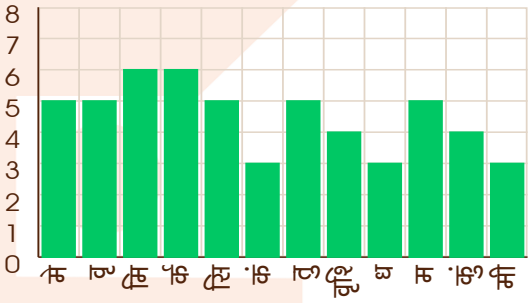

गुरु

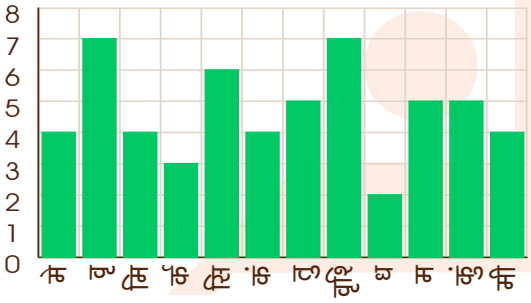

शुक्र

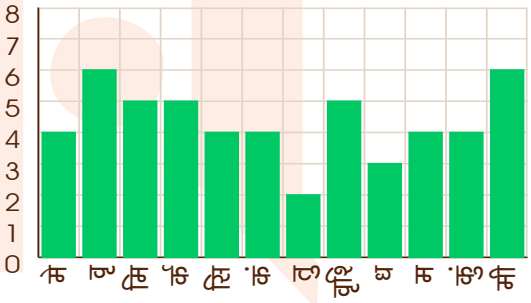

शनि

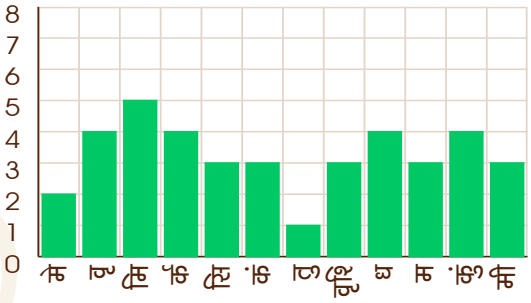

लग्न

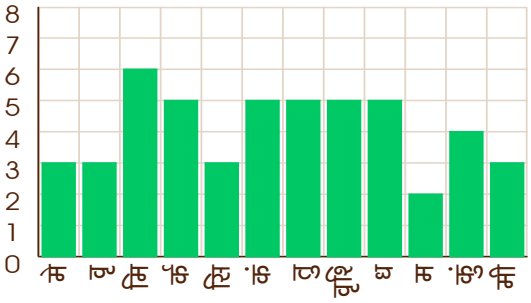

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

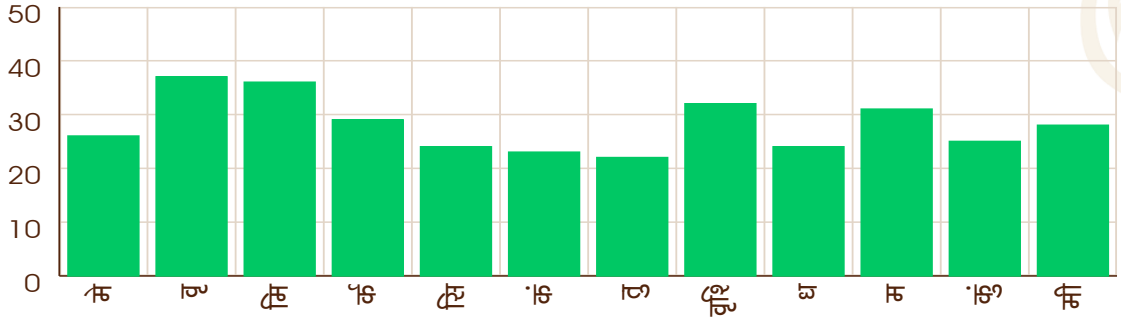

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

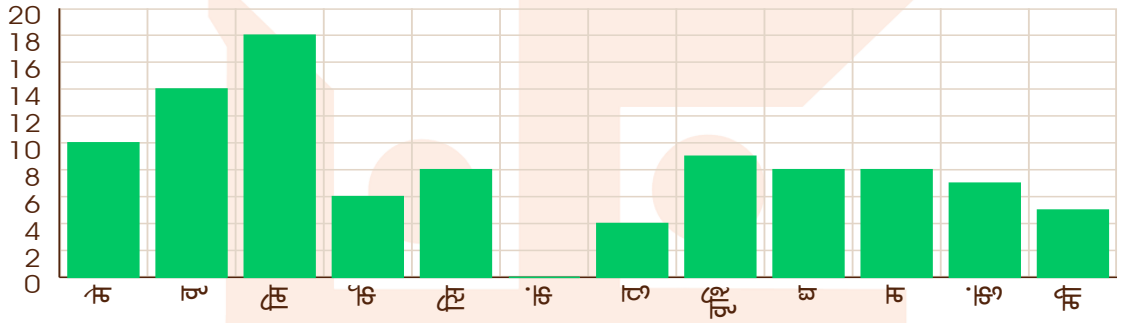

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

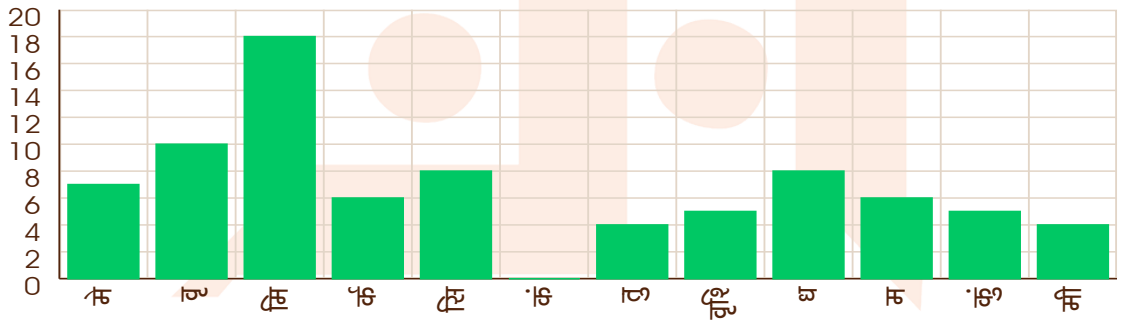

शोध्य पिंड

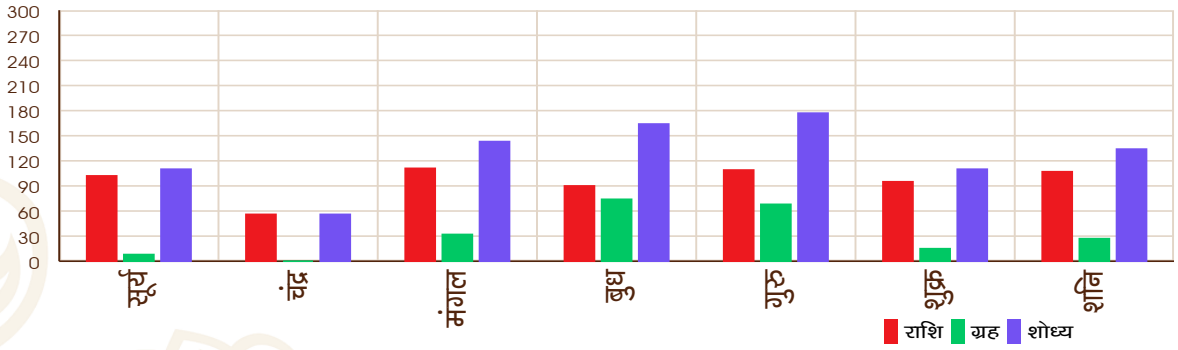

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 0 वर्ष 5 मास 24 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
07/09/1980		03/03/1981		02/03/1988		02/03/2008		03/03/2014	
03/03/1981		02/03/1988		02/03/2008		03/03/2014		02/03/2024	
	00/00/0000	केतु	30/07/1981	शुक्र	03/07/1991	सूर्य	20/06/2008	चंद्र	01/01/2015
	00/00/0000	शुक्र	29/09/1982	सूर्य	02/07/1992	चंद्र	20/12/2008	मंगल	02/08/2015
	00/00/0000	सूर्य	04/02/1983	चंद्र	03/03/1994	मंगल	26/04/2009	राहु	31/01/2017
	00/00/0000	चंद्र	05/09/1983	मंगल	03/05/1995	राहु	21/03/2010	गुरु	02/06/2018
	00/00/0000	मंगल	01/02/1984	राहु	03/05/1998	गुरु	07/01/2011	शनि	01/01/2020
	00/00/0000	राहु	18/02/1985	गुरु	01/01/2001	शनि	20/12/2011	बुध	02/06/2021
	00/00/0000	गुरु	25/01/1986	शनि	02/03/2004	बुध	26/10/2012	केतु	01/01/2022
	07/09/1980	शनि	06/03/1987	बुध	01/01/2007	केतु	03/03/2013	शुक्र	02/09/2023
शनि	03/03/1981	बुध	02/03/1988	केतु	02/03/2008	शुक्र	03/03/2014	सूर्य	02/03/2024

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
02/03/2024		03/03/2031		03/03/2049		03/03/2065		02/03/2084	
03/03/2031		03/03/2049		03/03/2065		02/03/2084		08/09/2100	
मंगल	29/07/2024	राहु	13/11/2033	गुरु	21/04/2051	शनि	05/03/2068	बुध	30/07/2086
राहु	17/08/2025	गुरु	08/04/2036	शनि	01/11/2053	बुध	14/11/2070	केतु	27/07/2087
गुरु	24/07/2026	शनि	13/02/2039	बुध	07/02/2056	केतु	23/12/2071	शुक्र	27/05/2090
शनि	02/09/2027	बुध	01/09/2041	केतु	13/01/2057	शुक्र	22/02/2075	सूर्य	03/04/2091
बुध	29/08/2028	केतु	20/09/2042	शुक्र	14/09/2059	सूर्य	04/02/2076	चंद्र	01/09/2092
केतु	25/01/2029	शुक्र	19/09/2045	सूर्य	02/07/2060	चंद्र	04/09/2077	मंगल	29/08/2093
शुक्र	27/03/2030	सूर्य	14/08/2046	चंद्र	01/11/2061	मंगल	14/10/2078	राहु	18/03/2096
सूर्य	02/08/2030	चंद्र	13/02/2048	मंगल	08/10/2062	राहु	20/08/2081	गुरु	23/06/2098
चंद्र	03/03/2031	मंगल	03/03/2049	राहु	03/03/2065	गुरु	02/03/2084	शनि	08/09/2100

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 0 वर्ष 5 मा 25 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
07/09/1980		03/03/1981		30/07/1981		29/09/1982		04/02/1983	
03/03/1981		30/07/1981		29/09/1982		04/02/1983		05/09/1983	
	00/00/0000	केतु	11/03/1981	शुक्र	09/10/1981	सूर्य	05/10/1982	चंद्र	21/02/1983
	00/00/0000	शुक्र	05/04/1981	सूर्य	30/10/1981	चंद्र	16/10/1982	मंगल	06/03/1983
	00/00/0000	सूर्य	13/04/1981	चंद्र	05/12/1981	मंगल	23/10/1982	राहु	07/04/1983
	00/00/0000	चंद्र	25/04/1981	मंगल	29/12/1981	राहु	12/11/1982	गुरु	05/05/1983
	00/00/0000	मंगल	04/05/1981	राहु	03/03/1982	गुरु	29/11/1982	शनि	08/06/1983
	00/00/0000	राहु	26/05/1981	गुरु	29/04/1982	शनि	19/12/1982	बुध	08/07/1983
	07/09/1980	गुरु	15/06/1981	शनि	06/07/1982	बुध	06/01/1983	केतु	21/07/1983
राहु	22/10/1980	शनि	09/07/1981	बुध	04/09/1982	केतु	13/01/1983	शुक्र	25/08/1983
गुरु	03/03/1981	बुध	30/07/1981	केतु	29/09/1982	शुक्र	04/02/1983	सूर्य	05/09/1983

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
05/09/1983		01/02/1984		18/02/1985		25/01/1986		06/03/1987	
01/02/1984		18/02/1985		25/01/1986		06/03/1987		02/03/1988	
मंगल	13/09/1983	राहु	29/03/1984	गुरु	05/04/1985	शनि	30/03/1986	बुध	26/04/1987
राहु	06/10/1983	गुरु	20/05/1984	शनि	29/05/1985	बुध	27/05/1986	केतु	18/05/1987
गुरु	26/10/1983	शनि	19/07/1984	बुध	16/07/1985	केतु	19/06/1986	शुक्र	17/07/1987
शनि	18/11/1983	बुध	12/09/1984	केतु	05/08/1985	शुक्र	26/08/1986	सूर्य	04/08/1987
बुध	09/12/1983	केतु	04/10/1984	शुक्र	01/10/1985	सूर्य	15/09/1986	चंद्र	03/09/1987
केतु	18/12/1983	शुक्र	07/12/1984	सूर्य	18/10/1985	चंद्र	19/10/1986	मंगल	24/09/1987
शुक्र	12/01/1984	सूर्य	26/12/1984	चंद्र	15/11/1985	मंगल	11/11/1986	राहु	18/11/1987
सूर्य	19/01/1984	चंद्र	27/01/1985	मंगल	05/12/1985	राहु	11/01/1987	गुरु	05/01/1988
चंद्र	01/02/1984	मंगल	18/02/1985	राहु	25/01/1986	गुरु	06/03/1987	शनि	02/03/1988

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
02/03/1988		03/07/1991		02/07/1992		03/03/1994		03/05/1995	
03/07/1991		02/07/1992		03/03/1994		03/05/1995		03/05/1998	
शुक्र	21/09/1988	सूर्य	21/07/1991	चंद्र	22/08/1992	मंगल	28/03/1994	राहु	14/10/1995
सूर्य	21/11/1988	चंद्र	21/08/1991	मंगल	26/09/1992	राहु	31/05/1994	गुरु	08/03/1996
चंद्र	03/03/1989	मंगल	11/09/1991	राहु	27/12/1992	गुरु	26/07/1994	शनि	29/08/1996
मंगल	13/05/1989	राहु	05/11/1991	गुरु	18/03/1993	शनि	02/10/1994	बुध	31/01/1997
राहु	11/11/1989	गुरु	23/12/1991	शनि	22/06/1993	बुध	01/12/1994	केतु	05/04/1997
गुरु	23/04/1990	शनि	19/02/1992	बुध	16/09/1993	केतु	26/12/1994	शुक्र	05/10/1997
शनि	01/11/1990	बुध	11/04/1992	केतु	22/10/1993	शुक्र	07/03/1995	सूर्य	28/11/1997
बुध	23/04/1991	केतु	02/05/1992	शुक्र	31/01/1994	सूर्य	28/03/1995	चंद्र	28/02/1998
केतु	03/07/1991	शुक्र	02/07/1992	सूर्य	03/03/1994	चंद्र	03/05/1995	मंगल	03/05/1998

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
03/05/1998		01/01/2001		02/03/2004		01/01/2007		02/03/2008	
01/01/2001		02/03/2004		01/01/2007		02/03/2008		20/06/2008	
गुरु	10/09/1998	शनि	03/07/2001	बुध	27/07/2004	केतु	26/01/2007	सूर्य	08/03/2008
शनि	11/02/1999	बुध	14/12/2001	केतु	25/09/2004	शुक्र	07/04/2007	चंद्र	17/03/2008
बुध	29/06/1999	केतु	19/02/2002	शुक्र	17/03/2005	सूर्य	28/04/2007	मंगल	23/03/2008
केतु	25/08/1999	शुक्र	31/08/2002	सूर्य	08/05/2005	चंद्र	03/06/2007	राहु	09/04/2008
शुक्र	03/02/2000	सूर्य	28/10/2002	चंद्र	02/08/2005	मंगल	28/06/2007	गुरु	23/04/2008
सूर्य	23/03/2000	चंद्र	01/02/2003	मंगल	01/10/2005	राहु	31/08/2007	शनि	11/05/2008
चंद्र	12/06/2000	मंगल	10/04/2003	राहु	05/03/2006	गुरु	26/10/2007	बुध	26/05/2008
मंगल	08/08/2000	राहु	30/09/2003	गुरु	21/07/2006	शनि	02/01/2008	केतु	02/06/2008
राहु	01/01/2001	गुरु	02/03/2004	शनि	01/01/2007	बुध	02/03/2008	शुक्र	20/06/2008

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
20/06/2008		20/12/2008		26/04/2009		21/03/2010		07/01/2011	
20/12/2008		26/04/2009		21/03/2010		07/01/2011		20/12/2011	
चंद्र	05/07/2008	मंगल	27/12/2008	राहु	15/06/2009	गुरु	29/04/2010	शनि	03/03/2011
मंगल	16/07/2008	राहु	15/01/2009	गुरु	29/07/2009	शनि	14/06/2010	बुध	21/04/2011
राहु	12/08/2008	गुरु	01/02/2009	शनि	19/09/2009	बुध	26/07/2010	केतु	12/05/2011
गुरु	06/09/2008	शनि	21/02/2009	बुध	04/11/2009	केतु	12/08/2010	शुक्र	08/07/2011
शनि	04/10/2008	बुध	12/03/2009	केतु	23/11/2009	शुक्र	29/09/2010	सूर्य	26/07/2011
बुध	30/10/2008	केतु	19/03/2009	शुक्र	17/01/2010	सूर्य	14/10/2010	चंद्र	24/08/2011
केतु	10/11/2008	शुक्र	09/04/2009	सूर्य	03/02/2010	चंद्र	07/11/2010	मंगल	13/09/2011
शुक्र	10/12/2008	सूर्य	16/04/2009	चंद्र	02/03/2010	मंगल	24/11/2010	राहु	04/11/2011
सूर्य	20/12/2008	चंद्र	26/04/2009	मंगल	21/03/2010	राहु	07/01/2011	गुरु	20/12/2011

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
20/12/2011		26/10/2012		03/03/2013		03/03/2014		01/01/2015	
26/10/2012		03/03/2013		03/03/2014		01/01/2015		02/08/2015	
बुध	02/02/2012	केतु	02/11/2012	शुक्र	02/05/2013	चंद्र	28/03/2014	मंगल	14/01/2015
केतु	20/02/2012	शुक्र	24/11/2012	सूर्य	21/05/2013	मंगल	15/04/2014	राहु	15/02/2015
शुक्र	12/04/2012	सूर्य	30/11/2012	चंद्र	20/06/2013	राहु	31/05/2014	गुरु	15/03/2015
सूर्य	28/04/2012	चंद्र	11/12/2012	मंगल	11/07/2013	गुरु	10/07/2014	शनि	18/04/2015
चंद्र	24/05/2012	मंगल	18/12/2012	राहु	04/09/2013	शनि	27/08/2014	बुध	18/05/2015
मंगल	11/06/2012	राहु	06/01/2013	गुरु	23/10/2013	बुध	10/10/2014	केतु	30/05/2015
राहु	27/07/2012	गुरु	23/01/2013	शनि	20/12/2013	केतु	27/10/2014	शुक्र	05/07/2015
गुरु	07/09/2012	शनि	12/02/2013	बुध	10/02/2014	शुक्र	17/12/2014	सूर्य	16/07/2015
शनि	26/10/2012	बुध	03/03/2013	केतु	03/03/2014	सूर्य	01/01/2015	चंद्र	02/08/2015

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
02/08/2015		31/01/2017		02/06/2018		01/01/2020		02/06/2021	
31/01/2017		02/06/2018		01/01/2020		02/06/2021		01/01/2022	
राहु	23/10/2015	गुरु	06/04/2017	शनि	02/09/2018	बुध	15/03/2020	केतु	14/06/2021
गुरु	04/01/2016	शनि	22/06/2017	बुध	23/11/2018	केतु	14/04/2020	शुक्र	20/07/2021
शनि	31/03/2016	बुध	30/08/2017	केतु	26/12/2018	शुक्र	09/07/2020	सूर्य	30/07/2021
बुध	17/06/2016	केतु	28/09/2017	शुक्र	02/04/2019	सूर्य	04/08/2020	चंद्र	17/08/2021
केतु	19/07/2016	शुक्र	18/12/2017	सूर्य	01/05/2019	चंद्र	16/09/2020	मंगल	30/08/2021
शुक्र	18/10/2016	सूर्य	11/01/2018	चंद्र	18/06/2019	मंगल	16/10/2020	राहु	01/10/2021
सूर्य	15/11/2016	चंद्र	21/02/2018	मंगल	22/07/2019	राहु	02/01/2021	गुरु	29/10/2021
चंद्र	30/12/2016	मंगल	21/03/2018	राहु	16/10/2019	गुरु	12/03/2021	शनि	02/12/2021
मंगल	31/01/2017	राहु	02/06/2018	गुरु	01/01/2020	शनि	02/06/2021	बुध	01/01/2022

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
01/01/2022		02/09/2023		02/03/2024		29/07/2024		17/08/2025	
02/09/2023		02/03/2024		29/07/2024		17/08/2025		24/07/2026	
शुक्र	12/04/2022	सूर्य	11/09/2023	मंगल	11/03/2024	राहु	25/09/2024	गुरु	01/10/2025
सूर्य	13/05/2022	चंद्र	26/09/2023	राहु	02/04/2024	गुरु	15/11/2024	शनि	24/11/2025
चंद्र	03/07/2022	मंगल	07/10/2023	गुरु	22/04/2024	शनि	15/01/2025	बुध	12/01/2026
मंगल	07/08/2022	राहु	03/11/2023	शनि	16/05/2024	बुध	10/03/2025	केतु	01/02/2026
राहु	06/11/2022	गुरु	27/11/2023	बुध	06/06/2024	केतु	02/04/2025	शुक्र	29/03/2026
गुरु	27/01/2023	शनि	26/12/2023	केतु	15/06/2024	शुक्र	04/06/2025	सूर्य	15/04/2026
शनि	03/05/2023	बुध	21/01/2024	शुक्र	10/07/2024	सूर्य	24/06/2025	चंद्र	14/05/2026
बुध	28/07/2023	केतु	01/02/2024	सूर्य	17/07/2024	चंद्र	26/07/2025	मंगल	03/06/2026
केतु	02/09/2023	शुक्र	02/03/2024	चंद्र	29/07/2024	मंगल	17/08/2025	राहु	24/07/2026

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
24/07/2026		02/09/2027		29/08/2028		25/01/2029		27/03/2030	
02/09/2027		29/08/2028		25/01/2029		27/03/2030		02/08/2030	
शनि	26/09/2026	बुध	23/10/2027	केतु	07/09/2028	शुक्र	06/04/2029	सूर्य	03/04/2030
बुध	22/11/2026	केतु	13/11/2027	शुक्र	01/10/2028	सूर्य	27/04/2029	चंद्र	13/04/2030
केतु	16/12/2026	शुक्र	13/01/2028	सूर्य	09/10/2028	चंद्र	02/06/2029	मंगल	21/04/2030
शुक्र	21/02/2027	सूर्य	31/01/2028	चंद्र	21/10/2028	मंगल	27/06/2029	राहु	10/05/2030
सूर्य	14/03/2027	चंद्र	01/03/2028	मंगल	30/10/2028	राहु	30/08/2029	गुरु	27/05/2030
चंद्र	16/04/2027	मंगल	22/03/2028	राहु	21/11/2028	गुरु	25/10/2029	शनि	16/06/2030
मंगल	10/05/2027	राहु	15/05/2028	गुरु	11/12/2028	शनि	01/01/2030	बुध	04/07/2030
राहु	10/07/2027	गुरु	03/07/2028	शनि	04/01/2029	बुध	02/03/2030	केतु	12/07/2030
गुरु	02/09/2027	शनि	29/08/2028	बुध	25/01/2029	केतु	27/03/2030	शुक्र	02/08/2030

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
02/08/2030		03/03/2031		13/11/2033		08/04/2036		13/02/2039	
03/03/2031		13/11/2033		08/04/2036		13/02/2039		01/09/2041	
चंद्र	20/08/2030	राहु	29/07/2031	गुरु	10/03/2034	शनि	20/09/2036	बुध	25/06/2039
मंगल	01/09/2030	गुरु	07/12/2031	शनि	27/07/2034	बुध	14/02/2037	केतु	18/08/2039
राहु	03/10/2030	शनि	12/05/2032	बुध	28/11/2034	केतु	16/04/2037	शुक्र	20/01/2040
गुरु	01/11/2030	बुध	28/09/2032	केतु	18/01/2035	शुक्र	06/10/2037	सूर्य	07/03/2040
शनि	04/12/2030	केतु	25/11/2032	शुक्र	13/06/2035	सूर्य	27/11/2037	चंद्र	24/05/2040
बुध	03/01/2031	शुक्र	08/05/2033	सूर्य	27/07/2035	चंद्र	22/02/2038	मंगल	17/07/2040
केतु	16/01/2031	सूर्य	27/06/2033	चंद्र	08/10/2035	मंगल	24/04/2038	राहु	04/12/2040
शुक्र	20/02/2031	चंद्र	17/09/2033	मंगल	28/11/2035	राहु	27/09/2038	गुरु	07/04/2041
सूर्य	03/03/2031	मंगल	13/11/2033	राहु	08/04/2036	गुरु	13/02/2039	शनि	01/09/2041

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
01/09/2041		20/09/2042		19/09/2045		14/08/2046		13/02/2048	
20/09/2042		19/09/2045		14/08/2046		13/02/2048		03/03/2049	
केतु	24/09/2041	शुक्र	21/03/2043	सूर्य	06/10/2045	चंद्र	29/09/2046	मंगल	06/03/2048
शुक्र	26/11/2041	सूर्य	15/05/2043	चंद्र	02/11/2045	मंगल	31/10/2046	राहु	03/05/2048
सूर्य	16/12/2041	चंद्र	14/08/2043	मंगल	21/11/2045	राहु	21/01/2047	गुरु	23/06/2048
चंद्र	17/01/2042	मंगल	17/10/2043	राहु	10/01/2046	गुरु	04/04/2047	शनि	23/08/2048
मंगल	08/02/2042	राहु	30/03/2044	गुरु	23/02/2046	शनि	30/06/2047	बुध	16/10/2048
राहु	07/04/2042	गुरु	23/08/2044	शनि	16/04/2046	बुध	15/09/2047	केतु	08/11/2048
गुरु	28/05/2042	शनि	12/02/2045	बुध	01/06/2046	केतु	17/10/2047	शुक्र	10/01/2049
शनि	27/07/2042	बुध	18/07/2045	केतु	20/06/2046	शुक्र	17/01/2048	सूर्य	30/01/2049
बुध	20/09/2042	केतु	19/09/2045	शुक्र	14/08/2046	सूर्य	13/02/2048	चंद्र	03/03/2049

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
03/03/2049		21/04/2051		01/11/2053		07/02/2056		13/01/2057	
21/04/2051		01/11/2053		07/02/2056		13/01/2057		14/09/2059	
गुरु	14/06/2049	शनि	14/09/2051	बुध	26/02/2054	केतु	27/02/2056	शुक्र	24/06/2057
शनि	16/10/2049	बुध	23/01/2052	केतु	16/04/2054	शुक्र	24/04/2056	सूर्य	12/08/2057
बुध	03/02/2050	केतु	17/03/2052	शुक्र	01/09/2054	सूर्य	11/05/2056	चंद्र	01/11/2057
केतु	21/03/2050	शुक्र	19/08/2052	सूर्य	12/10/2054	चंद्र	08/06/2056	मंगल	28/12/2057
शुक्र	29/07/2050	सूर्य	04/10/2052	चंद्र	20/12/2054	मंगल	28/06/2056	राहु	23/05/2058
सूर्य	06/09/2050	चंद्र	20/12/2052	मंगल	06/02/2055	राहु	18/08/2056	गुरु	30/09/2058
चंद्र	09/11/2050	मंगल	12/02/2053	राहु	11/06/2055	गुरु	03/10/2056	शनि	03/03/2059
मंगल	25/12/2050	राहु	01/07/2053	गुरु	29/09/2055	शनि	26/11/2056	बुध	19/07/2059
राहु	21/04/2051	गुरु	01/11/2053	शनि	07/02/2056	बुध	13/01/2057	केतु	14/09/2059

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
14/09/2059		02/07/2060		01/11/2061		08/10/2062		03/03/2065	
02/07/2060		01/11/2061		08/10/2062		03/03/2065		05/03/2068	
सूर्य	28/09/2059	चंद्र	12/08/2060	मंगल	21/11/2061	राहु	16/02/2063	शनि	24/08/2065
चंद्र	23/10/2059	मंगल	09/09/2060	राहु	11/01/2062	गुरु	13/06/2063	बुध	26/01/2066
मंगल	09/11/2059	राहु	21/11/2060	गुरु	26/02/2062	शनि	30/10/2063	केतु	31/03/2066
राहु	23/12/2059	गुरु	25/01/2061	शनि	21/04/2062	बुध	02/03/2064	शुक्र	30/09/2066
गुरु	31/01/2060	शनि	12/04/2061	बुध	08/06/2062	केतु	22/04/2064	सूर्य	24/11/2066
शनि	17/03/2060	बुध	20/06/2061	केतु	28/06/2062	शुक्र	16/09/2064	चंद्र	24/02/2067
बुध	27/04/2060	केतु	19/07/2061	शुक्र	24/08/2062	सूर्य	29/10/2064	मंगल	29/04/2067
केतु	14/05/2060	शुक्र	08/10/2061	सूर्य	10/09/2062	चंद्र	10/01/2065	राहु	11/10/2067
शुक्र	02/07/2060	सूर्य	01/11/2061	चंद्र	08/10/2062	मंगल	03/03/2065	गुरु	05/03/2068

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
05/03/2068		14/11/2070		23/12/2071		22/02/2075		04/02/2076	
14/11/2070		23/12/2071		22/02/2075		04/02/2076		04/09/2077	
बुध	23/07/2068	केतु	07/12/2070	शुक्र	03/07/2072	सूर्य	11/03/2075	चंद्र	23/03/2076
केतु	18/09/2068	शुक्र	13/02/2071	सूर्य	30/08/2072	चंद्र	09/04/2075	मंगल	26/04/2076
शुक्र	01/03/2069	सूर्य	05/03/2071	चंद्र	04/12/2072	मंगल	29/04/2075	राहु	22/07/2076
सूर्य	19/04/2069	चंद्र	08/04/2071	मंगल	10/02/2073	राहु	21/06/2075	गुरु	07/10/2076
चंद्र	10/07/2069	मंगल	01/05/2071	राहु	02/08/2073	गुरु	06/08/2075	शनि	06/01/2077
मंगल	05/09/2069	राहु	01/07/2071	गुरु	03/01/2074	शनि	30/09/2075	बुध	29/03/2077
राहु	31/01/2070	गुरु	24/08/2071	शनि	06/07/2074	बुध	18/11/2075	केतु	02/05/2077
गुरु	11/06/2070	शनि	27/10/2071	बुध	16/12/2074	केतु	08/12/2075	शुक्र	06/08/2077
शनि	14/11/2070	बुध	23/12/2071	केतु	22/02/2075	शुक्र	04/02/2076	सूर्य	04/09/2077

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
04/09/2077		14/10/2078		20/08/2081		02/03/2084		30/07/2086	
14/10/2078		20/08/2081		02/03/2084		30/07/2086		27/07/2087	
मंगल	28/09/2077	राहु	19/03/2079	गुरु	21/12/2081	बुध	05/07/2084	केतु	20/08/2086
राहु	28/11/2077	गुरु	05/08/2079	शनि	17/05/2082	केतु	25/08/2084	शुक्र	19/10/2086
गुरु	21/01/2078	शनि	17/01/2080	बुध	25/09/2082	शुक्र	19/01/2085	सूर्य	07/11/2086
शनि	26/03/2078	बुध	12/06/2080	केतु	18/11/2082	सूर्य	04/03/2085	चंद्र	07/12/2086
बुध	22/05/2078	केतु	12/08/2080	शुक्र	21/04/2083	चंद्र	16/05/2085	मंगल	28/12/2086
केतु	15/06/2078	शुक्र	02/02/2081	सूर्य	06/06/2083	मंगल	06/07/2085	राहु	20/02/2087
शुक्र	21/08/2078	सूर्य	26/03/2081	चंद्र	23/08/2083	राहु	15/11/2085	गुरु	10/04/2087
सूर्य	10/09/2078	चंद्र	20/06/2081	मंगल	16/10/2083	गुरु	13/03/2086	शनि	06/06/2087
चंद्र	14/10/2078	मंगल	20/08/2081	राहु	02/03/2084	शनि	30/07/2086	बुध	27/07/2087

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - राहु - मंगल	
26/07/2025 02:44	
17/08/2025 11:39	
मंगल	27/07/2025 10:03
राहु	30/07/2025 18:35
गुरु	02/08/2025 18:11
शनि	06/08/2025 07:11
बुध	09/08/2025 11:15
केतु	10/08/2025 18:34
शुक्र	14/08/2025 12:04
सूर्य	15/08/2025 14:54
चंद्र	17/08/2025 11:39

मंगल - गुरु - गुरु	
17/08/2025 11:39	
01/10/2025 22:32	
गुरु	23/08/2025 13:06
शनि	30/08/2025 17:49
बुध	06/09/2025 04:22
केतु	08/09/2025 20:00
शुक्र	16/09/2025 09:49
सूर्य	18/09/2025 16:21
चंद्र	22/09/2025 11:16
मंगल	25/09/2025 02:54
राहु	01/10/2025 22:32

मंगल - गुरु - शनि	
01/10/2025 22:32	
24/11/2025 21:57	
शनि	10/10/2025 11:38
बुध	18/10/2025 03:09
केतु	21/10/2025 06:43
शुक्र	30/10/2025 06:37
सूर्य	01/11/2025 23:24
चंद्र	06/11/2025 11:21
मंगल	09/11/2025 14:55
राहु	17/11/2025 17:14
गुरु	24/11/2025 21:57

मंगल - गुरु - बुध	
24/11/2025 21:57	
12/01/2026 05:01	
बुध	01/12/2025 18:09
केतु	04/12/2025 13:46
शुक्र	12/12/2025 14:56
सूर्य	15/12/2025 00:53
चंद्र	19/12/2025 01:29
मंगल	21/12/2025 21:05
राहु	29/12/2025 02:57
गुरु	04/01/2026 13:29
शनि	12/01/2026 05:01

मंगल - गुरु - केतु	
12/01/2026 05:01	
01/02/2026 02:16	
केतु	13/01/2026 08:51
शुक्र	16/01/2026 16:24
सूर्य	17/01/2026 16:15
चंद्र	19/01/2026 08:02
मंगल	20/01/2026 11:52
राहु	23/01/2026 11:27
गुरु	26/01/2026 03:05
शनि	29/01/2026 06:39
बुध	01/02/2026 02:16

मंगल - गुरु - शुक्र	
01/02/2026 02:16	
29/03/2026 21:52	
शुक्र	10/02/2026 13:32
सूर्य	13/02/2026 09:43
चंद्र	18/02/2026 03:21
मंगल	21/02/2026 10:54
राहु	01/03/2026 23:26
गुरु	09/03/2026 13:15
शनि	18/03/2026 13:09
बुध	26/03/2026 14:20
केतु	29/03/2026 21:52

मंगल - गुरु - सूर्य	
29/03/2026 21:52	
15/04/2026 22:57	
सूर्य	30/03/2026 18:19
चंद्र	01/04/2026 04:25
मंगल	02/04/2026 04:17
राहु	04/04/2026 17:38
गुरु	07/04/2026 00:11
शनि	09/04/2026 16:57
बुध	12/04/2026 02:54
केतु	13/04/2026 02:46
शुक्र	15/04/2026 22:57

मंगल - गुरु - चंद्र	
15/04/2026 22:57	
14/05/2026 08:45	
चंद्र	18/04/2026 07:46
मंगल	19/04/2026 23:32
राहु	24/04/2026 05:48
गुरु	28/04/2026 00:43
शनि	02/05/2026 12:40
बुध	06/05/2026 13:15
केतु	08/05/2026 05:02
शुक्र	12/05/2026 22:40
सूर्य	14/05/2026 08:45

मंगल - गुरु - मंगल	
14/05/2026 08:45	
03/06/2026 06:01	
मंगल	15/05/2026 12:35
राहु	18/05/2026 12:11
गुरु	21/05/2026 03:49
शनि	24/05/2026 07:23
बुध	27/05/2026 02:59
केतु	28/05/2026 06:50
शुक्र	31/05/2026 14:22
सूर्य	01/06/2026 14:14
चंद्र	03/06/2026 06:01

मंगल - गुरु - राहु	
03/06/2026 06:01	
24/07/2026 09:15	
राहु	10/06/2026 22:06
गुरु	17/06/2026 17:44
शनि	25/06/2026 20:02
बुध	03/07/2026 01:54
केतु	06/07/2026 01:29
शुक्र	14/07/2026 14:02
सूर्य	17/07/2026 03:23
चंद्र	21/07/2026 09:40
मंगल	24/07/2026 09:15

मंगल - शनि - शनि	
24/07/2026 09:15	
26/09/2026 11:34	
शनि	03/08/2026 12:49
बुध	12/08/2026 14:45
केतु	16/08/2026 08:29
शुक्र	27/08/2026 00:52
सूर्य	30/08/2026 05:47
चंद्र	04/09/2026 13:58
मंगल	08/09/2026 07:42
राहु	17/09/2026 22:27
गुरु	26/09/2026 11:34

मंगल - शनि - बुध	
26/09/2026 11:34	
22/11/2026 19:57	
बुध	04/10/2026 14:33
केतु	07/10/2026 22:50
शुक्र	17/10/2026 12:14
सूर्य	20/10/2026 09:03
चंद्र	25/10/2026 03:45
मंगल	28/10/2026 12:02
राहु	06/11/2026 02:30
गुरु	13/11/2026 18:01
शनि	22/11/2026 19:57

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - शनि - केतु		मंगल - शनि - शुक्र		मंगल - शनि - सूर्य		मंगल - शनि - चंद्र	
22/11/2026 19:57		16/12/2026 10:41		21/02/2027 21:58		14/03/2027 03:45	
16/12/2026 10:41		21/02/2027 21:58		14/03/2027 03:45		16/04/2027 21:23	
केतु	24/11/2026 05:00	शुक्र	27/12/2026 16:34	सूर्य	22/02/2027 22:15	चंद्र	16/03/2027 23:13
शुक्र	28/11/2026 03:28	सूर्य	31/12/2026 01:32	चंद्र	24/02/2027 14:44	मंगल	18/03/2027 22:27
सूर्य	29/11/2026 07:48	चंद्र	05/01/2027 16:28	मंगल	25/02/2027 19:04	राहु	23/03/2027 23:54
चंद्र	01/12/2026 07:02	मंगल	09/01/2027 14:56	राहु	28/02/2027 19:56	गुरु	28/03/2027 11:51
मंगल	02/12/2026 16:05	राहु	19/01/2027 17:49	गुरु	03/03/2027 12:43	शनि	02/04/2027 20:02
राहु	06/12/2026 05:06	गुरु	28/01/2027 17:43	शनि	06/03/2027 17:38	बुध	07/04/2027 14:44
गुरु	09/12/2026 08:40	शनि	08/02/2027 10:07	बुध	09/03/2027 14:27	केतु	09/04/2027 13:58
शनि	13/12/2026 02:24	बुध	17/02/2027 23:30	केतु	10/03/2027 18:47	शुक्र	15/04/2027 04:54
बुध	16/12/2026 10:41	केतु	21/02/2027 21:58	शुक्र	14/03/2027 03:45	सूर्य	16/04/2027 21:23

मंगल - शनि - मंगल		मंगल - शनि - राहु		मंगल - शनि - गुरु		मंगल - बुध - बुध	
16/04/2027 21:23		10/05/2027 12:08		10/07/2027 05:29		02/09/2027 04:54	
10/05/2027 12:08		10/07/2027 05:29		02/09/2027 04:54		23/10/2027 12:24	
मंगल	18/04/2027 06:27	राहु	19/05/2027 14:44	गुरु	17/07/2027 10:12	बुध	09/09/2027 11:22
राहु	21/04/2027 19:27	गुरु	27/05/2027 17:03	शनि	25/07/2027 23:19	केतु	12/09/2027 11:12
गुरु	24/04/2027 23:01	शनि	06/06/2027 07:48	बुध	02/08/2027 14:50	शुक्र	21/09/2027 00:27
शनि	28/04/2027 16:45	बुध	14/06/2027 22:15	केतु	05/08/2027 18:24	सूर्य	23/09/2027 14:01
बुध	02/05/2027 01:03	केतु	18/06/2027 11:16	शुक्र	14/08/2027 18:18	चंद्र	27/09/2027 20:39
केतु	03/05/2027 10:06	शुक्र	28/06/2027 14:09	सूर्य	17/08/2027 11:04	मंगल	30/09/2027 20:29
शुक्र	07/05/2027 08:34	सूर्य	01/07/2027 15:01	चंद्र	21/08/2027 23:01	राहु	08/10/2027 13:13
सूर्य	08/05/2027 12:54	चंद्र	06/07/2027 16:28	मंगल	25/08/2027 02:35	गुरु	15/10/2027 09:25
चंद्र	10/05/2027 12:08	मंगल	10/07/2027 05:29	राहु	02/09/2027 04:54	शनि	23/10/2027 12:24

मंगल - बुध - केतु		मंगल - बुध - शुक्र		मंगल - बुध - सूर्य		मंगल - बुध - चंद्र	
23/10/2027 12:24		13/11/2027 15:29		13/01/2028 00:19		31/01/2028 02:58	
13/11/2027 15:29		13/01/2028 00:19		31/01/2028 02:58		01/03/2028 07:22	
केतु	24/10/2027 17:59	शुक्र	23/11/2027 16:58	सूर्य	13/01/2028 22:03	चंद्र	02/02/2028 15:20
शुक्र	28/10/2027 06:30	सूर्य	26/11/2027 17:24	चंद्र	15/01/2028 10:16	मंगल	04/02/2028 09:35
सूर्य	29/10/2027 07:51	चंद्र	01/12/2027 18:08	मंगल	16/01/2028 11:37	राहु	08/02/2028 22:15
चंद्र	31/10/2027 02:06	मंगल	05/12/2027 06:39	राहु	19/01/2028 04:49	गुरु	12/02/2028 22:50
मंगल	01/11/2027 07:41	राहु	14/12/2027 07:58	गुरु	21/01/2028 14:46	शनि	17/02/2028 17:32
राहु	04/11/2027 11:45	गुरु	22/12/2027 09:09	शनि	24/01/2028 11:35	बुध	22/02/2028 00:10
गुरु	07/11/2027 07:22	शनि	31/12/2027 22:33	बुध	27/01/2028 01:10	केतु	23/02/2028 18:25
शनि	10/11/2027 15:39	बुध	09/01/2028 11:48	केतु	28/01/2028 02:31	शुक्र	28/02/2028 19:09
बुध	13/11/2027 15:29	केतु	13/01/2028 00:19	शुक्र	31/01/2028 02:58	सूर्य	01/03/2028 07:22

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - बुध - मंगल		मंगल - बुध - राहु		मंगल - बुध - गुरु		मंगल - बुध - शनि	
01/03/2028 07:22		22/03/2028 10:28		15/05/2028 18:24		03/07/2028 01:28	
22/03/2028 10:28		15/05/2028 18:24		03/07/2028 01:28		29/08/2028 09:51	
मंगल	02/03/2028 12:57	राहु	30/03/2028 14:03	गुरु	22/05/2028 04:57	शनि	12/07/2028 03:24
राहु	05/03/2028 17:01	गुरु	06/04/2028 19:55	शनि	29/05/2028 20:28	बुध	20/07/2028 06:23
गुरु	08/03/2028 12:38	शनि	15/04/2028 10:22	बुध	05/06/2028 16:40	केतु	23/07/2028 14:40
शनि	11/03/2028 20:55	बुध	23/04/2028 03:06	केतु	08/06/2028 12:17	शुक्र	02/08/2028 04:04
बुध	14/03/2028 20:45	केतु	26/04/2028 07:10	शुक्र	16/06/2028 13:27	सूर्य	05/08/2028 00:53
केतु	16/03/2028 02:20	शुक्र	05/05/2028 08:29	सूर्य	18/06/2028 23:24	चंद्र	09/08/2028 19:35
शुक्र	19/03/2028 14:51	सूर्य	08/05/2028 01:41	चंद्र	22/06/2028 24:00	मंगल	13/08/2028 03:52
सूर्य	20/03/2028 16:12	चंद्र	12/05/2028 14:20	मंगल	25/06/2028 19:36	राहु	21/08/2028 18:20
चंद्र	22/03/2028 10:28	मंगल	15/05/2028 18:24	राहु	03/07/2028 01:28	गुरु	29/08/2028 09:51

मंगल - केतु - केतु		मंगल - केतु - शुक्र		मंगल - केतु - सूर्य		मंगल - केतु - चंद्र	
29/08/2028 09:51		07/09/2028 02:39		01/10/2028 23:13		09/10/2028 10:12	
07/09/2028 02:39		01/10/2028 23:13		09/10/2028 10:12		21/10/2028 20:29	
केतु	29/08/2028 22:02	शुक्र	11/09/2028 06:05	सूर्य	02/10/2028 08:10	चंद्र	10/10/2028 11:03
शुक्र	31/08/2028 08:50	सूर्य	12/09/2028 11:54	चंद्र	02/10/2028 23:05	मंगल	11/10/2028 04:27
सूर्य	31/08/2028 19:16	चंद्र	14/09/2028 13:37	मंगल	03/10/2028 09:32	राहु	13/10/2028 01:12
चंद्र	01/09/2028 12:40	मंगल	16/09/2028 00:25	राहु	04/10/2028 12:22	गुरु	14/10/2028 16:58
मंगल	02/09/2028 00:51	राहु	19/09/2028 17:55	गुरु	05/10/2028 12:14	शनि	16/10/2028 16:12
राहु	03/09/2028 08:10	गुरु	23/09/2028 01:27	शनि	06/10/2028 16:34	बुध	18/10/2028 10:27
गुरु	04/09/2028 12:01	शनि	26/09/2028 23:55	बुध	07/10/2028 17:56	केतु	19/10/2028 03:51
शनि	05/09/2028 21:04	बुध	30/09/2028 12:25	केतु	08/10/2028 04:22	शुक्र	21/10/2028 05:34
बुध	07/09/2028 02:39	केतु	01/10/2028 23:13	शुक्र	09/10/2028 10:12	सूर्य	21/10/2028 20:29

मंगल - केतु - मंगल		मंगल - केतु - राहु		मंगल - केतु - गुरु		मंगल - केतु - शनि	
21/10/2028 20:29		30/10/2028 13:17		21/11/2028 22:12		11/12/2028 19:28	
30/10/2028 13:17		21/11/2028 22:12		11/12/2028 19:28		04/01/2029 10:13	
मंगल	22/10/2028 08:40	राहु	02/11/2028 21:49	गुरु	24/11/2028 13:50	शनि	15/12/2028 13:12
राहु	23/10/2028 15:59	गुरु	05/11/2028 21:25	शनि	27/11/2028 17:24	बुध	18/12/2028 21:29
गुरु	24/10/2028 19:50	शनि	09/11/2028 10:25	बुध	30/11/2028 13:01	केतु	20/12/2028 06:33
शनि	26/10/2028 04:53	बुध	12/11/2028 14:29	केतु	01/12/2028 16:51	शुक्र	24/12/2028 05:00
बुध	27/10/2028 10:28	केतु	13/11/2028 21:48	शुक्र	05/12/2028 00:24	सूर्य	25/12/2028 09:21
केतु	27/10/2028 22:39	शुक्र	17/11/2028 15:18	सूर्य	06/12/2028 00:16	चंद्र	27/12/2028 08:34
शुक्र	29/10/2028 09:27	सूर्य	18/11/2028 18:08	चंद्र	07/12/2028 16:02	मंगल	28/12/2028 17:38
सूर्य	29/10/2028 19:53	चंद्र	20/11/2028 14:53	मंगल	08/12/2028 19:52	राहु	01/01/2029 06:39
चंद्र	30/10/2028 13:17	मंगल	21/11/2028 22:12	राहु	11/12/2028 19:28	गुरु	04/01/2029 10:13

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - केतु - बुध		मंगल - शुक्र - शुक्र		मंगल - शुक्र - सूर्य		मंगल - शुक्र - चंद्र	
04/01/2029 10:13		25/01/2029 13:18		06/04/2029 13:48		27/04/2029 21:09	
25/01/2029 13:18		06/04/2029 13:48		27/04/2029 21:09		02/06/2029 09:24	
बुध	07/01/2029 10:03	शुक्र	06/02/2029 09:23	सूर्य	07/04/2029 15:22	चंद्र	30/04/2029 20:10
केतु	08/01/2029 15:38	सूर्य	09/02/2029 22:36	चंद्र	09/04/2029 09:59	मंगल	02/05/2029 21:53
शुक्र	12/01/2029 04:09	चंद्र	15/02/2029 20:39	मंगल	10/04/2029 15:48	राहु	08/05/2029 05:43
सूर्य	13/01/2029 05:30	मंगल	20/02/2029 00:05	राहु	13/04/2029 20:31	गुरु	12/05/2029 23:21
चंद्र	14/01/2029 23:45	राहु	02/03/2029 15:45	गुरु	16/04/2029 16:41	शनि	18/05/2029 14:18
मंगल	16/01/2029 05:20	गुरु	12/03/2029 03:01	शनि	20/04/2029 01:39	बुध	23/05/2029 15:02
राहु	19/01/2029 09:24	शनि	23/03/2029 08:54	बुध	23/04/2029 02:06	केतु	25/05/2029 16:45
गुरु	22/01/2029 05:01	बुध	02/04/2029 10:22	केतु	24/04/2029 07:55	शुक्र	31/05/2029 14:47
शनि	25/01/2029 13:18	केतु	06/04/2029 13:48	शुक्र	27/04/2029 21:09	सूर्य	02/06/2029 09:24

मंगल - शुक्र - मंगल		मंगल - शुक्र - राहु		मंगल - शुक्र - गुरु		मंगल - शुक्र - शनि	
02/06/2029 09:24		27/06/2029 05:58		30/08/2029 04:01		25/10/2029 23:37	
27/06/2029 05:58		30/08/2029 04:01		25/10/2029 23:37		01/01/2030 10:54	
मंगल	03/06/2029 20:12	राहु	06/07/2029 20:05	गुरु	06/09/2029 17:50	शनि	05/11/2029 16:01
राहु	07/06/2029 13:41	गुरु	15/07/2029 08:37	शनि	15/09/2029 17:44	बुध	15/11/2029 05:24
गुरु	10/06/2029 21:14	शनि	25/07/2029 11:31	बुध	23/09/2029 18:55	केतु	19/11/2029 03:52
शनि	14/06/2029 19:41	बुध	03/08/2029 12:50	केतु	27/09/2029 02:28	शुक्र	30/11/2029 09:45
बुध	18/06/2029 08:12	केतु	07/08/2029 06:19	शुक्र	06/10/2029 13:44	सूर्य	03/12/2029 18:42
केतु	19/06/2029 19:00	शुक्र	17/08/2029 22:00	सूर्य	09/10/2029 09:54	चंद्र	09/12/2029 09:39
शुक्र	23/06/2029 22:26	सूर्य	21/08/2029 02:42	चंद्र	14/10/2029 03:32	मंगल	13/12/2029 08:06
सूर्य	25/06/2029 04:16	चंद्र	26/08/2029 10:32	मंगल	17/10/2029 11:05	राहु	23/12/2029 11:00
चंद्र	27/06/2029 05:58	मंगल	30/08/2029 04:01	राहु	25/10/2029 23:37	गुरु	01/01/2030 10:54

मंगल - शुक्र - बुध		मंगल - शुक्र - केतु		मंगल - सूर्य - सूर्य		मंगल - सूर्य - चंद्र	
01/01/2030 10:54		02/03/2030 19:43		27/03/2030 16:18		03/04/2030 01:42	
02/03/2030 19:43		27/03/2030 16:18		03/04/2030 01:42		13/04/2030 17:23	
बुध	10/01/2030 00:09	केतु	04/03/2030 06:31	सूर्य	27/03/2030 23:58	चंद्र	03/04/2030 23:01
केतु	13/01/2030 12:40	शुक्र	08/03/2030 09:57	चंद्र	28/03/2030 12:45	मंगल	04/04/2030 13:55
शुक्र	23/01/2030 14:08	सूर्य	09/03/2030 15:47	मंगल	28/03/2030 21:42	राहु	06/04/2030 04:17
सूर्य	26/01/2030 14:35	चंद्र	11/03/2030 17:30	राहु	29/03/2030 20:43	गुरु	07/04/2030 14:22
चंद्र	31/01/2030 15:19	मंगल	13/03/2030 04:18	गुरु	30/03/2030 17:10	शनि	09/04/2030 06:51
मंगल	04/02/2030 03:50	राहु	16/03/2030 21:47	शनि	31/03/2030 17:27	बुध	10/04/2030 19:04
राहु	13/02/2030 05:09	गुरु	20/03/2030 05:20	बुध	01/04/2030 15:11	केतु	11/04/2030 09:59
गुरु	21/02/2030 06:20	शनि	24/03/2030 03:47	केतु	02/04/2030 00:08	शुक्र	13/04/2030 04:36
शनि	02/03/2030 19:43	बुध	27/03/2030 16:18	शुक्र	03/04/2030 01:42	सूर्य	13/04/2030 17:23

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - राहु - मंगल - शुक्र	
10/08/2025 18:34	
14/08/2025 12:04	
शुक्र	11/08/2025 09:29
सूर्य	11/08/2025 13:58
चंद्र	11/08/2025 21:25
मंगल	12/08/2025 02:38
राहु	12/08/2025 16:04
गुरु	13/08/2025 04:00
शनि	13/08/2025 18:10
बुध	14/08/2025 06:50
केतु	14/08/2025 12:04

मंगल - राहु - मंगल - सूर्य	
14/08/2025 12:04	
15/08/2025 14:54	
सूर्य	14/08/2025 13:24
चंद्र	14/08/2025 15:38
मंगल	14/08/2025 17:12
राहु	14/08/2025 21:14
गुरु	15/08/2025 00:49
शनि	15/08/2025 05:04
बुध	15/08/2025 08:52
केतु	15/08/2025 10:26
शुक्र	15/08/2025 14:54

मंगल - राहु - मंगल - चंद्र	
15/08/2025 14:54	
17/08/2025 11:39	
चंद्र	15/08/2025 18:38
मंगल	15/08/2025 21:15
राहु	16/08/2025 03:57
गुरु	16/08/2025 09:55
शनि	16/08/2025 17:00
बुध	16/08/2025 23:21
केतु	17/08/2025 01:57
शुक्र	17/08/2025 09:25
सूर्य	17/08/2025 11:39

मंगल - गुरु - गुरु - गुरु	
17/08/2025 11:39	
23/08/2025 13:06	
गुरु	18/08/2025 07:03
शनि	19/08/2025 06:04
बुध	20/08/2025 02:41
केतु	20/08/2025 11:10
शुक्र	21/08/2025 11:24
सूर्य	21/08/2025 18:41
चंद्र	22/08/2025 06:48
मंगल	22/08/2025 15:17
राहु	23/08/2025 13:06

मंगल - गुरु - गुरु - शनि	
23/08/2025 13:06	
30/08/2025 17:49	
शनि	24/08/2025 16:27
बुध	25/08/2025 16:55
केतु	26/08/2025 03:00
शुक्र	27/08/2025 07:47
सूर्य	27/08/2025 16:25
चंद्र	28/08/2025 06:49
मंगल	28/08/2025 16:53
राहु	29/08/2025 18:48
गुरु	30/08/2025 17:49

मंगल - गुरु - गुरु - बुध	
30/08/2025 17:49	
06/09/2025 04:22	
बुध	31/08/2025 15:43
केतु	01/09/2025 00:44
शुक्र	02/09/2025 02:29
सूर्य	02/09/2025 10:13
चंद्र	02/09/2025 23:06
मंगल	03/09/2025 08:06
राहु	04/09/2025 07:17
गुरु	05/09/2025 03:54
शनि	06/09/2025 04:22

मंगल - गुरु - गुरु - केतु	
06/09/2025 04:22	
08/09/2025 20:00	
केतु	06/09/2025 08:05
शुक्र	06/09/2025 18:41
सूर्य	06/09/2025 21:52
चंद्र	07/09/2025 03:10
मंगल	07/09/2025 06:53
राहु	07/09/2025 16:25
गुरु	08/09/2025 00:54
शनि	08/09/2025 10:59
बुध	08/09/2025 20:00

मंगल - गुरु - गुरु - शुक्र	
08/09/2025 20:00	
16/09/2025 09:49	
शुक्र	10/09/2025 02:18
सूर्य	10/09/2025 11:23
चंद्र	11/09/2025 02:33
मंगल	11/09/2025 13:09
राहु	12/09/2025 16:25
गुरु	13/09/2025 16:40
शनि	14/09/2025 21:27
बुध	15/09/2025 23:12
केतु	16/09/2025 09:49

मंगल - गुरु - गुरु - सूर्य	
16/09/2025 09:49	
18/09/2025 16:21	
सूर्य	16/09/2025 12:32
चंद्र	16/09/2025 17:05
मंगल	16/09/2025 20:16
राहु	17/09/2025 04:27
गुरु	17/09/2025 11:43
शनि	17/09/2025 20:21
बुध	18/09/2025 04:05
केतु	18/09/2025 07:16
शुक्र	18/09/2025 16:21

मंगल - गुरु - गुरु - चंद्र	
18/09/2025 16:21	
22/09/2025 11:16	
चंद्र	18/09/2025 23:56
मंगल	19/09/2025 05:14
राहु	19/09/2025 18:52
गुरु	20/09/2025 06:59
शनि	20/09/2025 21:23
बुध	21/09/2025 10:16
केतु	21/09/2025 15:34
शुक्र	22/09/2025 06:43
सूर्य	22/09/2025 11:16

मंगल - गुरु - गुरु - मंगल	
22/09/2025 11:16	
25/09/2025 02:54	
मंगल	22/09/2025 14:58
राहु	23/09/2025 00:31
गुरु	23/09/2025 09:00
शनि	23/09/2025 19:05
बुध	24/09/2025 04:06
केतु	24/09/2025 07:48
शुक्र	24/09/2025 18:25
सूर्य	24/09/2025 21:36
चंद्र	25/09/2025 02:54

मंगल - गुरु - गुरु - राहु	
25/09/2025 02:54	
01/10/2025 22:32	
राहु	26/09/2025 03:26
गुरु	27/09/2025 01:16
शनि	28/09/2025 03:10
बुध	29/09/2025 02:21
केतु	29/09/2025 11:54
शुक्र	30/09/2025 15:10
सूर्य	30/09/2025 23:21
चंद्र	01/10/2025 12:59
मंगल	01/10/2025 22:32

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - गुरु - शनि - शनि	
01/10/2025 22:32	
10/10/2025 11:38	
शनि	03/10/2025 07:00
बुध	04/10/2025 12:04
केतु	05/10/2025 00:02
शुक्र	06/10/2025 10:13
सूर्य	06/10/2025 20:28
चंद्र	07/10/2025 13:33
मंगल	08/10/2025 01:31
राहु	09/10/2025 08:17
गुरु	10/10/2025 11:38

मंगल - गुरु - शनि - बुध	
10/10/2025 11:38	
18/10/2025 03:09	
बुध	11/10/2025 13:38
केतु	12/10/2025 00:20
शुक्र	13/10/2025 06:56
सूर्य	13/10/2025 16:06
चंद्र	14/10/2025 07:24
मंगल	14/10/2025 18:06
राहु	15/10/2025 21:38
गुरु	16/10/2025 22:06
शनि	18/10/2025 03:09

मंगल - गुरु - शनि - केतु	
18/10/2025 03:09	
21/10/2025 06:43	
केतु	18/10/2025 07:34
शुक्र	18/10/2025 20:09
सूर्य	18/10/2025 23:56
चंद्र	19/10/2025 06:14
मंगल	19/10/2025 10:38
राहु	19/10/2025 21:59
गुरु	20/10/2025 08:03
शनि	20/10/2025 20:01
बुध	21/10/2025 06:43

मंगल - गुरु - शनि - शुक्र	
21/10/2025 06:43	
30/10/2025 06:37	
शुक्र	22/10/2025 18:42
सूर्य	23/10/2025 05:30
चंद्र	23/10/2025 23:30
मंगल	24/10/2025 12:05
राहु	25/10/2025 20:28
गुरु	27/10/2025 01:16
शनि	28/10/2025 11:27
बुध	29/10/2025 18:02
केतु	30/10/2025 06:37

मंगल - गुरु - शनि - सूर्य	
30/10/2025 06:37	
01/11/2025 23:24	
सूर्य	30/10/2025 09:52
चंद्र	30/10/2025 15:16
मंगल	30/10/2025 19:02
राहु	31/10/2025 04:45
गुरु	31/10/2025 13:23
शनि	31/10/2025 23:39
बुध	01/11/2025 08:49
केतु	01/11/2025 12:36
शुक्र	01/11/2025 23:24

मंगल - गुरु - शनि - चंद्र	
01/11/2025 23:24	
06/11/2025 11:21	
चंद्र	02/11/2025 08:23
मंगल	02/11/2025 14:41
राहु	03/11/2025 06:53
गुरु	03/11/2025 21:16
शनि	04/11/2025 14:22
बुध	05/11/2025 05:40
केतु	05/11/2025 11:57
शुक्र	06/11/2025 05:57
सूर्य	06/11/2025 11:21

मंगल - गुरु - शनि - मंगल	
06/11/2025 11:21	
09/11/2025 14:55	
मंगल	06/11/2025 15:45
राहु	07/11/2025 03:05
गुरु	07/11/2025 13:10
शनि	08/11/2025 01:08
बुध	08/11/2025 11:50
केतु	08/11/2025 16:15
शुक्र	09/11/2025 04:50
सूर्य	09/11/2025 08:37
चंद्र	09/11/2025 14:55

मंगल - गुरु - शनि - राहु	
09/11/2025 14:55	
17/11/2025 17:14	
राहु	10/11/2025 20:04
गुरु	11/11/2025 21:58
शनि	13/11/2025 04:44
बुध	14/11/2025 08:16
केतु	14/11/2025 19:36
शुक्र	16/11/2025 03:59
सूर्य	16/11/2025 13:42
चंद्र	17/11/2025 05:53
मंगल	17/11/2025 17:14

मंगल - गुरु - शनि - गुरु	
17/11/2025 17:14	
24/11/2025 21:57	
गुरु	18/11/2025 16:15
शनि	19/11/2025 19:36
बुध	20/11/2025 20:04
केतु	21/11/2025 06:09
शुक्र	22/11/2025 10:56
सूर्य	22/11/2025 19:34
चंद्र	23/11/2025 09:58
मंगल	23/11/2025 20:02
राहु	24/11/2025 21:57

मंगल - गुरु - बुध - बुध	
24/11/2025 21:57	
01/12/2025 18:09	
बुध	25/11/2025 21:13
केतु	26/11/2025 06:47
शुक्र	27/11/2025 10:09
सूर्य	27/11/2025 18:22
चंद्र	28/11/2025 08:03
मंगल	28/11/2025 17:38
राहु	29/11/2025 18:15
गुरु	30/11/2025 16:09
शनि	01/12/2025 18:09

मंगल - गुरु - बुध - केतु	
01/12/2025 18:09	
04/12/2025 13:46	
केतु	01/12/2025 22:06
शुक्र	02/12/2025 09:22
सूर्य	02/12/2025 12:45
चंद्र	02/12/2025 18:23
मंगल	02/12/2025 22:19
राहु	03/12/2025 08:28
गुरु	03/12/2025 17:29
शनि	04/12/2025 04:11
बुध	04/12/2025 13:46

मंगल - गुरु - बुध - शुक्र	
04/12/2025 13:46	
12/12/2025 14:56	
शुक्र	05/12/2025 21:57
सूर्य	06/12/2025 07:37
चंद्र	06/12/2025 23:43
मंगल	07/12/2025 10:59
राहु	08/12/2025 15:58
गुरु	09/12/2025 17:43
शनि	11/12/2025 00:18
बुध	12/12/2025 03:40
केतु	12/12/2025 14:56

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 4 मास 2 दिन

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष	
07/09/1980		10/01/1981		10/01/1994		10/01/2008		10/01/2023	
10/01/1981		10/01/1994		10/01/2008		10/01/2023		10/01/2039	
	00/00/0000	गुरु	26/06/1982	शनि	19/09/1995	केतु	19/12/2009	चंद्र	26/03/2025
	00/00/0000	शनि	20/01/1984	केतु	11/07/1997	चंद्र	14/01/2012	बुध	31/07/2027
	00/00/0000	केतु	25/09/1985	चंद्र	17/06/1999	बुध	27/03/2014	शुक्र	23/01/2030
	00/00/0000	चंद्र	12/07/1987	बुध	05/07/2001	शुक्र	24/07/2016	सूर्य	31/07/2031
	00/00/0000	बुध	07/06/1989	शुक्र	07/09/2003	सूर्य	25/12/2017	मंगल	26/03/2033
	00/00/0000	शुक्र	13/06/1991	सूर्य	03/01/2005	मंगल	15/07/2019	गुरु	10/01/2035
	07/09/1980	सूर्य	06/09/1992	मंगल	16/06/2006	गुरु	20/03/2021	शनि	16/12/2036
सूर्य	10/01/1981	मंगल	10/01/1994	गुरु	10/01/2008	शनि	10/01/2023	केतु	10/01/2039

बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष	
10/01/2039		10/01/2056		10/01/2074		10/01/2085	
10/01/2056		10/01/2074		10/01/2085		07/09/2096	
बुध	08/07/2041	शुक्र	27/10/2058	सूर्य	26/01/2075	मंगल	08/04/2086
शुक्र	27/02/2044	सूर्य	11/07/2060	मंगल	17/03/2076	गुरु	12/08/2087
सूर्य	07/10/2045	मंगल	22/05/2062	गुरु	10/06/2077	शनि	22/01/2089
मंगल	12/07/2047	गुरु	28/05/2064	शनि	08/10/2078	केतु	12/08/2090
गुरु	07/06/2049	शनि	30/07/2066	केतु	10/03/2080	चंद्र	08/04/2092
शनि	26/06/2051	केतु	27/11/2068	चंद्र	15/09/2081	बुध	10/01/2094
केतु	06/09/2053	चंद्र	22/05/2071	बुध	27/04/2083	शुक्र	21/11/2095
चंद्र	10/01/2056	बुध	10/01/2074	शुक्र	10/01/2085	सूर्य	07/09/2096

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र	
07/09/1980		10/01/1981		26/06/1982		20/01/1984		25/09/1985	
10/01/1981		26/06/1982		20/01/1984		25/09/1985		12/07/1987	
	00/00/0000	गुरु	10/03/1981	शनि	03/09/1982	केतु	08/04/1984	चंद्र	24/12/1985
	00/00/0000	शनि	14/05/1981	केतु	16/11/1982	चंद्र	02/07/1984	बुध	30/03/1986
	00/00/0000	केतु	21/07/1981	चंद्र	03/02/1983	बुध	30/09/1984	शुक्र	10/07/1986
	00/00/0000	चंद्र	03/10/1981	बुध	28/04/1983	शुक्र	03/01/1985	सूर्य	10/09/1986
	00/00/0000	बुध	20/12/1981	शुक्र	26/07/1983	सूर्य	02/03/1985	मंगल	17/11/1986
	07/09/1980	शुक्र	12/03/1982	सूर्य	18/09/1983	मंगल	05/05/1985	गुरु	29/01/1987
बुध	06/11/1980	सूर्य	02/05/1982	मंगल	17/11/1983	गुरु	13/07/1985	शनि	18/04/1987
शुक्र	10/01/1981	मंगल	26/06/1982	गुरु	20/01/1984	शनि	25/09/1985	केतु	12/07/1987

गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि	
12/07/1987		07/06/1989		13/06/1991		06/09/1992		10/01/1994	
07/06/1989		13/06/1991		06/09/1992		10/01/1994		19/09/1995	
बुध	22/10/1987	शुक्र	29/09/1989	सूर्य	26/07/1991	मंगल	27/10/1992	शनि	25/03/1994
शुक्र	07/02/1988	सूर्य	08/12/1989	मंगल	11/09/1991	गुरु	21/12/1992	केतु	13/06/1994
सूर्य	13/04/1988	मंगल	22/02/1990	गुरु	31/10/1991	शनि	18/02/1993	चंद्र	06/09/1994
मंगल	24/06/1988	गुरु	16/05/1990	शनि	25/12/1991	केतु	22/04/1993	बुध	06/12/1994
गुरु	10/09/1988	शनि	13/08/1990	केतु	21/02/1992	चंद्र	29/06/1993	शुक्र	12/03/1995
शनि	03/12/1988	केतु	16/11/1990	चंद्र	23/04/1992	बुध	09/09/1993	सूर्य	09/05/1995
केतु	03/03/1989	चंद्र	26/02/1991	बुध	28/06/1992	शुक्र	24/11/1993	मंगल	12/07/1995
चंद्र	07/06/1989	बुध	13/06/1991	शुक्र	06/09/1992	सूर्य	10/01/1994	गुरु	19/09/1995

शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
19/09/1995		11/07/1997		17/06/1999		05/07/2001		07/09/2003	
11/07/1997		17/06/1999		05/07/2001		07/09/2003		03/01/2005	
केतु	14/12/1995	चंद्र	17/10/1997	बुध	04/10/1999	शुक्र	05/11/2001	सूर्य	22/10/2003
चंद्र	14/03/1996	बुध	28/01/1998	शुक्र	29/01/2000	सूर्य	19/01/2002	मंगल	12/12/2003
बुध	19/06/1996	शुक्र	17/05/1998	सूर्य	09/04/2000	मंगल	11/04/2002	गुरु	04/02/2004
शुक्र	29/09/1996	सूर्य	23/07/1998	मंगल	25/06/2000	गुरु	09/07/2002	शनि	03/04/2004
सूर्य	01/12/1996	मंगल	04/10/1998	गुरु	17/09/2000	शनि	13/10/2002	केतु	04/06/2004
मंगल	07/02/1997	गुरु	22/12/1998	शनि	17/12/2000	केतु	24/01/2003	चंद्र	10/08/2004
गुरु	23/04/1997	शनि	17/03/1999	केतु	24/03/2001	चंद्र	13/05/2003	बुध	20/10/2004
शनि	11/07/1997	केतु	17/06/1999	चंद्र	05/07/2001	बुध	07/09/2003	शुक्र	03/01/2005

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध	
03/01/2005		16/06/2006		10/01/2008		19/12/2009		14/01/2012	
16/06/2006		10/01/2008		19/12/2009		14/01/2012		27/03/2014	
मंगल	27/02/2005	गुरु	20/08/2006	केतु	11/04/2008	चंद्र	02/04/2010	बुध	10/05/2012
गुरु	27/04/2005	शनि	28/10/2006	चंद्र	18/07/2008	बुध	22/07/2010	शुक्र	12/09/2012
शनि	30/06/2005	केतु	10/01/2007	बुध	30/10/2008	शुक्र	16/11/2010	सूर्य	27/11/2012
केतु	07/09/2005	चंद्र	30/03/2007	शुक्र	17/02/2009	सूर्य	27/01/2011	मंगल	18/02/2013
चंद्र	19/11/2005	बुध	22/06/2007	सूर्य	25/04/2009	मंगल	15/04/2011	गुरु	19/05/2013
बुध	04/02/2006	शुक्र	19/09/2007	मंगल	07/07/2009	गुरु	09/07/2011	शनि	24/08/2013
शुक्र	27/04/2006	सूर्य	12/11/2007	गुरु	24/09/2009	शनि	08/10/2011	केतु	06/12/2013
सूर्य	16/06/2006	मंगल	10/01/2008	शनि	19/12/2009	केतु	14/01/2012	चंद्र	27/03/2014

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि	
27/03/2014		24/07/2016		25/12/2017		15/07/2019		20/03/2021	
24/07/2016		25/12/2017		15/07/2019		20/03/2021		10/01/2023	
शुक्र	05/08/2014	सूर्य	11/09/2016	मंगल	22/02/2018	गुरु	22/09/2019	शनि	08/06/2021
सूर्य	25/10/2014	मंगल	04/11/2016	गुरु	26/04/2018	शनि	05/12/2019	केतु	01/09/2021
मंगल	21/01/2015	गुरु	01/01/2017	शनि	04/07/2018	केतु	22/02/2020	चंद्र	01/12/2021
गुरु	26/04/2015	शनि	05/03/2017	केतु	15/09/2018	चंद्र	17/05/2020	बुध	08/03/2022
शनि	07/08/2015	केतु	11/05/2017	चंद्र	02/12/2018	बुध	15/08/2020	शुक्र	19/06/2022
केतु	25/11/2015	चंद्र	21/07/2017	बुध	23/02/2019	शुक्र	18/11/2020	सूर्य	21/08/2022
चंद्र	21/03/2016	बुध	06/10/2017	शुक्र	22/05/2019	सूर्य	15/01/2021	मंगल	28/10/2022
बुध	24/07/2016	शुक्र	25/12/2017	सूर्य	15/07/2019	मंगल	20/03/2021	गुरु	10/01/2023

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
10/01/2023		26/03/2025		31/07/2027		23/01/2030		31/07/2031	
26/03/2025		31/07/2027		23/01/2030		31/07/2031		26/03/2033	
चंद्र	01/05/2023	बुध	30/07/2025	शुक्र	18/12/2027	सूर्य	16/03/2030	मंगल	01/10/2031
बुध	28/08/2023	शुक्र	10/12/2025	सूर्य	13/03/2028	मंगल	12/05/2030	गुरु	08/12/2031
शुक्र	31/12/2023	सूर्य	01/03/2026	मंगल	15/06/2028	गुरु	14/07/2030	शनि	19/02/2032
सूर्य	16/03/2024	मंगल	28/05/2026	गुरु	25/09/2028	शनि	18/09/2030	केतु	07/05/2032
मंगल	07/06/2024	गुरु	01/09/2026	शनि	12/01/2029	केतु	29/11/2030	चंद्र	30/07/2032
गुरु	06/09/2024	शनि	14/12/2026	केतु	10/05/2029	चंद्र	14/02/2031	बुध	26/10/2032
शनि	12/12/2024	केतु	04/04/2027	चंद्र	12/09/2029	बुध	06/05/2031	शुक्र	28/01/2033
केतु	26/03/2025	चंद्र	31/07/2027	बुध	23/01/2030	शुक्र	31/07/2031	सूर्य	26/03/2033

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र	
26/03/2033		10/01/2035		16/12/2036		10/01/2039		08/07/2041	
10/01/2035		16/12/2036		10/01/2039		08/07/2041		27/02/2044	
गुरु	08/06/2033	शनि	05/04/2035	केतु	23/03/2037	बुध	24/05/2039	शुक्र	05/12/2041
शनि	26/08/2033	केतु	06/07/2035	चंद्र	05/07/2037	शुक्र	12/10/2039	सूर्य	06/03/2042
केतु	18/11/2033	चंद्र	11/10/2035	बुध	24/10/2037	सूर्य	06/01/2040	मंगल	14/06/2042
चंद्र	17/02/2034	बुध	22/01/2036	शुक्र	18/02/2038	मंगल	09/04/2040	गुरु	30/09/2042
बुध	24/05/2034	शुक्र	11/05/2036	सूर्य	01/05/2038	गुरु	20/07/2040	शनि	24/01/2043
शुक्र	02/09/2034	सूर्य	17/07/2036	मंगल	18/07/2038	शनि	07/11/2040	केतु	29/05/2043
सूर्य	03/11/2034	मंगल	27/09/2036	गुरु	11/10/2038	केतु	05/03/2041	चंद्र	08/10/2043
मंगल	10/01/2035	गुरु	16/12/2036	शनि	10/01/2039	चंद्र	08/07/2041	बुध	27/02/2044

बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु	
27/02/2044		07/10/2045		12/07/2047		07/06/2049		26/06/2051	
07/10/2045		12/07/2047		07/06/2049		26/06/2051		06/09/2053	
सूर्य	23/04/2044	मंगल	13/12/2045	गुरु	28/09/2047	शनि	05/09/2049	केतु	08/10/2051
मंगल	22/06/2044	गुरु	23/02/2046	शनि	21/12/2047	केतु	11/12/2049	चंद्र	27/01/2052
गुरु	27/08/2044	शनि	11/05/2046	केतु	20/03/2048	चंद्र	24/03/2050	बुध	23/05/2052
शनि	06/11/2044	केतु	03/08/2046	चंद्र	24/06/2048	बुध	12/07/2050	शुक्र	25/09/2052
केतु	22/01/2045	चंद्र	30/10/2046	बुध	04/10/2048	शुक्र	06/11/2050	सूर्य	10/12/2052
चंद्र	13/04/2045	बुध	01/02/2047	शुक्र	20/01/2049	सूर्य	16/01/2051	मंगल	03/03/2053
बुध	08/07/2045	शुक्र	12/05/2047	सूर्य	27/03/2049	मंगल	03/04/2051	गुरु	01/06/2053
शुक्र	07/10/2045	सूर्य	12/07/2047	मंगल	07/06/2049	गुरु	26/06/2051	शनि	06/09/2053

बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु	
06/09/2053		10/01/2056		27/10/2058		11/07/2060		22/05/2062	
10/01/2056		27/10/2058		11/07/2060		22/05/2062		28/05/2064	
चंद्र	02/01/2054	शुक्र	17/06/2056	सूर्य	25/12/2058	मंगल	19/09/2060	गुरु	13/08/2062
बुध	08/05/2054	सूर्य	21/09/2056	मंगल	27/02/2059	गुरु	05/12/2060	शनि	10/11/2062
शुक्र	18/09/2054	मंगल	05/01/2057	गुरु	08/05/2059	शनि	25/02/2061	केतु	13/02/2063
सूर्य	08/12/2054	गुरु	29/04/2057	शनि	22/07/2059	केतु	24/05/2061	चंद्र	26/05/2063
मंगल	06/03/2055	शनि	30/08/2057	केतु	11/10/2059	चंद्र	25/08/2061	बुध	11/09/2063
गुरु	10/06/2055	केतु	09/01/2058	चंद्र	05/01/2060	बुध	03/12/2061	शुक्र	03/01/2064
शनि	22/09/2055	चंद्र	30/05/2058	बुध	05/04/2060	शुक्र	19/03/2062	सूर्य	13/03/2064
केतु	10/01/2056	बुध	27/10/2058	शुक्र	11/07/2060	सूर्य	22/05/2062	मंगल	28/05/2064

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य	
28/05/2064		30/07/2066		27/11/2068		22/05/2071		10/01/2074	
30/07/2066		27/11/2068		22/05/2071		10/01/2074		26/01/2075	
शनि	01/09/2064	केतु	17/11/2066	चंद्र	01/04/2069	बुध	11/10/2071	सूर्य	15/02/2074
केतु	12/12/2064	चंद्र	15/03/2067	बुध	12/08/2069	शुक्र	08/03/2072	मंगल	26/03/2074
चंद्र	01/04/2065	बुध	17/07/2067	शुक्र	30/12/2069	सूर्य	08/06/2072	गुरु	08/05/2074
बुध	26/07/2065	शुक्र	26/11/2067	सूर्य	26/03/2070	मंगल	15/09/2072	शनि	23/06/2074
शुक्र	26/11/2065	सूर्य	15/02/2068	मंगल	28/06/2070	गुरु	01/01/2073	केतु	11/08/2074
सूर्य	09/02/2066	मंगल	13/05/2068	गुरु	08/10/2070	शनि	27/04/2073	चंद्र	03/10/2074
मंगल	03/05/2066	गुरु	16/08/2068	शनि	25/01/2071	केतु	30/08/2073	बुध	28/11/2074
गुरु	30/07/2066	शनि	27/11/2068	केतु	22/05/2071	चंद्र	10/01/2074	शुक्र	26/01/2075

सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र	
26/01/2075		17/03/2076		10/06/2077		08/10/2078		10/03/2080	
17/03/2076		10/06/2077		08/10/2078		10/03/2080		15/09/2081	
मंगल	10/03/2075	गुरु	06/05/2076	शनि	07/08/2077	केतु	14/12/2078	चंद्र	26/05/2080
गुरु	26/04/2075	शनि	29/06/2076	केतु	09/10/2077	चंद्र	24/02/2079	बुध	15/08/2080
शनि	15/06/2075	केतु	27/08/2076	चंद्र	15/12/2077	बुध	11/05/2079	शुक्र	09/11/2080
केतु	07/08/2075	चंद्र	28/10/2076	बुध	24/02/2078	शुक्र	30/07/2079	सूर्य	31/12/2080
चंद्र	04/10/2075	बुध	02/01/2077	शुक्र	10/05/2078	सूर्य	18/09/2079	मंगल	27/02/2081
बुध	04/12/2075	शुक्र	13/03/2077	सूर्य	25/06/2078	मंगल	10/11/2079	गुरु	30/04/2081
शुक्र	06/02/2076	सूर्य	24/04/2077	मंगल	14/08/2078	गुरु	08/01/2080	शनि	06/07/2081
सूर्य	17/03/2076	मंगल	10/06/2077	गुरु	08/10/2078	शनि	10/03/2080	केतु	15/09/2081

सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
15/09/2081		27/04/2083		10/01/2085		08/04/2086		12/08/2087	
27/04/2083		10/01/2085		08/04/2086		12/08/2087		22/01/2089	
बुध	11/12/2081	शुक्र	02/08/2083	मंगल	26/02/2085	गुरु	02/06/2086	शनि	15/10/2087
शुक्र	12/03/2082	सूर्य	30/09/2083	गुरु	17/04/2085	शनि	31/07/2086	केतु	23/12/2087
सूर्य	07/05/2082	मंगल	04/12/2083	शनि	11/06/2085	केतु	03/10/2086	चंद्र	05/03/2088
मंगल	07/07/2082	गुरु	11/02/2084	केतु	09/08/2085	चंद्र	10/12/2086	बुध	21/05/2088
गुरु	11/09/2082	शनि	27/04/2084	चंद्र	10/10/2085	बुध	20/02/2087	शुक्र	11/08/2088
शनि	21/11/2082	केतु	16/07/2084	बुध	16/12/2085	शुक्र	07/05/2087	सूर्य	30/09/2088
केतु	05/02/2083	चंद्र	10/10/2084	शुक्र	24/02/2086	सूर्य	22/06/2087	मंगल	24/11/2088
चंद्र	27/04/2083	बुध	10/01/2085	सूर्य	08/04/2086	मंगल	12/08/2087	गुरु	22/01/2089

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 0 वर्ष 3 मास 26 दिन

बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष	
07/09/1980		03/01/1981		03/09/1985		03/01/1999		03/01/2003	
03/01/1981		03/09/1985		03/01/1999		03/01/2003		03/09/2009	
	00/00/0000	केतु	12/04/1981	शुक्र	24/11/1987	सूर्य	17/03/1999	चंद्र	25/07/2003
	00/00/0000	शुक्र	21/01/1982	सूर्य	24/07/1988	चंद्र	17/07/1999	मंगल	14/12/2003
	00/00/0000	सूर्य	17/04/1982	चंद्र	03/09/1989	मंगल	10/10/1999	राहु	13/12/2004
	00/00/0000	चंद्र	06/09/1982	मंगल	14/06/1990	राहु	16/05/2000	गुरु	03/11/2005
	00/00/0000	मंगल	14/12/1982	राहु	14/06/1992	गुरु	27/11/2000	शनि	24/11/2006
	00/00/0000	राहु	27/08/1983	गुरु	25/03/1994	शनि	17/07/2001	बुध	04/11/2007
	00/00/0000	गुरु	10/04/1984	शनि	04/05/1996	बुध	09/02/2002	केतु	25/03/2008
	07/09/1980	शनि	05/01/1985	बुध	25/03/1998	केतु	05/05/2002	शुक्र	05/05/2009
शनि	03/01/1981	बुध	03/09/1985	केतु	03/01/1999	शुक्र	03/01/2003	सूर्य	03/09/2009

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
03/09/2009		05/05/2014		05/05/2026		03/01/2037		03/09/2049	
05/05/2014		05/05/2026		03/01/2037		03/09/2049		07/09/2060	
मंगल	12/12/2009	राहु	21/02/2016	गुरु	06/10/2027	शनि	05/01/2039	बुध	13/04/2051
राहु	24/08/2010	गुरु	28/09/2017	शनि	14/06/2029	बुध	22/10/2040	केतु	10/12/2051
गुरु	09/04/2011	शनि	23/08/2019	बुध	18/12/2030	केतु	19/07/2041	शुक्र	30/10/2053
शनि	04/01/2012	बुध	05/05/2021	केतु	02/08/2031	शुक्र	29/08/2043	सूर्य	25/05/2054
बुध	01/09/2012	केतु	15/01/2022	शुक्र	13/05/2033	सूर्य	16/04/2044	चंद्र	05/05/2055
केतु	09/12/2012	शुक्र	16/01/2024	सूर्य	23/11/2033	चंद्र	07/05/2045	मंगल	02/01/2056
शुक्र	20/09/2013	सूर्य	22/08/2024	चंद्र	14/10/2034	मंगल	31/01/2046	राहु	13/09/2057
सूर्य	14/12/2013	चंद्र	22/08/2025	मंगल	29/05/2035	राहु	26/12/2047	गुरु	19/03/2059
चंद्र	05/05/2014	मंगल	05/05/2026	राहु	03/01/2037	गुरु	03/09/2049	शनि	07/09/2060

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
07/09/1980		03/01/1981		12/04/1981		21/01/1982		17/04/1982	
03/01/1981		12/04/1981		21/01/1982		17/04/1982		06/09/1982	
	00/00/0000	केतु	09/01/1981	शुक्र	30/05/1981	सूर्य	26/01/1982	चंद्र	28/04/1982
	00/00/0000	शुक्र	25/01/1981	सूर्य	13/06/1981	चंद्र	02/02/1982	मंगल	07/05/1982
	00/00/0000	सूर्य	30/01/1981	चंद्र	06/07/1981	मंगल	07/02/1982	राहु	28/05/1982
	00/00/0000	चंद्र	07/02/1981	मंगल	23/07/1981	राहु	19/02/1982	गुरु	16/06/1982
	00/00/0000	मंगल	13/02/1981	राहु	04/09/1981	गुरु	03/03/1982	शनि	08/07/1982
	00/00/0000	राहु	28/02/1981	गुरु	12/10/1981	शनि	16/03/1982	बुध	29/07/1982
	07/09/1980	गुरु	13/03/1981	शनि	25/11/1981	बुध	28/03/1982	केतु	06/08/1982
राहु	07/10/1980	शनि	29/03/1981	बुध	05/01/1982	केतु	02/04/1982	शुक्र	29/08/1982
गुरु	03/01/1981	बुध	12/04/1981	केतु	21/01/1982	शुक्र	17/04/1982	सूर्य	06/09/1982

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
06/09/1982		14/12/1982		27/08/1983		10/04/1984		05/01/1985	
14/12/1982		27/08/1983		10/04/1984		05/01/1985		03/09/1985	
मंगल	11/09/1982	राहु	21/01/1983	गुरु	26/09/1983	शनि	23/05/1984	बुध	08/02/1985
राहु	26/09/1982	गुरु	24/02/1983	शनि	01/11/1983	बुध	30/06/1984	केतु	22/02/1985
गुरु	10/10/1982	शनि	06/04/1983	बुध	03/12/1983	केतु	16/07/1984	शुक्र	03/04/1985
शनि	25/10/1982	बुध	12/05/1983	केतु	16/12/1983	शुक्र	30/08/1984	सूर्य	15/04/1985
बुध	08/11/1982	केतु	27/05/1983	शुक्र	23/01/1984	सूर्य	12/09/1984	चंद्र	06/05/1985
केतु	14/11/1982	शुक्र	09/07/1983	सूर्य	04/02/1984	चंद्र	05/10/1984	मंगल	20/05/1985
शुक्र	01/12/1982	सूर्य	21/07/1983	चंद्र	23/02/1984	मंगल	20/10/1984	राहु	25/06/1985
सूर्य	06/12/1982	चंद्र	12/08/1983	मंगल	07/03/1984	राहु	30/11/1984	गुरु	27/07/1985
चंद्र	14/12/1982	मंगल	27/08/1983	राहु	10/04/1984	गुरु	05/01/1985	शनि	03/09/1985

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
03/09/1985		24/11/1987		24/07/1988		03/09/1989		14/06/1990	
24/11/1987		24/07/1988		03/09/1989		14/06/1990		14/06/1992	
शुक्र	17/01/1986	सूर्य	06/12/1987	चंद्र	27/08/1988	मंगल	20/09/1989	राहु	02/10/1990
सूर्य	26/02/1986	चंद्र	26/12/1987	मंगल	20/09/1988	राहु	01/11/1989	गुरु	07/01/1991
चंद्र	05/05/1986	मंगल	10/01/1988	राहु	20/11/1988	गुरु	09/12/1989	शनि	03/05/1991
मंगल	21/06/1986	राहु	15/02/1988	गुरु	13/01/1989	शनि	23/01/1990	बुध	14/08/1991
राहु	21/10/1986	गुरु	19/03/1988	शनि	18/03/1989	बुध	05/03/1990	केतु	26/09/1991
गुरु	06/02/1987	शनि	26/04/1988	बुध	15/05/1989	केतु	21/03/1990	शुक्र	26/01/1992
शनि	15/06/1987	बुध	31/05/1988	केतु	07/06/1989	शुक्र	07/05/1990	सूर्य	02/03/1992
बुध	08/10/1987	केतु	14/06/1988	शुक्र	14/08/1989	सूर्य	22/05/1990	चंद्र	02/05/1992
केतु	24/11/1987	शुक्र	24/07/1988	सूर्य	03/09/1989	चंद्र	14/06/1990	मंगल	14/06/1992

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
14/06/1992		25/03/1994		04/05/1996		25/03/1998		03/01/1999	
25/03/1994		04/05/1996		25/03/1998		03/01/1999		17/03/1999	
गुरु	08/09/1992	शनि	25/07/1994	बुध	10/08/1996	केतु	11/04/1998	सूर्य	07/01/1999
शनि	20/12/1992	बुध	12/11/1994	केतु	19/09/1996	शुक्र	28/05/1998	चंद्र	13/01/1999
बुध	22/03/1993	केतु	27/12/1994	शुक्र	12/01/1997	सूर्य	11/06/1998	मंगल	17/01/1999
केतु	29/04/1993	शुक्र	04/05/1995	सूर्य	16/02/1997	चंद्र	05/07/1998	राहु	28/01/1999
शुक्र	15/08/1993	सूर्य	12/06/1995	चंद्र	14/04/1997	मंगल	22/07/1998	गुरु	07/02/1999
सूर्य	17/09/1993	चंद्र	15/08/1995	मंगल	24/05/1997	राहु	02/09/1998	शनि	19/02/1999
चंद्र	10/11/1993	मंगल	29/09/1995	राहु	05/09/1997	गुरु	10/10/1998	बुध	01/03/1999
मंगल	18/12/1993	राहु	22/01/1996	गुरु	06/12/1997	शनि	24/11/1998	केतु	05/03/1999
राहु	25/03/1994	गुरु	04/05/1996	शनि	25/03/1998	बुध	03/01/1999	शुक्र	17/03/1999

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
17/03/1999		17/07/1999		10/10/1999		16/05/2000		27/11/2000	
17/07/1999		10/10/1999		16/05/2000		27/11/2000		17/07/2001	
चंद्र	27/03/1999	मंगल	22/07/1999	राहु	12/11/1999	गुरु	11/06/2000	शनि	03/01/2001
मंगल	04/04/1999	राहु	04/08/1999	गुरु	11/12/1999	शनि	12/07/2000	बुध	05/02/2001
राहु	22/04/1999	गुरु	15/08/1999	शनि	15/01/2000	बुध	09/08/2000	केतु	18/02/2001
गुरु	08/05/1999	शनि	29/08/1999	बुध	15/02/2000	केतु	20/08/2000	शुक्र	29/03/2001
शनि	27/05/1999	बुध	10/09/1999	केतु	28/02/2000	शुक्र	22/09/2000	सूर्य	09/04/2001
बुध	14/06/1999	केतु	15/09/1999	शुक्र	04/04/2000	सूर्य	01/10/2000	चंद्र	29/04/2001
केतु	21/06/1999	शुक्र	29/09/1999	सूर्य	15/04/2000	चंद्र	18/10/2000	मंगल	12/05/2001
शुक्र	11/07/1999	सूर्य	03/10/1999	चंद्र	04/05/2000	मंगल	29/10/2000	राहु	16/06/2001
सूर्य	17/07/1999	चंद्र	10/10/1999	मंगल	16/05/2000	राहु	27/11/2000	गुरु	17/07/2001

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
17/07/2001		09/02/2002		05/05/2002		03/01/2003		25/07/2003	
09/02/2002		05/05/2002		03/01/2003		25/07/2003		14/12/2003	
बुध	15/08/2001	केतु	14/02/2002	शुक्र	14/06/2002	चंद्र	20/01/2003	मंगल	02/08/2003
केतु	27/08/2001	शुक्र	28/02/2002	सूर्य	27/06/2002	मंगल	01/02/2003	राहु	24/08/2003
शुक्र	30/09/2001	सूर्य	04/03/2002	चंद्र	17/07/2002	राहु	03/03/2003	गुरु	12/09/2003
सूर्य	11/10/2001	चंद्र	11/03/2002	मंगल	31/07/2002	गुरु	31/03/2003	शनि	04/10/2003
चंद्र	28/10/2001	मंगल	16/03/2002	राहु	06/09/2002	शनि	02/05/2003	बुध	24/10/2003
मंगल	09/11/2001	राहु	29/03/2002	गुरु	08/10/2002	बुध	30/05/2003	केतु	02/11/2003
राहु	10/12/2001	गुरु	09/04/2002	शनि	16/11/2002	केतु	11/06/2003	शुक्र	25/11/2003
गुरु	07/01/2002	शनि	23/04/2002	बुध	20/12/2002	शुक्र	15/07/2003	सूर्य	02/12/2003
शनि	09/02/2002	बुध	05/05/2002	केतु	03/01/2003	सूर्य	25/07/2003	चंद्र	14/12/2003

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
14/12/2003		13/12/2004		03/11/2005		24/11/2006		04/11/2007	
13/12/2004		03/11/2005		24/11/2006		04/11/2007		25/03/2008	
राहु	07/02/2004	गुरु	26/01/2005	शनि	03/01/2006	बुध	12/01/2007	केतु	12/11/2007
गुरु	27/03/2004	शनि	18/03/2005	बुध	27/02/2006	केतु	01/02/2007	शुक्र	06/12/2007
शनि	24/05/2004	बुध	03/05/2005	केतु	21/03/2006	शुक्र	30/03/2007	सूर्य	13/12/2007
बुध	14/07/2004	केतु	22/05/2005	शुक्र	25/05/2006	सूर्य	16/04/2007	चंद्र	25/12/2007
केतु	05/08/2004	शुक्र	15/07/2005	सूर्य	13/06/2006	चंद्र	15/05/2007	मंगल	02/01/2008
शुक्र	04/10/2004	सूर्य	31/07/2005	चंद्र	15/07/2006	मंगल	04/06/2007	राहु	23/01/2008
सूर्य	23/10/2004	चंद्र	28/08/2005	मंगल	06/08/2006	राहु	26/07/2007	गुरु	11/02/2008
चंद्र	22/11/2004	मंगल	15/09/2005	राहु	03/10/2006	गुरु	10/09/2007	शनि	05/03/2008
मंगल	13/12/2004	राहु	03/11/2005	गुरु	24/11/2006	शनि	04/11/2007	बुध	25/03/2008

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
25/03/2008		05/05/2009		03/09/2009		12/12/2009		24/08/2010	
05/05/2009		03/09/2009		12/12/2009		24/08/2010		09/04/2011	
शुक्र	31/05/2008	सूर्य	11/05/2009	मंगल	09/09/2009	राहु	19/01/2010	गुरु	24/09/2010
सूर्य	21/06/2008	चंद्र	21/05/2009	राहु	24/09/2009	गुरु	22/02/2010	शनि	30/10/2010
चंद्र	24/07/2008	मंगल	28/05/2009	गुरु	07/10/2009	शनि	04/04/2010	बुध	01/12/2010
मंगल	17/08/2008	राहु	15/06/2009	शनि	23/10/2009	बुध	10/05/2010	केतु	14/12/2010
राहु	17/10/2008	गुरु	01/07/2009	बुध	06/11/2009	केतु	25/05/2010	शुक्र	21/01/2011
गुरु	10/12/2008	शनि	21/07/2009	केतु	12/11/2009	शुक्र	06/07/2010	सूर्य	01/02/2011
शनि	12/02/2009	बुध	07/08/2009	शुक्र	28/11/2009	सूर्य	19/07/2010	चंद्र	20/02/2011
बुध	11/04/2009	केतु	14/08/2009	सूर्य	03/12/2009	चंद्र	09/08/2010	मंगल	06/03/2011
केतु	05/05/2009	शुक्र	03/09/2009	चंद्र	12/12/2009	मंगल	24/08/2010	राहु	09/04/2011

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
09/04/2011		04/01/2012		01/09/2012		09/12/2012		20/09/2013	
04/01/2012		01/09/2012		09/12/2012		20/09/2013		14/12/2013	
शनि	21/05/2011	बुध	07/02/2012	केतु	07/09/2012	शुक्र	26/01/2013	सूर्य	24/09/2013
बुध	29/06/2011	केतु	21/02/2012	शुक्र	23/09/2012	सूर्य	09/02/2013	चंद्र	01/10/2013
केतु	14/07/2011	शुक्र	01/04/2012	सूर्य	28/09/2012	चंद्र	05/03/2013	मंगल	06/10/2013
शुक्र	28/08/2011	सूर्य	13/04/2012	चंद्र	07/10/2012	मंगल	21/03/2013	राहु	19/10/2013
सूर्य	11/09/2011	चंद्र	03/05/2012	मंगल	12/10/2012	राहु	03/05/2013	गुरु	30/10/2013
चंद्र	03/10/2011	मंगल	17/05/2012	राहु	27/10/2012	गुरु	10/06/2013	शनि	12/11/2013
मंगल	19/10/2011	राहु	23/06/2012	गुरु	10/11/2012	शनि	25/07/2013	बुध	25/11/2013
राहु	29/11/2011	गुरु	25/07/2012	शनि	25/11/2012	बुध	03/09/2013	केतु	30/11/2013
गुरु	04/01/2012	शनि	01/09/2012	बुध	09/12/2012	केतु	20/09/2013	शुक्र	14/12/2013

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
14/12/2013		05/05/2014		21/02/2016		28/09/2017		23/08/2019	
05/05/2014		21/02/2016		28/09/2017		23/08/2019		05/05/2021	
चंद्र	26/12/2013	राहु	11/08/2014	गुरु	09/05/2016	शनि	16/01/2018	बुध	19/11/2019
मंगल	03/01/2014	गुरु	07/11/2014	शनि	10/08/2016	बुध	24/04/2018	केतु	25/12/2019
राहु	24/01/2014	शनि	19/02/2015	बुध	31/10/2016	केतु	03/06/2018	शुक्र	06/04/2020
गुरु	12/02/2014	बुध	23/05/2015	केतु	05/12/2016	शुक्र	27/09/2018	सूर्य	07/05/2020
शनि	07/03/2014	केतु	01/07/2015	शुक्र	12/03/2017	सूर्य	01/11/2018	चंद्र	28/06/2020
बुध	27/03/2014	शुक्र	18/10/2015	सूर्य	10/04/2017	चंद्र	29/12/2018	मंगल	03/08/2020
केतु	04/04/2014	सूर्य	20/11/2015	चंद्र	29/05/2017	मंगल	07/02/2019	राहु	04/11/2020
शुक्र	28/04/2014	चंद्र	14/01/2016	मंगल	02/07/2017	राहु	22/05/2019	गुरु	26/01/2021
सूर्य	05/05/2014	मंगल	21/02/2016	राहु	28/09/2017	गुरु	23/08/2019	शनि	05/05/2021

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
05/05/2021		15/01/2022		16/01/2024		22/08/2024		22/08/2025	
15/01/2022		16/01/2024		22/08/2024		22/08/2025		05/05/2026	
केतु	19/05/2021	शुक्र	17/05/2022	सूर्य	27/01/2024	चंद्र	21/09/2024	मंगल	06/09/2025
शुक्र	01/07/2021	सूर्य	22/06/2022	चंद्र	14/02/2024	मंगल	13/10/2024	राहु	14/10/2025
सूर्य	14/07/2021	चंद्र	22/08/2022	मंगल	27/02/2024	राहु	06/12/2024	गुरु	17/11/2025
चंद्र	04/08/2021	मंगल	04/10/2022	राहु	31/03/2024	गुरु	24/01/2025	शनि	28/12/2025
मंगल	19/08/2021	राहु	22/01/2023	गुरु	29/04/2024	शनि	23/03/2025	बुध	02/02/2026
राहु	26/09/2021	गुरु	29/04/2023	शनि	03/06/2024	बुध	14/05/2025	केतु	17/02/2026
गुरु	31/10/2021	शनि	23/08/2023	बुध	04/07/2024	केतु	04/06/2025	शुक्र	01/04/2026
शनि	10/12/2021	बुध	04/12/2023	केतु	16/07/2024	शुक्र	04/08/2025	सूर्य	13/04/2026
बुध	15/01/2022	केतु	16/01/2024	शुक्र	22/08/2024	सूर्य	22/08/2025	चंद्र	05/05/2026

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
05/05/2026		06/10/2027		14/06/2029		18/12/2030		02/08/2031	
06/10/2027		14/06/2029		18/12/2030		02/08/2031		13/05/2033	
गुरु	13/07/2026	शनि	12/01/2028	बुध	31/08/2029	केतु	31/12/2030	शुक्र	19/11/2031
शनि	03/10/2026	बुध	08/04/2028	केतु	03/10/2029	शुक्र	07/02/2031	सूर्य	21/12/2031
बुध	16/12/2026	केतु	14/05/2028	शुक्र	02/01/2030	सूर्य	19/02/2031	चंद्र	13/02/2032
केतु	15/01/2027	शुक्र	25/08/2028	सूर्य	30/01/2030	चंद्र	09/03/2031	मंगल	22/03/2032
शुक्र	12/04/2027	सूर्य	25/09/2028	चंद्र	17/03/2030	मंगल	23/03/2031	राहु	27/06/2032
सूर्य	08/05/2027	चंद्र	15/11/2028	मंगल	18/04/2030	राहु	26/04/2031	गुरु	22/09/2032
चंद्र	20/06/2027	मंगल	21/12/2028	राहु	10/07/2030	गुरु	26/05/2031	शनि	03/01/2033
मंगल	20/07/2027	राहु	24/03/2029	गुरु	22/09/2030	शनि	01/07/2031	बुध	05/04/2033
राहु	06/10/2027	गुरु	14/06/2029	शनि	18/12/2030	बुध	02/08/2031	केतु	13/05/2033

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
13/05/2033		23/11/2033		14/10/2034		29/05/2035		03/01/2037	
23/11/2033		14/10/2034		29/05/2035		03/01/2037		05/01/2039	
सूर्य	22/05/2033	चंद्र	21/12/2033	मंगल	27/10/2034	राहु	25/08/2035	शनि	29/04/2037
चंद्र	08/06/2033	मंगल	08/01/2034	राहु	30/11/2034	गुरु	11/11/2035	बुध	11/08/2037
मंगल	19/06/2033	राहु	26/02/2034	गुरु	31/12/2034	शनि	11/02/2036	केतु	22/09/2037
राहु	18/07/2033	गुरु	10/04/2034	शनि	05/02/2035	बुध	04/05/2036	शुक्र	22/01/2038
गुरु	13/08/2033	शनि	01/06/2034	बुध	09/03/2035	केतु	07/06/2036	सूर्य	28/02/2038
शनि	13/09/2033	बुध	17/07/2034	केतु	22/03/2035	शुक्र	13/09/2036	चंद्र	30/04/2038
बुध	11/10/2033	केतु	05/08/2034	शुक्र	29/04/2035	सूर्य	12/10/2036	मंगल	12/06/2038
केतु	22/10/2033	शुक्र	28/09/2034	सूर्य	10/05/2035	चंद्र	30/11/2036	राहु	30/09/2038
शुक्र	23/11/2033	सूर्य	14/10/2034	चंद्र	29/05/2035	मंगल	03/01/2037	गुरु	05/01/2039

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
05/01/2039		22/10/2040		19/07/2041		29/08/2043		16/04/2044	
22/10/2040		19/07/2041		29/08/2043		16/04/2044		07/05/2045	
बुध	08/04/2039	केतु	06/11/2040	शुक्र	24/11/2041	सूर्य	09/09/2043	चंद्र	18/05/2044
केतु	16/05/2039	शुक्र	21/12/2040	सूर्य	02/01/2042	चंद्र	29/09/2043	मंगल	10/06/2044
शुक्र	03/09/2039	सूर्य	04/01/2041	चंद्र	07/03/2042	मंगल	12/10/2043	राहु	06/08/2044
सूर्य	05/10/2039	चंद्र	26/01/2041	मंगल	21/04/2042	राहु	16/11/2043	गुरु	27/09/2044
चंद्र	29/11/2039	मंगल	11/02/2041	राहु	15/08/2042	गुरु	17/12/2043	शनि	27/11/2044
मंगल	06/01/2040	राहु	24/03/2041	गुरु	25/11/2042	शनि	22/01/2044	बुध	21/01/2045
राहु	14/04/2040	गुरु	29/04/2041	शनि	27/03/2043	बुध	24/02/2044	केतु	12/02/2045
गुरु	10/07/2040	शनि	10/06/2041	बुध	15/07/2043	केतु	08/03/2044	शुक्र	17/04/2045
शनि	22/10/2040	बुध	19/07/2041	केतु	29/08/2043	शुक्र	16/04/2044	सूर्य	07/05/2045

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
07/05/2045		31/01/2046		26/12/2047		03/09/2049		13/04/2051	
31/01/2046		26/12/2047		03/09/2049		13/04/2051		10/12/2051	
मंगल	22/05/2045	राहु	16/05/2046	गुरु	18/03/2048	बुध	25/11/2049	केतु	27/04/2051
राहु	02/07/2045	गुरु	16/08/2046	शनि	23/06/2048	केतु	30/12/2049	शुक्र	06/06/2051
गुरु	07/08/2045	शनि	04/12/2046	बुध	19/09/2048	शुक्र	06/04/2050	सूर्य	18/06/2051
शनि	19/09/2045	बुध	12/03/2047	केतु	25/10/2048	सूर्य	06/05/2050	चंद्र	08/07/2051
बुध	27/10/2045	केतु	22/04/2047	शुक्र	05/02/2049	चंद्र	23/06/2050	मंगल	22/07/2051
केतु	11/11/2045	शुक्र	15/08/2047	सूर्य	07/03/2049	मंगल	28/07/2050	राहु	28/08/2051
शुक्र	26/12/2045	सूर्य	19/09/2047	चंद्र	28/04/2049	राहु	24/10/2050	गुरु	29/09/2051
सूर्य	09/01/2046	चंद्र	16/11/2047	मंगल	03/06/2049	गुरु	10/01/2051	शनि	06/11/2051
चंद्र	31/01/2046	मंगल	26/12/2047	राहु	03/09/2049	शनि	13/04/2051	बुध	10/12/2051

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 11 वर्ष 4 मास 8 दिन

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
07/09/1980		16/01/1992		16/01/2000		15/01/2017		16/01/2027	
16/01/1992		16/01/2000		15/01/2017		16/01/2027		16/01/2046	
	00/00/0000	मंगल	20/08/1992	बुध	20/09/2002	शनि	20/12/2017	गुरु	21/05/2030
	07/09/1980	बुध	23/11/1993	शनि	16/04/2004	गुरु	23/09/2019	राहु	30/06/2032
बुध	07/08/1982	शनि	20/08/1994	गुरु	14/04/2007	राहु	02/11/2020	शुक्र	10/03/2036
शनि	27/12/1983	गुरु	16/01/1996	राहु	04/03/2009	शुक्र	13/10/2022	सूर्य	31/03/2037
गुरु	17/08/1986	राहु	06/12/1996	शुक्र	23/06/2012	सूर्य	04/05/2023	चंद्र	20/11/2039
राहु	16/04/1988	शुक्र	27/06/1998	सूर्य	03/06/2013	चंद्र	22/09/2024	मंगल	17/04/2041
शुक्र	18/03/1991	सूर्य	06/12/1998	चंद्र	13/10/2015	मंगल	20/06/2025	बुध	13/04/2044
सूर्य	16/01/1992	चंद्र	16/01/2000	मंगल	15/01/2017	बुध	16/01/2027	शनि	16/01/2046

राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
16/01/2046		16/01/2058		16/01/2079		15/01/2085	
16/01/2058		16/01/2079		15/01/2085		00/00/0000	
राहु	18/05/2047	शुक्र	15/02/2062	सूर्य	18/05/2079	चंद्र	15/02/2087
शुक्र	16/09/2049	सूर्य	17/04/2063	चंद्र	17/03/2080	मंगल	27/03/2088
सूर्य	17/05/2050	चंद्र	18/03/2066	मंगल	26/08/2080	बुध	07/09/2088
चंद्र	16/01/2052	मंगल	07/10/2067	बुध	06/08/2081		00/00/0000
मंगल	06/12/2052	बुध	26/01/2071	शनि	25/02/2082		00/00/0000
बुध	27/10/2054	शनि	05/01/2073	गुरु	18/03/2083		00/00/0000
शनि	07/12/2055	गुरु	16/09/2076	राहु	16/11/2083		00/00/0000
गुरु	16/01/2058	राहु	16/01/2079	शुक्र	15/01/2085		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र	
07/09/1980		07/08/1982		27/12/1983		17/08/1986		16/04/1988	
07/08/1982		27/12/1983		17/08/1986		16/04/1988		18/03/1991	
	07/09/1980	शनि	23/09/1982	गुरु	13/06/1984	राहु	23/10/1986	शुक्र	10/11/1988
शनि	29/10/1980	गुरु	21/12/1982	राहु	29/09/1984	शुक्र	19/02/1987	सूर्य	08/01/1989
गुरु	30/03/1981	राहु	15/02/1983	शुक्र	04/04/1985	सूर्य	25/03/1987	चंद्र	05/06/1989
राहु	03/07/1981	शुक्र	25/05/1983	सूर्य	27/05/1985	चंद्र	17/06/1987	मंगल	23/08/1989
शुक्र	18/12/1981	सूर्य	22/06/1983	चंद्र	08/10/1985	मंगल	01/08/1987	बुध	06/02/1990
सूर्य	04/02/1982	चंद्र	31/08/1983	मंगल	19/12/1985	बुध	05/11/1987	शनि	16/05/1990
चंद्र	04/06/1982	मंगल	08/10/1983	बुध	19/05/1986	शनि	31/12/1987	गुरु	19/11/1990
मंगल	07/08/1982	बुध	27/12/1983	शनि	17/08/1986	गुरु	16/04/1988	राहु	18/03/1991

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु	
18/03/1991		16/01/1992		20/08/1992		23/11/1993		20/08/1994	
16/01/1992		20/08/1992		23/11/1993		20/08/1994		16/01/1996	
सूर्य	04/04/1991	मंगल	01/02/1992	बुध	31/10/1992	शनि	18/12/1993	गुरु	19/11/1994
चंद्र	16/05/1991	बुध	06/03/1992	शनि	13/12/1992	गुरु	03/02/1994	राहु	15/01/1995
मंगल	08/06/1991	शनि	26/03/1992	गुरु	04/03/1993	राहु	05/03/1994	शुक्र	25/04/1995
बुध	25/07/1991	गुरु	03/05/1992	राहु	24/04/1993	शुक्र	27/04/1994	सूर्य	23/05/1995
शनि	23/08/1991	राहु	27/05/1992	शुक्र	22/07/1993	सूर्य	12/05/1994	चंद्र	03/08/1995
गुरु	15/10/1991	शुक्र	09/07/1992	सूर्य	17/08/1993	चंद्र	18/06/1994	मंगल	10/09/1995
राहु	18/11/1991	सूर्य	21/07/1992	चंद्र	19/10/1993	मंगल	09/07/1994	बुध	30/11/1995
शुक्र	16/01/1992	चंद्र	20/08/1992	मंगल	23/11/1993	बुध	20/08/1994	शनि	16/01/1996

मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध	
16/01/1996		06/12/1996		27/06/1998		06/12/1998		16/01/2000	
06/12/1996		27/06/1998		06/12/1998		16/01/2000		20/09/2002	
राहु	21/02/1996	शुक्र	26/03/1997	सूर्य	06/07/1998	चंद्र	01/02/1999	बुध	18/06/2000
शुक्र	24/04/1996	सूर्य	27/04/1997	चंद्र	29/07/1998	मंगल	03/03/1999	शनि	17/09/2000
सूर्य	12/05/1996	चंद्र	15/07/1997	मंगल	10/08/1998	बुध	06/05/1999	गुरु	07/03/2001
चंद्र	26/06/1996	मंगल	26/08/1997	बुध	04/09/1998	शनि	12/06/1999	राहु	24/06/2001
मंगल	21/07/1996	बुध	23/11/1997	शनि	19/09/1998	गुरु	23/08/1999	शुक्र	31/12/2001
बुध	10/09/1996	शनि	15/01/1998	गुरु	18/10/1998	राहु	07/10/1999	सूर्य	23/02/2002
शनि	10/10/1996	गुरु	25/04/1998	राहु	05/11/1998	शुक्र	25/12/1999	चंद्र	09/07/2002
गुरु	06/12/1996	राहु	27/06/1998	शुक्र	06/12/1998	सूर्य	16/01/2000	मंगल	20/09/2002

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
20/09/2002		16/04/2004		14/04/2007		04/03/2009		23/06/2012	
16/04/2004		14/04/2007		04/03/2009		23/06/2012		03/06/2013	
शनि	12/11/2002	गुरु	26/10/2004	राहु	30/06/2007	शुक्र	25/10/2009	सूर्य	12/07/2012
गुरु	21/02/2003	राहु	24/02/2005	शुक्र	11/11/2007	सूर्य	31/12/2009	चंद्र	29/08/2012
राहु	26/04/2003	शुक्र	24/09/2005	सूर्य	19/12/2007	चंद्र	16/06/2010	मंगल	24/09/2012
शुक्र	16/08/2003	सूर्य	24/11/2005	चंद्र	24/03/2008	मंगल	14/09/2010	बुध	17/11/2012
सूर्य	17/09/2003	चंद्र	25/04/2006	मंगल	14/05/2008	बुध	23/03/2011	शनि	19/12/2012
चंद्र	05/12/2003	मंगल	15/07/2006	बुध	31/08/2008	शनि	13/07/2011	गुरु	18/02/2013
मंगल	17/01/2004	बुध	03/01/2007	शनि	02/11/2008	गुरु	10/02/2012	राहु	28/03/2013
बुध	16/04/2004	शनि	14/04/2007	गुरु	04/03/2009	राहु	23/06/2012	शुक्र	03/06/2013

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु	
03/06/2013		13/10/2015		15/01/2017		20/12/2017		23/09/2019	
13/10/2015		15/01/2017		20/12/2017		23/09/2019		02/11/2020	
चंद्र	01/10/2013	मंगल	17/11/2015	शनि	16/02/2017	गुरु	12/04/2018	राहु	07/11/2019
मंगल	04/12/2013	बुध	28/01/2016	गुरु	16/04/2017	राहु	22/06/2018	शुक्र	25/01/2020
बुध	18/04/2014	शनि	11/03/2016	राहु	24/05/2017	शुक्र	25/10/2018	सूर्य	17/02/2020
शनि	07/07/2014	गुरु	30/05/2016	शुक्र	29/07/2017	सूर्य	30/11/2018	चंद्र	13/04/2020
गुरु	06/12/2014	राहु	21/07/2016	सूर्य	16/08/2017	चंद्र	27/02/2019	मंगल	13/05/2020
राहु	12/03/2015	शुक्र	18/10/2016	चंद्र	02/10/2017	मंगल	16/04/2019	बुध	16/07/2020
शुक्र	27/08/2015	सूर्य	13/11/2016	मंगल	27/10/2017	बुध	26/07/2019	शनि	23/08/2020
सूर्य	13/10/2015	चंद्र	15/01/2017	बुध	20/12/2017	शनि	23/09/2019	गुरु	02/11/2020

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध	
02/11/2020		13/10/2022		04/05/2023		22/09/2024		20/06/2025	
13/10/2022		04/05/2023		22/09/2024		20/06/2025		16/01/2027	
शुक्र	20/03/2021	सूर्य	24/10/2022	चंद्र	14/07/2023	मंगल	12/10/2024	बुध	18/09/2025
सूर्य	29/04/2021	चंद्र	22/11/2022	मंगल	20/08/2023	बुध	24/11/2024	शनि	11/11/2025
चंद्र	05/08/2021	मंगल	07/12/2022	बुध	08/11/2023	शनि	19/12/2024	गुरु	20/02/2026
मंगल	27/09/2021	बुध	08/01/2023	शनि	25/12/2023	गुरु	05/02/2025	राहु	25/04/2026
बुध	17/01/2022	शनि	26/01/2023	गुरु	23/03/2024	राहु	07/03/2025	शुक्र	15/08/2026
शनि	23/03/2022	गुरु	03/03/2023	राहु	19/05/2024	शुक्र	28/04/2025	सूर्य	15/09/2026
गुरु	26/07/2022	राहु	26/03/2023	शुक्र	25/08/2024	सूर्य	13/05/2025	चंद्र	04/12/2026
राहु	13/10/2022	शुक्र	04/05/2023	सूर्य	22/09/2024	चंद्र	20/06/2025	मंगल	16/01/2027

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
16/01/2027		21/05/2030		30/06/2032		10/03/2036		31/03/2037	
21/05/2030		30/06/2032		10/03/2036		31/03/2037		20/11/2039	
गुरु	19/08/2027	राहु	14/08/2030	शुक्र	19/03/2033	सूर्य	01/04/2036	चंद्र	12/08/2037
राहु	01/01/2028	शुक्र	11/01/2031	सूर्य	02/06/2033	चंद्र	24/05/2036	मंगल	22/10/2037
शुक्र	26/08/2028	सूर्य	23/02/2031	चंद्र	07/12/2033	मंगल	22/06/2036	बुध	23/03/2038
सूर्य	02/11/2028	चंद्र	10/06/2031	मंगल	17/03/2034	बुध	21/08/2036	शनि	20/06/2038
चंद्र	20/04/2029	मंगल	06/08/2031	बुध	15/10/2034	शनि	26/09/2036	गुरु	07/12/2038
मंगल	20/07/2029	बुध	06/12/2031	शनि	17/02/2035	गुरु	03/12/2036	राहु	24/03/2039
बुध	28/01/2030	शनि	15/02/2032	गुरु	12/10/2035	राहु	15/01/2037	शुक्र	27/09/2039
शनि	21/05/2030	गुरु	30/06/2032	राहु	10/03/2036	शुक्र	31/03/2037	सूर्य	20/11/2039

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
20/11/2039		17/04/2041		13/04/2044		16/01/2046		18/05/2047	
17/04/2041		13/04/2044		16/01/2046		18/05/2047		16/09/2049	
मंगल	28/12/2039	बुध	06/10/2041	शनि	12/06/2044	राहु	11/03/2046	शुक्र	30/10/2047
बुध	18/03/2040	शनि	15/01/2042	गुरु	03/10/2044	शुक्र	13/06/2046	सूर्य	17/12/2047
शनि	04/05/2040	गुरु	26/07/2042	राहु	13/12/2044	सूर्य	11/07/2046	चंद्र	13/04/2048
गुरु	03/08/2040	राहु	24/11/2042	शुक्र	17/04/2045	चंद्र	16/09/2046	मंगल	15/06/2048
राहु	29/09/2040	शुक्र	25/06/2043	सूर्य	23/05/2045	मंगल	22/10/2046	बुध	27/10/2048
शुक्र	07/01/2041	सूर्य	24/08/2043	चंद्र	20/08/2045	बुध	07/01/2047	शनि	14/01/2049
सूर्य	04/02/2041	चंद्र	23/01/2044	मंगल	07/10/2045	शनि	21/02/2047	गुरु	13/06/2049
चंद्र	17/04/2041	मंगल	13/04/2044	बुध	16/01/2046	गुरु	18/05/2047	राहु	16/09/2049

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
16/09/2049		17/05/2050		16/01/2052		06/12/2052		27/10/2054	
17/05/2050		16/01/2052		06/12/2052		27/10/2054		07/12/2055	
सूर्य	29/09/2049	चंद्र	10/08/2050	मंगल	09/02/2052	बुध	24/03/2053	शनि	03/12/2054
चंद्र	02/11/2049	मंगल	24/09/2050	बुध	31/03/2052	शनि	27/05/2053	गुरु	13/02/2055
मंगल	20/11/2049	बुध	29/12/2050	शनि	30/04/2052	गुरु	26/09/2053	राहु	30/03/2055
बुध	29/12/2049	शनि	23/02/2051	गुरु	26/06/2052	राहु	11/12/2053	शुक्र	17/06/2055
शनि	20/01/2050	गुरु	10/06/2051	राहु	02/08/2052	शुक्र	24/04/2054	सूर्य	09/07/2055
गुरु	04/03/2050	राहु	17/08/2051	शुक्र	04/10/2052	सूर्य	02/06/2054	चंद्र	04/09/2055
राहु	31/03/2050	शुक्र	13/12/2051	सूर्य	22/10/2052	चंद्र	06/09/2054	मंगल	04/10/2055
शुक्र	17/05/2050	सूर्य	16/01/2052	चंद्र	06/12/2052	मंगल	27/10/2054	बुध	07/12/2055

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
07/12/2055		16/01/2058		15/02/2062		17/04/2063		18/03/2066	
16/01/2058		15/02/2062		17/04/2063		18/03/2066		07/10/2067	
गुरु	20/04/2056	शुक्र	02/11/2058	सूर्य	11/03/2062	चंद्र	12/09/2063	मंगल	29/04/2066
राहु	15/07/2056	सूर्य	24/01/2059	चंद्र	09/05/2062	मंगल	30/11/2063	बुध	27/07/2066
शुक्र	12/12/2056	चंद्र	19/08/2059	मंगल	10/06/2062	बुध	16/05/2064	शनि	18/09/2066
सूर्य	24/01/2057	मंगल	07/12/2059	बुध	16/08/2062	शनि	22/08/2064	गुरु	27/12/2066
चंद्र	11/05/2057	बुध	29/07/2060	शनि	24/09/2062	गुरु	26/02/2065	राहु	28/02/2067
मंगल	07/07/2057	शनि	14/12/2060	गुरु	08/12/2062	राहु	24/06/2065	शुक्र	18/06/2067
बुध	05/11/2057	गुरु	02/09/2061	राहु	24/01/2063	शुक्र	17/01/2066	सूर्य	20/07/2067
शनि	16/01/2058	राहु	15/02/2062	शुक्र	17/04/2063	सूर्य	18/03/2066	चंद्र	07/10/2067

शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य	
07/10/2067		26/01/2071		05/01/2073		16/09/2076		16/01/2079	
26/01/2071		05/01/2073		16/09/2076		16/01/2079		18/05/2079	
बुध	14/04/2068	शनि	02/04/2071	गुरु	31/08/2073	राहु	19/12/2076	सूर्य	23/01/2079
शनि	04/08/2068	गुरु	05/08/2071	राहु	28/01/2074	शुक्र	03/06/2077	चंद्र	09/02/2079
गुरु	04/03/2069	राहु	23/10/2071	शुक्र	17/10/2074	सूर्य	20/07/2077	मंगल	18/02/2079
राहु	16/07/2069	शुक्र	09/03/2072	सूर्य	31/12/2074	चंद्र	16/11/2077	बुध	09/03/2079
शुक्र	08/03/2070	सूर्य	17/04/2072	चंद्र	06/07/2075	मंगल	18/01/2078	शनि	20/03/2079
सूर्य	14/05/2070	चंद्र	25/07/2072	मंगल	14/10/2075	बुध	01/06/2078	गुरु	10/04/2079
चंद्र	29/10/2070	मंगल	15/09/2072	बुध	14/05/2076	शनि	19/08/2078	राहु	24/04/2079
मंगल	26/01/2071	बुध	05/01/2073	शनि	16/09/2076	गुरु	16/01/2079	शुक्र	18/05/2079

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु	
18/05/2079		17/03/2080		26/08/2080		06/08/2081		25/02/2082	
17/03/2080		26/08/2080		06/08/2081		25/02/2082		18/03/2083	
चंद्र	29/06/2079	मंगल	29/03/2080	बुध	20/10/2080	शनि	25/08/2081	गुरु	04/05/2082
मंगल	21/07/2079	बुध	24/04/2080	शनि	21/11/2080	गुरु	30/09/2081	राहु	16/06/2082
बुध	07/09/2079	शनि	09/05/2080	गुरु	20/01/2081	राहु	22/10/2081	शुक्र	30/08/2082
शनि	06/10/2079	गुरु	06/06/2080	राहु	28/02/2081	शुक्र	01/12/2081	सूर्य	20/09/2082
गुरु	28/11/2079	राहु	24/06/2080	शुक्र	06/05/2081	सूर्य	12/12/2081	चंद्र	13/11/2082
राहु	01/01/2080	शुक्र	26/07/2080	सूर्य	25/05/2081	चंद्र	09/01/2082	मंगल	11/12/2082
शुक्र	29/02/2080	सूर्य	04/08/2080	चंद्र	12/07/2081	मंगल	24/01/2082	बुध	10/02/2083
सूर्य	17/03/2080	चंद्र	26/08/2080	मंगल	06/08/2081	बुध	25/02/2082	शनि	18/03/2083

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भ्रामरी 0 वर्ष 1 मास 11 दिन

भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष
07/09/1980	19/10/1980	19/10/1985	19/10/1991	19/10/1998
19/10/1980	19/10/1985	19/10/1991	19/10/1998	19/10/2006
00/00/0000	भद्रि 29/06/1981	उल्क 19/10/1986	सिद्ध 28/02/1993	संक 30/07/2000
00/00/0000	उल्क 30/04/1982	सिद्ध 19/12/1987	संक 19/09/1994	मंग 19/10/2000
00/00/0000	सिद्ध 20/04/1983	संक 19/04/1989	मंग 29/11/1994	पिंग 30/03/2001
00/00/0000	संक 30/05/1984	मंग 19/06/1989	पिंग 20/04/1995	धांय 29/11/2001
00/00/0000	मंग 19/07/1984	पिंग 19/10/1989	धांय 19/11/1995	भ्राम 19/10/2002
00/00/0000	पिंग 29/10/1984	धांय 20/04/1990	भ्राम 29/08/1996	भद्रि 29/11/2003
07/09/1980	धांय 30/03/1985	भ्राम 19/12/1990	भद्रि 19/08/1997	उल्क 30/03/2005
धांय 19/10/1980	भ्राम 19/10/1985	भद्रि 19/10/1991	उल्क 19/10/1998	सिद्ध 19/10/2006

मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष
19/10/2006	19/10/2007	19/10/2009	19/10/2012	19/10/2016
19/10/2007	19/10/2009	19/10/2012	19/10/2016	19/10/2021
मंग 29/10/2006	पिंग 29/11/2007	धांय 18/01/2010	भ्राम 30/03/2013	भद्रि 29/06/2017
पिंग 19/11/2006	धांय 29/01/2008	भ्राम 20/05/2010	भद्रि 19/10/2013	उल्क 30/04/2018
धांय 19/12/2006	भ्राम 19/04/2008	भद्रि 19/10/2010	उल्क 19/06/2014	सिद्ध 20/04/2019
भ्राम 29/01/2007	भद्रि 30/07/2008	उल्क 20/04/2011	सिद्ध 31/03/2015	संक 30/05/2020
भद्रि 20/03/2007	उल्क 28/11/2008	सिद्ध 19/11/2011	संक 18/02/2016	मंग 19/07/2020
उल्क 20/05/2007	सिद्ध 19/04/2009	संक 19/07/2012	मंग 30/03/2016	पिंग 29/10/2020
सिद्ध 30/07/2007	संक 29/09/2009	मंग 19/08/2012	पिंग 19/06/2016	धांय 30/03/2021
संक 19/10/2007	मंग 19/10/2009	पिंग 19/10/2012	धांय 19/10/2016	भ्राम 19/10/2021

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष
19/10/2021	19/10/2027	19/10/2034	19/10/2042	19/10/2043
19/10/2027	19/10/2034	19/10/2042	19/10/2043	19/10/2045
उल्क 19/10/2022	सिद्ध 28/02/2029	संक 30/07/2036	मंग 29/10/2042	पिंग 29/11/2043
सिद्ध 19/12/2023	संक 19/09/2030	मंग 19/10/2036	पिंग 19/11/2042	धांय 29/01/2044
संक 19/04/2025	मंग 29/11/2030	पिंग 30/03/2037	धांय 19/12/2042	भ्राम 19/04/2044
मंग 19/06/2025	पिंग 20/04/2031	धांय 29/11/2037	भ्राम 29/01/2043	भद्रि 30/07/2044
पिंग 19/10/2025	धांय 19/11/2031	भ्राम 19/10/2038	भद्रि 20/03/2043	उल्क 28/11/2044
धांय 20/04/2026	भ्राम 29/08/2032	भद्रि 29/11/2039	उल्क 20/05/2043	सिद्ध 19/04/2045
भ्राम 19/12/2026	भद्रि 19/08/2033	उल्क 30/03/2041	सिद्ध 30/07/2043	संक 29/09/2045
भद्रि 19/10/2027	उल्क 19/10/2034	सिद्ध 19/10/2042	संक 19/10/2043	मंग 19/10/2045

धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
19/10/2045	19/10/2048	19/10/2052	19/10/2057	19/10/2063
19/10/2048	19/10/2052	19/10/2057	19/10/2063	19/10/2070
धांय 18/01/2046	भ्राम 30/03/2049	भद्रि 29/06/2053	उल्क 19/10/2058	सिद्ध 28/02/2065
भ्राम 20/05/2046	भद्रि 19/10/2049	उल्क 30/04/2054	सिद्ध 19/12/2059	संक 19/09/2066
भद्रि 19/10/2046	उल्क 19/06/2050	सिद्ध 20/04/2055	संक 19/04/2061	मंग 29/11/2066
उल्क 20/04/2047	सिद्ध 31/03/2051	संक 30/05/2056	मंग 19/06/2061	पिंग 20/04/2067
सिद्ध 19/11/2047	संक 18/02/2052	मंग 19/07/2056	पिंग 19/10/2061	धांय 19/11/2067
संक 19/07/2048	मंग 30/03/2052	पिंग 29/10/2056	धांय 20/04/2062	भ्राम 29/08/2068
मंग 19/08/2048	पिंग 19/06/2052	धांय 30/03/2057	भ्राम 19/12/2062	भद्रि 19/08/2069
पिंग 19/10/2048	धांय 19/10/2052	भ्राम 19/10/2057	भद्रि 19/10/2063	उल्क 19/10/2070

संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष
19/10/2070	19/10/2078	19/10/2079	19/10/2081	19/10/2084
19/10/2078	19/10/2079	19/10/2081	19/10/2084	07/09/2088
संक 30/07/2072	मंग 29/10/2078	पिंग 29/11/2079	धांय 18/01/2082	भ्राम 30/03/2085
मंग 19/10/2072	पिंग 19/11/2078	धांय 29/01/2080	भ्राम 20/05/2082	भद्रि 19/10/2085
पिंग 30/03/2073	धांय 19/12/2078	भ्राम 19/04/2080	भद्रि 19/10/2082	उल्क 19/06/2086
धांय 29/11/2073	भ्राम 29/01/2079	भद्रि 30/07/2080	उल्क 20/04/2083	सिद्ध 31/03/2087
भ्राम 19/10/2074	भद्रि 20/03/2079	उल्क 28/11/2080	सिद्ध 19/11/2083	संक 18/02/2088
भद्रि 29/11/2075	उल्क 20/05/2079	सिद्ध 19/04/2081	संक 19/07/2084	मंग 30/03/2088
उल्क 30/03/2077	सिद्ध 30/07/2079	संक 29/09/2081	मंग 19/08/2084	पिंग 19/06/2088
सिद्ध 19/10/2078	संक 19/10/2079	मंग 19/10/2081	पिंग 19/10/2084	धांय 07/09/2088

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - पिंग	उल्क - धांय	उल्क - भ्राम	उल्क - भद्रि	सिद्ध - सिद्ध
19/06/2025	19/10/2025	20/04/2026	19/12/2026	19/10/2027
19/10/2025	20/04/2026	19/12/2026	19/10/2027	28/02/2029
पिंग 26/06/2025	धांय 03/11/2025	भ्राम 17/05/2026	भद्रि 30/01/2027	सिद्ध 24/01/2028
धांय 06/07/2025	भ्राम 23/11/2025	भद्रि 19/06/2026	उल्क 22/03/2027	संक 14/05/2028
भ्राम 20/07/2025	भद्रि 19/12/2025	उल्क 30/07/2026	सिद्ध 20/05/2027	मंग 27/05/2028
भद्रि 06/08/2025	उल्क 18/01/2026	सिद्ध 15/09/2026	संक 27/07/2027	पिंग 24/06/2028
उल्क 26/08/2025	सिद्ध 23/02/2026	संक 08/11/2026	मंग 04/08/2027	धांय 04/08/2028
सिद्ध 19/09/2025	संक 04/04/2026	मंग 15/11/2026	पिंग 21/08/2027	भ्राम 29/09/2028
संक 16/10/2025	मंग 09/04/2026	पिंग 29/11/2026	धांय 16/09/2027	भद्रि 07/12/2028
मंग 19/10/2025	पिंग 20/04/2026	धांय 19/12/2026	भ्राम 19/10/2027	उल्क 28/02/2029

सिद्ध - संक	सिद्ध - मंग	सिद्ध - पिंग	सिद्ध - धांय	सिद्ध - भ्राम
28/02/2029	19/09/2030	29/11/2030	20/04/2031	19/11/2031
19/09/2030	29/11/2030	20/04/2031	19/11/2031	29/08/2032
संक 04/07/2029	मंग 21/09/2030	पिंग 07/12/2030	धांय 08/05/2031	भ्राम 20/12/2031
मंग 20/07/2029	पिंग 25/09/2030	धांय 19/12/2030	भ्राम 31/05/2031	भद्रि 29/01/2032
पिंग 20/08/2029	धांय 01/10/2030	भ्राम 03/01/2031	भद्रि 30/06/2031	उल्क 16/03/2032
धांय 07/10/2029	भ्राम 08/10/2030	भद्रि 23/01/2031	उल्क 04/08/2031	सिद्ध 10/05/2032
भ्राम 09/12/2029	भद्रि 18/10/2030	उल्क 16/02/2031	सिद्ध 15/09/2031	संक 13/07/2032
भद्रि 26/02/2030	उल्क 30/10/2030	सिद्ध 15/03/2031	संक 01/11/2031	मंग 21/07/2032
उल्क 31/05/2030	सिद्ध 13/11/2030	संक 16/04/2031	मंग 07/11/2031	पिंग 05/08/2032
सिद्ध 19/09/2030	संक 29/11/2030	मंग 20/04/2031	पिंग 19/11/2031	धांय 29/08/2032

सिद्ध - भद्रि	सिद्ध - उल्क	संक - संक	संक - मंग	संक - पिंग
29/08/2032	19/08/2033	19/10/2034	30/07/2036	19/10/2036
19/08/2033	19/10/2034	30/07/2036	19/10/2036	30/03/2037
भद्रि 17/10/2032	उल्क 29/10/2033	संक 12/03/2035	मंग 01/08/2036	पिंग 28/10/2036
उल्क 15/12/2032	सिद्ध 20/01/2034	मंग 31/03/2035	पिंग 05/08/2036	धांय 10/11/2036
सिद्ध 23/02/2033	संक 25/04/2034	पिंग 06/05/2035	धांय 12/08/2036	भ्राम 28/11/2036
संक 12/05/2033	मंग 06/05/2034	धांय 29/06/2035	भ्राम 21/08/2036	भद्रि 21/12/2036
मंग 22/05/2033	पिंग 30/05/2034	भ्राम 09/09/2035	भद्रि 01/09/2036	उल्क 17/01/2037
पिंग 11/06/2033	धांय 05/07/2034	भद्रि 08/12/2035	उल्क 15/09/2036	सिद्ध 17/02/2037
धांय 11/07/2033	भ्राम 21/08/2034	उल्क 25/03/2036	सिद्ध 01/10/2036	संक 26/03/2037
भ्राम 19/08/2033	भद्रि 19/10/2034	सिद्ध 30/07/2036	संक 19/10/2036	मंग 30/03/2037

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - धांय	संक - भ्राम	संक - भद्रि	संक - उल्क	संक - सिद्ध
30/03/2037	29/11/2037	19/10/2038	29/11/2039	30/03/2041
29/11/2037	19/10/2038	29/11/2039	30/03/2041	19/10/2042
धांय 19/04/2037	भ्राम 04/01/2038	भद्रि 15/12/2038	उल्क 18/02/2040	सिद्ध 19/07/2041
भ्राम 16/05/2037	भद्रि 18/02/2038	उल्क 20/02/2039	सिद्ध 23/05/2040	संक 22/11/2041
भद्रि 19/06/2037	उल्क 13/04/2038	सिद्ध 10/05/2039	संक 08/09/2040	मंग 08/12/2041
उल्क 30/07/2037	सिद्ध 15/06/2038	संक 08/08/2039	मंग 22/09/2040	पिंग 08/01/2042
सिद्ध 15/09/2037	संक 26/08/2038	मंग 20/08/2039	पिंग 19/10/2040	धांय 24/02/2042
संक 08/11/2037	मंग 04/09/2038	पिंग 11/09/2039	धांय 28/11/2040	भ्राम 29/04/2042
मंग 15/11/2037	पिंग 22/09/2038	धांय 15/10/2039	भ्राम 21/01/2041	भद्रि 17/07/2042
पिंग 29/11/2037	धांय 19/10/2038	भ्राम 29/11/2039	भद्रि 30/03/2041	उल्क 19/10/2042

मंग - मंग	मंग - पिंग	मंग - धांय	मंग - भ्राम	मंग - भद्रि
19/10/2042	29/10/2042	19/11/2042	19/12/2042	29/01/2043
29/10/2042	19/11/2042	19/12/2042	29/01/2043	20/03/2043
मंग 19/10/2042	पिंग 30/10/2042	धांय 21/11/2042	भ्राम 24/12/2042	भद्रि 05/02/2043
पिंग 20/10/2042	धांय 01/11/2042	भ्राम 25/11/2042	भद्रि 29/12/2042	उल्क 13/02/2043
धांय 21/10/2042	भ्राम 03/11/2042	भद्रि 29/11/2042	उल्क 05/01/2043	सिद्ध 23/02/2043
भ्राम 22/10/2042	भद्रि 06/11/2042	उल्क 04/12/2042	सिद्ध 13/01/2043	संक 06/03/2043
भद्रि 23/10/2042	उल्क 10/11/2042	सिद्ध 10/12/2042	संक 22/01/2043	मंग 08/03/2043
उल्क 25/10/2042	सिद्ध 14/11/2042	संक 17/12/2042	मंग 23/01/2043	पिंग 11/03/2043
सिद्ध 27/10/2042	संक 18/11/2042	मंग 17/12/2042	पिंग 25/01/2043	धांय 15/03/2043
संक 29/10/2042	मंग 19/11/2042	पिंग 19/12/2042	धांय 29/01/2043	भ्राम 20/03/2043

मंग - उल्क	मंग - सिद्ध	मंग - संक	पिंग - पिंग	पिंग - धांय
20/03/2043	20/05/2043	30/07/2043	19/10/2043	29/11/2043
20/05/2043	30/07/2043	19/10/2043	29/11/2043	29/01/2044
उल्क 31/03/2043	सिद्ध 03/06/2043	संक 17/08/2043	पिंग 22/10/2043	धांय 04/12/2043
सिद्ध 11/04/2043	संक 19/06/2043	मंग 20/08/2043	धांय 25/10/2043	भ्राम 11/12/2043
संक 25/04/2043	मंग 21/06/2043	पिंग 24/08/2043	भ्राम 30/10/2043	भद्रि 19/12/2043
मंग 27/04/2043	पिंग 25/06/2043	धांय 31/08/2043	भद्रि 04/11/2043	उल्क 29/12/2043
पिंग 30/04/2043	धांय 01/07/2043	भ्राम 09/09/2043	उल्क 11/11/2043	सिद्ध 10/01/2044
धांय 05/05/2043	भ्राम 09/07/2043	भद्रि 20/09/2043	सिद्ध 19/11/2043	संक 24/01/2044
भ्राम 12/05/2043	भद्रि 18/07/2043	उल्क 04/10/2043	संक 28/11/2043	मंग 26/01/2044
भद्रि 20/05/2043	उल्क 30/07/2043	सिद्ध 19/10/2043	मंग 29/11/2043	पिंग 29/01/2044

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मीन 9 वर्ष 9 मास 8 दिन
कुल दशाकाल : 86 वर्ष
तिथि : आश्लेषा - 4 सव्य
देह : कर्क जीव : मीन

मीन 10 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
07/09/1980		16/06/1990		17/06/2011		16/06/2016		16/06/2025	
16/06/1990		17/06/2011		16/06/2016		16/06/2025		16/06/2041	
मीन	15/08/1981	कर्क	02/08/1995	सिंह	01/10/2011	कन्या	26/05/2017	तुला	07/06/2028
कर्क	23/01/1984	सिंह	21/10/1996	कन्या	09/04/2012	तुला	27/01/2019	वृश्चि	26/09/2029
सिंह	23/08/1984	कन्या	02/01/1999	तुला	15/03/2013	वृश्चि	22/10/2019	धनु	07/08/2031
कन्या	09/09/1985	तुला	29/11/2002	वृश्चि	10/08/2013	धनु	07/11/2020	मक	04/05/2032
तुला	21/07/1987	वृश्चि	14/08/2004	धनु	11/03/2014	मक	09/04/2021	कुंभ	31/01/2033
वृश्चि	13/05/1988	धनु	23/01/2007	मक	04/06/2014	कुंभ	09/09/2021	मीन	12/12/2034
धनु	12/07/1989	मक	15/01/2008	कुंभ	28/08/2014	मीन	26/09/2022	कर्क	08/11/2038
मक	29/12/1989	कुंभ	06/01/2009	मीन	28/03/2015	कर्क	07/12/2024	सिंह	14/10/2039
कुंभ	16/06/1990	मीन	17/06/2011	कर्क	16/06/2016	सिंह	16/06/2025	कन्या	16/06/2041

वृश्चिक 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष		मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष	
16/06/2041		16/06/2048		16/06/2058		16/06/2062		16/06/2066	
16/06/2048		16/06/2058		16/06/2062		16/06/2066		00/00/0000	
वृश्चि	10/01/2042	धनु	15/08/2049	मक	23/08/2058	कुंभ	23/08/2062	मीन	08/09/2066
धनु	04/11/2042	मक	31/01/2050	कुंभ	30/10/2058	मीन	09/02/2063		00/00/0000
मक	02/03/2043	कुंभ	20/07/2050	मीन	18/04/2059	कर्क	01/02/2064		00/00/0000
कुंभ	29/06/2043	मीन	18/09/2051	कर्क	09/04/2060	सिंह	26/04/2064		00/00/0000
मीन	22/04/2044	कर्क	26/02/2054	सिंह	03/07/2060	कन्या	26/09/2064		00/00/0000
कर्क	06/01/2046	सिंह	26/09/2054	कन्या	03/12/2060	तुला	25/06/2065		00/00/0000
सिंह	04/06/2046	कन्या	14/10/2055	तुला	01/09/2061	वृश्चि	22/10/2065		00/00/0000
कन्या	26/02/2047	तुला	23/08/2057	वृश्चि	29/12/2061	धनु	09/04/2066		00/00/0000
तुला	16/06/2048	वृश्चि	16/06/2058	धनु	16/06/2062	मक	16/06/2066		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - तुला		तुला - वृश्चि		तुला - धनु		तुला - मक		तुला - कुंभ	
16/06/2025		07/06/2028		26/09/2029		07/08/2031		04/05/2032	
07/06/2028		26/09/2029		07/08/2031		04/05/2032		31/01/2033	
तुला	04/01/2026	वृश्चि	16/07/2028	धनु	14/12/2029	मक	19/08/2031	कुंभ	17/05/2032
वृश्चि	03/04/2026	धनु	09/09/2028	मक	15/01/2030	कुंभ	01/09/2031	मीन	18/06/2032
धनु	07/08/2026	मक	02/10/2028	कुंभ	15/02/2030	मीन	02/10/2031	कर्क	23/08/2032
मक	27/09/2026	कुंभ	24/10/2028	मीन	05/05/2030	कर्क	08/12/2031	सिंह	08/09/2032
कुंभ	16/11/2026	मीन	18/12/2028	कर्क	18/10/2030	सिंह	24/12/2031	कन्या	06/10/2032
मीन	23/03/2027	कर्क	13/04/2029	सिंह	27/11/2030	कन्या	21/01/2032	तुला	26/11/2032
कर्क	13/12/2027	सिंह	11/05/2029	कन्या	06/02/2031	तुला	12/03/2032	वृश्चि	18/12/2032
सिंह	15/02/2028	कन्या	30/06/2029	तुला	12/06/2031	वृश्चि	03/04/2032	धनु	19/01/2033
कन्या	07/06/2028	तुला	26/09/2029	वृश्चि	07/08/2031	धनु	04/05/2032	मक	31/01/2033

तुला - मीन		तुला - कर्क		तुला - सिंह		तुला - कन्या		वृश्चि - वृश्चि	
31/01/2033		12/12/2034		08/11/2038		14/10/2039		16/06/2041	
12/12/2034		08/11/2038		14/10/2039		16/06/2041		10/01/2042	
मीन	20/04/2033	कर्क	25/11/2035	सिंह	28/11/2038	कन्या	17/12/2039	वृश्चि	03/07/2041
कर्क	03/10/2033	सिंह	16/02/2036	कन्या	02/01/2039	तुला	08/04/2040	धनु	27/07/2041
सिंह	12/11/2033	कन्या	15/07/2036	तुला	06/03/2039	वृश्चि	28/05/2040	मक	06/08/2041
कन्या	22/01/2034	तुला	06/04/2037	वृश्चि	03/04/2039	धनु	07/08/2040	कुंभ	16/08/2041
तुला	28/05/2034	वृश्चि	31/07/2037	धनु	12/05/2039	मक	05/09/2040	मीन	09/09/2041
वृश्चि	23/07/2034	धनु	13/01/2038	मक	28/05/2039	कुंभ	03/10/2040	कर्क	30/10/2041
धनु	10/10/2034	मक	20/03/2038	कुंभ	13/06/2039	मीन	13/12/2040	सिंह	11/11/2041
मक	10/11/2034	कुंभ	26/05/2038	मीन	23/07/2039	कर्क	12/05/2041	कन्या	03/12/2041
कुंभ	12/12/2034	मीन	08/11/2038	कर्क	14/10/2039	सिंह	16/06/2041	तुला	10/01/2042

वृश्चि - धनु		वृश्चि - मक		वृश्चि - कुंभ		वृश्चि - मीन		वृश्चि - कर्क	
10/01/2042		04/11/2042		02/03/2043		29/06/2043		22/04/2044	
04/11/2042		02/03/2043		29/06/2043		22/04/2044		06/01/2046	
धनु	14/02/2042	मक	09/11/2042	कुंभ	08/03/2043	मीन	03/08/2043	कर्क	21/09/2044
मक	28/02/2042	कुंभ	15/11/2042	मीन	22/03/2043	कर्क	15/10/2043	सिंह	27/10/2044
कुंभ	13/03/2042	मीन	28/11/2042	कर्क	20/04/2043	सिंह	01/11/2043	कन्या	01/01/2045
मीन	17/04/2042	कर्क	27/12/2042	सिंह	27/04/2043	कन्या	02/12/2043	तुला	27/04/2045
कर्क	29/06/2042	सिंह	03/01/2043	कन्या	09/05/2043	तुला	26/01/2044	वृश्चि	17/06/2045
सिंह	16/07/2042	कन्या	16/01/2043	तुला	31/05/2043	वृश्चि	19/02/2044	धनु	28/08/2045
कन्या	16/08/2042	तुला	07/02/2043	वृश्चि	10/06/2043	धनु	25/03/2044	मक	26/09/2045
तुला	10/10/2042	वृश्चि	17/02/2043	धनु	24/06/2043	मक	08/04/2044	कुंभ	25/10/2045
वृश्चि	04/11/2042	धनु	02/03/2043	मक	29/06/2043	कुंभ	22/04/2044	मीन	06/01/2046

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कन्या		वृश्चि - तुला		धनु - धनु		धनु - मक	
06/01/2046		04/06/2046		26/02/2047		16/06/2048		15/08/2049	
04/06/2046		26/02/2047		16/06/2048		15/08/2049		31/01/2050	
सिंह	15/01/2046	कन्या	02/07/2046	तुला	26/05/2047	धनु	04/08/2048	मक	23/08/2049
कन्या	30/01/2046	तुला	20/08/2046	वृश्चि	03/07/2047	मक	24/08/2048	कुंभ	30/08/2049
तुला	27/02/2046	वृश्चि	11/09/2046	धनु	28/08/2047	कुंभ	13/09/2048	मीन	19/09/2049
वृश्चि	11/03/2046	धनु	12/10/2046	मक	19/09/2047	मीन	01/11/2048	कर्क	31/10/2049
धनु	28/03/2046	मक	25/10/2046	कुंभ	11/10/2047	कर्क	13/02/2049	सिंह	10/11/2049
मक	04/04/2046	कुंभ	06/11/2046	मीन	05/12/2047	सिंह	10/03/2049	कन्या	27/11/2049
कुंभ	11/04/2046	मीन	07/12/2046	कर्क	30/03/2048	कन्या	23/04/2049	तुला	29/12/2049
मीन	28/04/2046	कर्क	11/02/2047	सिंह	27/04/2048	तुला	11/07/2049	वृश्चि	12/01/2050
कर्क	04/06/2046	सिंह	26/02/2047	कन्या	16/06/2048	वृश्चि	15/08/2049	धनु	31/01/2050

धनु - कुंभ		धनु - मीन		धनु - कर्क		धनु - सिंह		धनु - कन्या	
31/01/2050		20/07/2050		18/09/2051		26/02/2054		26/09/2054	
20/07/2050		18/09/2051		26/02/2054		26/09/2054		14/10/2055	
कुंभ	08/02/2050	मीन	08/09/2050	कर्क	23/04/2052	सिंह	10/03/2054	कन्या	05/11/2054
मीन	28/02/2050	कर्क	20/12/2050	सिंह	14/06/2052	कन्या	02/04/2054	तुला	15/01/2055
कर्क	11/04/2050	सिंह	14/01/2051	कन्या	15/09/2052	तुला	11/05/2054	वृश्चि	16/02/2055
सिंह	20/04/2050	कन्या	28/02/2051	तुला	28/02/2053	वृश्चि	28/05/2054	धनु	01/04/2055
कन्या	08/05/2050	तुला	18/05/2051	वृश्चि	12/05/2053	धनु	22/06/2054	मक	19/04/2055
तुला	09/06/2050	वृश्चि	21/06/2051	धनु	23/08/2053	मक	02/07/2054	कुंभ	07/05/2055
वृश्चि	23/06/2050	धनु	10/08/2051	मक	04/10/2053	कुंभ	12/07/2054	मीन	20/06/2055
धनु	12/07/2050	मक	29/08/2051	कुंभ	14/11/2053	मीन	05/08/2054	कर्क	21/09/2055
मक	20/07/2050	कुंभ	18/09/2051	मीन	26/02/2054	कर्क	26/09/2054	सिंह	14/10/2055

धनु - तुला		धनु - वृश्चि		मक - मक		मक - कुंभ		मक - मीन	
14/10/2055		23/08/2057		16/06/2058		23/08/2058		30/10/2058	
23/08/2057		16/06/2058		23/08/2058		30/10/2058		18/04/2059	
तुला	17/02/2056	वृश्चि	16/09/2057	मक	20/06/2058	कुंभ	27/08/2058	मीन	19/11/2058
वृश्चि	12/04/2056	धनु	21/10/2057	कुंभ	23/06/2058	मीन	03/09/2058	कर्क	31/12/2058
धनु	30/06/2056	मक	04/11/2057	मीन	01/07/2058	कर्क	20/09/2058	सिंह	09/01/2059
मक	01/08/2056	कुंभ	18/11/2057	कर्क	17/07/2058	सिंह	24/09/2058	कन्या	27/01/2059
कुंभ	02/09/2056	मीन	22/12/2057	सिंह	21/07/2058	कन्या	01/10/2058	तुला	28/02/2059
मीन	20/11/2056	कर्क	05/03/2058	कन्या	28/07/2058	तुला	14/10/2058	वृश्चि	14/03/2059
कर्क	04/05/2057	सिंह	22/03/2058	तुला	10/08/2058	वृश्चि	19/10/2058	धनु	02/04/2059
सिंह	13/06/2057	कन्या	22/04/2058	वृश्चि	15/08/2058	धनु	27/10/2058	मक	10/04/2059
कन्या	23/08/2057	तुला	16/06/2058	धनु	23/08/2058	मक	30/10/2058	कुंभ	18/04/2059

चर दशा

भोग्य दशा काल : मकर 4 वर्ष 0 मास 0 दिन

मकर 4 वर्ष	
07/09/1980	
07/09/1984	
धनु	07/01/1981
वृश्चि	09/05/1981
तुला	07/09/1981
कन्या	07/01/1982
सिंह	09/05/1982
कर्क	08/09/1982
मिथु	07/01/1983
वृष	09/05/1983
मेष	08/09/1983
मीन	08/01/1984
कुंभ	08/05/1984
मक	07/09/1984

धनु 8 वर्ष	
07/09/1984	
07/09/1992	
वृश्चि	09/05/1985
तुला	07/01/1986
कन्या	08/09/1986
सिंह	09/05/1987
कर्क	08/01/1988
मिथु	07/09/1988
वृष	09/05/1989
मेष	07/01/1990
मीन	08/09/1990
कुंभ	09/05/1991
मक	08/01/1992
धनु	07/09/1992

वृश्चिक 2 वर्ष	
07/09/1992	
08/09/1994	
तुला	07/11/1992
कन्या	07/01/1993
सिंह	09/03/1993
कर्क	09/05/1993
मिथु	09/07/1993
वृष	07/09/1993
मेष	07/11/1993
मीन	07/01/1994
कुंभ	09/03/1994
मक	09/05/1994
धनु	09/07/1994
वृश्चि	08/09/1994

तुला 9 वर्ष	
08/09/1994	
08/09/2003	
वृश्चि	09/06/1995
धनु	09/03/1996
मक	08/12/1996
कुंभ	07/09/1997
मीन	08/06/1998
मेष	09/03/1999
वृष	08/12/1999
मिथु	07/09/2000
कर्क	08/06/2001
सिंह	09/03/2002
कन्या	08/12/2002
तुला	08/09/2003

कन्या 12 वर्ष	
08/09/2003	
08/09/2015	
तुला	07/09/2004
वृश्चि	07/09/2005
धनु	08/09/2006
मक	08/09/2007
कुंभ	07/09/2008
मीन	07/09/2009
मेष	08/09/2010
वृष	08/09/2011
मिथु	07/09/2012
कर्क	07/09/2013
सिंह	08/09/2014
कन्या	08/09/2015

सिंह 12 वर्ष	
08/09/2015	
08/09/2027	
कन्या	07/09/2016
तुला	07/09/2017
वृश्चि	08/09/2018
धनु	08/09/2019
मक	07/09/2020
कुंभ	07/09/2021
मीन	08/09/2022
मेष	08/09/2023
वृष	07/09/2024
मिथु	07/09/2025
कर्क	08/09/2026
सिंह	08/09/2027

कर्क 12 वर्ष	
08/09/2027	
08/09/2039	
मिथु	07/09/2028
वृष	07/09/2029
मेष	08/09/2030
मीन	08/09/2031
कुंभ	07/09/2032
मक	07/09/2033
धनु	08/09/2034
वृश्चि	08/09/2035
तुला	07/09/2036
कन्या	07/09/2037
सिंह	08/09/2038
कर्क	08/09/2039

मिथुन 3 वर्ष	
08/09/2039	
08/09/2042	
वृष	08/12/2039
मेष	09/03/2040
मीन	08/06/2040
कुंभ	07/09/2040
मक	08/12/2040
धनु	09/03/2041
वृश्चि	08/06/2041
तुला	07/09/2041
कन्या	08/12/2041
सिंह	09/03/2042
कर्क	08/06/2042
मिथु	08/09/2042

वृष 2 वर्ष	
08/09/2042	
07/09/2044	
मेष	08/11/2042
मीन	07/01/2043
कुंभ	09/03/2043
मक	09/05/2043
धनु	09/07/2043
वृश्चि	08/09/2043
तुला	08/11/2043
कन्या	08/01/2044
सिंह	09/03/2044
कर्क	08/05/2044
मिथु	08/07/2044
वृष	07/09/2044

मेष 6 वर्ष	
07/09/2044	
08/09/2050	
वृष	09/03/2045
मिथु	07/09/2045
कर्क	09/03/2046
सिंह	08/09/2046
कन्या	09/03/2047
तुला	08/09/2047
वृश्चि	09/03/2048
धनु	07/09/2048
मक	09/03/2049
कुंभ	07/09/2049
मीन	09/03/2050
मेष	08/09/2050

मीन 7 वर्ष	
08/09/2050	
07/09/2057	
मेष	09/04/2051
वृष	08/11/2051
मिथु	08/06/2052
कर्क	07/01/2053
सिंह	08/08/2053
कन्या	09/03/2054
तुला	08/10/2054
वृश्चि	09/05/2055
धनु	08/12/2055
मक	08/07/2056
कुंभ	06/02/2057
मीन	07/09/2057

कुम्भ 7 वर्ष	
07/09/2057	
07/09/2064	
मीन	09/04/2058
मेष	08/11/2058
वृष	09/06/2059
मिथु	08/01/2060
कर्क	08/08/2060
सिंह	09/03/2061
कन्या	08/10/2061
तुला	09/05/2062
वृश्चि	08/12/2062
धनु	09/07/2063
मक	07/02/2064
कुंभ	07/09/2064

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - मिथु		सिंह - कर्क		सिंह - सिंह		कर्क - मिथु		कर्क - वृष	
07/09/2024		07/09/2025		08/09/2026		08/09/2027		07/09/2028	
07/09/2025		08/09/2026		08/09/2027		07/09/2028		07/09/2029	
वृष	08/10/2024	मिथु	08/10/2025	कन्या	08/10/2026	वृष	08/10/2027	मेष	08/10/2028
मेष	07/11/2024	वृष	07/11/2025	तुला	08/11/2026	मेष	08/11/2027	मीन	07/11/2028
मीन	08/12/2024	मेष	08/12/2025	वृश्चि	08/12/2026	मीन	08/12/2027	कुंभ	08/12/2028
कुंभ	07/01/2025	मीन	07/01/2026	धनु	07/01/2027	कुंभ	08/01/2028	मक	07/01/2029
मक	06/02/2025	कुंभ	07/02/2026	मक	07/02/2027	मक	07/02/2028	धनु	06/02/2029
धनु	09/03/2025	मक	09/03/2026	कुंभ	09/03/2027	धनु	09/03/2028	वृश्चि	09/03/2029
वृश्चि	08/04/2025	धनु	09/04/2026	मीन	09/04/2027	वृश्चि	08/04/2028	तुला	08/04/2029
तुला	09/05/2025	वृश्चि	09/05/2026	मेष	09/05/2027	तुला	08/05/2028	कन्या	09/05/2029
कन्या	08/06/2025	तुला	08/06/2026	वृष	09/06/2027	कन्या	08/06/2028	सिंह	08/06/2029
सिंह	09/07/2025	कन्या	09/07/2026	मिथु	09/07/2027	सिंह	08/07/2028	कर्क	09/07/2029
कर्क	08/08/2025	सिंह	08/08/2026	कर्क	09/08/2027	कर्क	08/08/2028	मिथु	08/08/2029
मिथु	07/09/2025	कर्क	08/09/2026	सिंह	08/09/2027	मिथु	07/09/2028	वृष	07/09/2029

कर्क - मेष		कर्क - मीन		कर्क - कुंभ		कर्क - मक		कर्क - धनु	
07/09/2029		08/09/2030		08/09/2031		07/09/2032		07/09/2033	
08/09/2030		08/09/2031		07/09/2032		07/09/2033		08/09/2034	
वृष	08/10/2029	मेष	08/10/2030	मीन	08/10/2031	धनु	08/10/2032	वृश्चि	08/10/2033
मिथु	07/11/2029	वृष	08/11/2030	मेष	08/11/2031	वृश्चि	07/11/2032	तुला	07/11/2033
कर्क	08/12/2029	मिथु	08/12/2030	वृष	08/12/2031	तुला	08/12/2032	कन्या	08/12/2033
सिंह	07/01/2030	कर्क	07/01/2031	मिथु	08/01/2032	कन्या	07/01/2033	सिंह	07/01/2034
कन्या	07/02/2030	सिंह	07/02/2031	कर्क	07/02/2032	सिंह	06/02/2033	कर्क	07/02/2034
तुला	09/03/2030	कन्या	09/03/2031	सिंह	09/03/2032	कर्क	09/03/2033	मिथु	09/03/2034
वृश्चि	09/04/2030	तुला	09/04/2031	कन्या	08/04/2032	मिथु	08/04/2033	वृष	09/04/2034
धनु	09/05/2030	वृश्चि	09/05/2031	तुला	08/05/2032	वृष	09/05/2033	मेष	09/05/2034
मक	08/06/2030	धनु	09/06/2031	वृश्चि	08/06/2032	मेष	08/06/2033	मीन	08/06/2034
कुंभ	09/07/2030	मक	09/07/2031	धनु	08/07/2032	मीन	09/07/2033	कुंभ	09/07/2034
मीन	08/08/2030	कुंभ	09/08/2031	मक	08/08/2032	कुंभ	08/08/2033	मक	08/08/2034
मेष	08/09/2030	मीन	08/09/2031	कुंभ	07/09/2032	मक	07/09/2033	धनु	08/09/2034

कर्क - वृश्चि		कर्क - तुला		कर्क - कन्या		कर्क - सिंह		कर्क - कर्क	
08/09/2034		08/09/2035		07/09/2036		07/09/2037		08/09/2038	
08/09/2035		07/09/2036		07/09/2037		08/09/2038		08/09/2039	
तुला	08/10/2034	वृश्चि	08/10/2035	तुला	08/10/2036	कन्या	08/10/2037	मिथु	08/10/2038
कन्या	08/11/2034	धनु	08/11/2035	वृश्चि	07/11/2036	तुला	07/11/2037	वृष	08/11/2038
सिंह	08/12/2034	मक	08/12/2035	धनु	08/12/2036	वृश्चि	08/12/2037	मेष	08/12/2038
कर्क	07/01/2035	कुंभ	08/01/2036	मक	07/01/2037	धनु	07/01/2038	मीन	07/01/2039
मिथु	07/02/2035	मीन	07/02/2036	कुंभ	06/02/2037	मक	07/02/2038	कुंभ	07/02/2039
वृष	09/03/2035	मेष	09/03/2036	मीन	09/03/2037	कुंभ	09/03/2038	मक	09/03/2039
मेष	09/04/2035	वृष	08/04/2036	मेष	08/04/2037	मीन	09/04/2038	धनु	09/04/2039
मीन	09/05/2035	मिथु	08/05/2036	वृष	09/05/2037	मेष	09/05/2038	वृश्चि	09/05/2039
कुंभ	09/06/2035	कर्क	08/06/2036	मिथु	08/06/2037	वृष	08/06/2038	तुला	09/06/2039
मक	09/07/2035	सिंह	08/07/2036	कर्क	09/07/2037	मिथु	09/07/2038	कन्या	09/07/2039
धनु	09/08/2035	कन्या	08/08/2036	सिंह	08/08/2037	कर्क	08/08/2038	सिंह	09/08/2039
वृश्चि	08/09/2035	तुला	07/09/2036	कन्या	07/09/2037	सिंह	08/09/2038	कर्क	08/09/2039

चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - वृष		मिथु - मेष		मिथु - मीन		मिथु - कुंभ		मिथु - मक	
08/09/2039		08/12/2039		09/03/2040		08/06/2040		07/09/2040	
08/12/2039		09/03/2040		08/06/2040		07/09/2040		08/12/2040	
मेष	16/09/2039	वृष	16/12/2039	मेष	16/03/2040	मीन	15/06/2040	धनु	15/09/2040
मीन	23/09/2039	मिथु	23/12/2039	वृष	24/03/2040	मेष	23/06/2040	वृश्चि	22/09/2040
कुंभ	01/10/2039	कर्क	31/12/2039	मिथु	31/03/2040	वृष	01/07/2040	तुला	30/09/2040
मक	08/10/2039	सिंह	08/01/2040	कर्क	08/04/2040	मिथु	08/07/2040	कन्या	08/10/2040
धनु	16/10/2039	कन्या	15/01/2040	सिंह	16/04/2040	कर्क	16/07/2040	सिंह	15/10/2040
वृश्चि	24/10/2039	तुला	23/01/2040	कन्या	23/04/2040	सिंह	24/07/2040	कर्क	23/10/2040
तुला	31/10/2039	वृश्चि	31/01/2040	तुला	01/05/2040	कन्या	31/07/2040	मिथु	30/10/2040
कन्या	08/11/2039	धनु	07/02/2040	वृश्चि	08/05/2040	तुला	08/08/2040	वृष	07/11/2040
सिंह	15/11/2039	मक	15/02/2040	धनु	16/05/2040	वृश्चि	15/08/2040	मेष	15/11/2040
कर्क	23/11/2039	कुंभ	22/02/2040	मक	24/05/2040	धनु	23/08/2040	मीन	22/11/2040
मिथु	01/12/2039	मीन	01/03/2040	कुंभ	31/05/2040	मक	31/08/2040	कुंभ	30/11/2040
वृष	08/12/2039	मेष	09/03/2040	मीन	08/06/2040	कुंभ	07/09/2040	मक	08/12/2040

मिथु - धनु		मिथु - वृश्चि		मिथु - तुला		मिथु - कन्या		मिथु - सिंह	
08/12/2040		09/03/2041		08/06/2041		07/09/2041		08/12/2041	
09/03/2041		08/06/2041		07/09/2041		08/12/2041		09/03/2042	
वृश्चि	15/12/2040	तुला	16/03/2041	वृश्चि	16/06/2041	तुला	15/09/2041	कन्या	15/12/2041
तुला	23/12/2040	कन्या	24/03/2041	धनु	23/06/2041	वृश्चि	23/09/2041	तुला	23/12/2041
कन्या	30/12/2040	सिंह	01/04/2041	मक	01/07/2041	धनु	30/09/2041	वृश्चि	31/12/2041
सिंह	07/01/2041	कर्क	08/04/2041	कुंभ	09/07/2041	मक	08/10/2041	धनु	07/01/2042
कर्क	15/01/2041	मिथु	16/04/2041	मीन	16/07/2041	कुंभ	15/10/2041	मक	15/01/2042
मिथु	22/01/2041	वृष	23/04/2041	मेष	24/07/2041	मीन	23/10/2041	कुंभ	22/01/2042
वृष	30/01/2041	मेष	01/05/2041	वृष	31/07/2041	मेष	31/10/2041	मीन	30/01/2042
मेष	06/02/2041	मीन	09/05/2041	मिथु	08/08/2041	वृष	07/11/2041	मेष	07/02/2042
मीन	14/02/2041	कुंभ	16/05/2041	कर्क	16/08/2041	मिथु	15/11/2041	वृष	14/02/2042
कुंभ	22/02/2041	मक	24/05/2041	सिंह	23/08/2041	कर्क	23/11/2041	मिथु	22/02/2042
मक	01/03/2041	धनु	01/06/2041	कन्या	31/08/2041	सिंह	30/11/2041	कर्क	01/03/2042
धनु	09/03/2041	वृश्चि	08/06/2041	तुला	07/09/2041	कन्या	08/12/2041	सिंह	09/03/2042

मिथु - कर्क		मिथु - मिथु		वृष - मेष		वृष - मीन		वृष - कुंभ	
09/03/2042		08/06/2042		08/09/2042		08/11/2042		07/01/2043	
08/06/2042		08/09/2042		08/11/2042		07/01/2043		09/03/2043	
मिथु	17/03/2042	वृष	16/06/2042	वृष	13/09/2042	मेष	13/11/2042	मीन	13/01/2043
वृष	24/03/2042	मेष	24/06/2042	मिथु	18/09/2042	वृष	18/11/2042	मेष	18/01/2043
मेष	01/04/2042	मीन	01/07/2042	कर्क	23/09/2042	मिथु	23/11/2042	वृष	23/01/2043
मीन	09/04/2042	कुंभ	09/07/2042	सिंह	28/09/2042	कर्क	28/11/2042	मिथु	28/01/2043
कुंभ	16/04/2042	मक	16/07/2042	कन्या	03/10/2042	सिंह	03/12/2042	कर्क	02/02/2043
मक	24/04/2042	धनु	24/07/2042	तुला	08/10/2042	कन्या	08/12/2042	सिंह	07/02/2043
धनु	01/05/2042	वृश्चि	01/08/2042	वृश्चि	13/10/2042	तुला	13/12/2042	कन्या	12/02/2043
वृश्चि	09/05/2042	तुला	08/08/2042	धनु	18/10/2042	वृश्चि	18/12/2042	तुला	17/02/2043
तुला	17/05/2042	कन्या	16/08/2042	मक	23/10/2042	धनु	23/12/2042	वृश्चि	22/02/2043
कन्या	24/05/2042	सिंह	23/08/2042	कुंभ	28/10/2042	मक	28/12/2042	धनु	27/02/2043
सिंह	01/06/2042	कर्क	31/08/2042	मीन	02/11/2042	कुंभ	02/01/2043	मक	04/03/2043
कर्क	08/06/2042	मिथु	08/09/2042	मेष	08/11/2042	मीन	07/01/2043	कुंभ	09/03/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, धन
हीरा	शुक्र	92%	दम्पति, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	89%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	80%	स्वास्थ्य, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	66%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, धनार्जन
मोती	चंद्र	53%	दम्पति
गोमेद	राहु	53%	दम्पति
माणिक्य	सूर्य	0%	दुर्घटना
पुखराज	गुरु	0%	दुर्घटना, व्यय, पराक्रम हानि

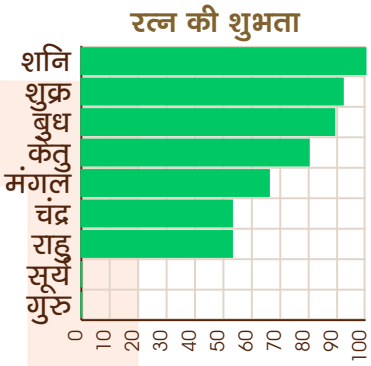

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	03/03/1981	0%	31%	66%	100%	0%	98%	100%	53%	80%
केतु	02/03/1988	0%	31%	72%	89%	0%	98%	92%	31%	92%
शुक्र	02/03/2008	0%	31%	66%	95%	0%	100%	100%	59%	86%
सूर्य	03/03/2014	0%	59%	72%	89%	0%	80%	92%	31%	67%
चंद्र	02/03/2024	0%	65%	66%	95%	0%	92%	100%	31%	67%
मंगल	03/03/2031	0%	59%	78%	77%	0%	92%	100%	31%	86%
राहु	03/03/2049	0%	31%	53%	89%	0%	98%	100%	66%	67%
गुरु	03/03/2065	0%	59%	72%	77%	0%	80%	100%	53%	80%
शनि	02/03/2084	0%	31%	53%	95%	0%	98%	100%	59%	67%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम, हीरा, पन्ना व लहसुनिया रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा व लहसुनिया रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मूंगा, मोती एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

माणिक्य व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत

विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि नवम भाव में स्थित है। आप शनि रत्न नीलम धारण करें। नीलम रत्न की शुभता से आपको भ्रमणशील और धर्मात्मा के गुणों से ओत प्रोत करेगा। रत्न शुभता से आप मृदुभाषी बनेंगे। तीर्थयात्राओं में भी आपकी अच्छी रुचि बनेगी। रत्न प्रभाव से आप आध्यात्म की ओर उन्मुख होंगे। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि करेगा। नीलम रत्न शुभता आपको तीर्थयात्राओं से सुख देगी। यह रत्न आपको बड़ी प्रसिद्धि देगा। नीलम रत्न आपको शिक्षक, वकील या ज्योतिषी के रूप में विख्यात कर सकता है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वितीयेश है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप शनि के सभी शुभफल प्राप्त कर सकते है। यह नीलम रत्न आपको स्वभाव, शरीर आरोग्यता, आयु, यश एवं प्रतिष्ठा दे सकता है। इस रत्न को धारण करने से आपके संचित धन में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से स्वास्थ्य शुभ, व्यक्तित्व उज्जवल, अचल संपत्ति, कुटुंब, उत्तम भोजन, पारिवारिक सुख, वाणी की मधुरता एवं आरम्भिक शिक्षा उत्तम हो सकती है। नीलम रत्न प्रभाव से आपके परिवार में बढ़ोतरी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण कर आप श्रेष्ठ व्यक्तियों से स्नेह करने वाले भाग्यवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप चंचल, विलासी और संगीत को पसंद करने वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप एक श्रेष्ठ कलाकार हो सकते हैं। गायन और अभिनय में आपकी रुचि जागृत करने में भी हीरा रत्न लाभदायक साबित हो सकता है। हीरा रत्न वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में उपयोगी रहेगा। रत्न शुभता से आपको विदेश यात्राओं अथवा दूर की यात्राओं के अवसर प्राप्त हो सकते है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं दशमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपको माता-पिता से सुख, शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि, भू-संपति

का सुख दिला सकता है। इस रत्न को धारण कर आप वाहन, राज्य व आजीविका क्षेत्र से शुभ फल प्राप्त हो सकते है। लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते है। यह रत्न पंचमेश का होने के कारण आपको विद्या, बुद्धि एवं संतान सुख को अनुकूल करने में सहयोग कर सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध नवम भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्मात्मा और भाग्यशाली बनाएगा। रत्न की शुभता से आप सदाचारी, धर्म को जानने वाले और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको अपने धर्म भाव पर अडिग रखेगा। पन्ना रत्न तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों जैसे यज्ञ आदि में आपकी अच्छी रुचि बनाएगा। बुद्धि प्रयोग से आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। यह रत्न ज्ञान, धन और यश से उज्ज्वल बनाएगा। बुध रत्न पन्ना आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। यह रत्न आपको वक्ता, संगीतज्ञ, संपादक, लेखक या ज्योतिषी बनने के गुण दे सकता है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व षष्ठेश है। बुध रत्न पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण कर आप अपने भाग्य को प्रगतिशील बना सकते है। धर्म, कर्म और आध्यात्मिक विषयों से सहज जुड़ सकते है। पन्ना रत्न धारण से आप शत्रुओं को बुद्धिमानी से परास्त कर पायेंगे। यह रत्न आपको यथायोग्य सम्मान दिलाएगा। रत्न शुभता से आपके बाधित कार्य फिर से बनने लगेंगे। पन्ना रत्न की शुभता से आप अपने ऋणों का समय पर भुगतान करने में सफल रहेंगे। दैनिक व्यवसाय की कठिनाईयां रत्न शुभता से दूर हो सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार

धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसूनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे है इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेंगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि नवम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृतज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। धन, यश, सुख और वाहनों का सुख प्रदान करेगा। मूंगा रत्न आपको महत्वाकांक्षी और दृढनिश्चयी व्यक्ति बनाएगा। मूंगा रत्न शुभता से बड़े पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न प्रभाव आपको इंजीनियरिंग क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति के अवसर दे सकता है। इसके अतिरिक्त यह मंगल आपको शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में कायर्रत पर

ओर अधिक अनुकूल सिद्ध हो सकता है। आजीविका क्षेत्र में आपकी नेतृत्व योग्यता का विकास करने में भी मूंगा रत्न शुभ दायक रहेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं एकादशेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर मंगल ग्रह की शुभता बढ़ा सकते है। मूंगा रत्न धारण कर आप सुख-सुविधाओं से युक्त हो सकते है। इसकी शुभता से आप घर एवं भूमि-भवन संपति के स्वामी बन सकते है। रत्न शुभता से आपको माता का स्नेह व संतोषी जीवन प्राप्त हो सकता है। मूंगा रत्न स्वयं अर्जित धन में उन्नति व सफलता दे सकता है। रत्न शुभता से आप लोभ से बचेंगे तथा आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के योग बन सकते है। मूंगा रत्न धारण से आप सफल व्यक्ति बन सकते है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न धारण से आपके स्वभाव की चंचलता की कमी होगी। यह रत्न आपकी नेतृत्त्व करने की क्षमता बढ़ायेगा। रत्न शुभता से आपको अनेक यात्राएं करनी पड़ सकती है। मोती रत्न आपकी स्फूर्ति बढ़ायेगा। जीवन साथी से आपके संबंध आत्मीय रहेंगे। मोती रत्न आपको आपके व्यवसाय में अच्छी सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपको एक से अधिक बार व्यापार क्षेत्र में बदलाव करने पड़ सकते है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में चंद्र सप्तम भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए विशेष शुभ रहेगा। मोती रत्न धारण करने से आपका अपने जीवन साथी से विशेष स्नेह बना रहेगा। मोती की शुभता से दांपत्य जीवन स्नेह और सौहार्द भाव से परिपूर्ण हो सकता है। यह रत्न आपके स्वाभिमान भाव में बढ़ोतरी कर सकता है। मोती रत्न से आपको क्रय-विक्रय से संबन्धित क्षेत्रों में उत्तम लाभ देकर मनोकूल सफलता दे सकता है। रत्न शुभता से आप ग्रहस्थ जीवन में स्थिरता आयेगी। यह रत्न आपको विनोदी स्वभाव देकर आपको विपरीत परिस्थितियों का मुस्करा कर मुकाबला करने की शक्ति दे सकता है। ससुराल से लाभ, सम्मानित, व्यवसाय में लाभ व मानसिक शांति प्राप्ति के लिए भी मोती रत्न धारण किया जा

सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न आपको स्वतंत्र व्यापार करने की ओर प्रेरित कर रहा है। रत्न शुभता से आपका कार्य कौशल चतुराई से परिपूर्ण रहेगा। आपका विवाह अपेक्षाकृत शीघ्र या विलम्ब से हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपका अपने जीवनसाथी के मध्य प्रेम संबंध अनुकूल रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आपको गोमेद रत्न धारण करना चाहिए। यह रत्न आपके स्वभाव की उग्रता को नियंत्रित रखेगा।

राहु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस

रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य पहनने पर आपको समय समय पर सरकारी क्षेत्रों में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। पिता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपको पित्त संबंधी रोग हो सकते है। ह्रदय रोग भी यह रत्न आपक दे सकता है। यह रत्न आपकी धैर्य शक्ति में कमी कर क्रोध भाव में वृद्धि कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप पर कार्य भार बढ़ सकता है। आपको आंखों से संबंधित रोग परेशान कर सकते है। पिता से संबंध मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

आपकी मकर लग्न की कुंड़ली में सूर्य अष्टमेश है। अष्टमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। इस रत्न में शुभता की कमी के कारण आप पदोन्नति के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करने का प्रयास कर सकते है। सरकारी क्षेत्रों से अपना काम निकलवाने के लिए भी आप अन्य स्त्रोतों का सहयोग लेने से पीछे नहीं हटेंगे। रत्न प्रभाव से आप अपनी अधिकारिक शक्तियों का आंशिक दुरुपयोग कर सकते है। रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं है। इसलिए यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आपको दीर्घकालीन रोग दे सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती है। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते है। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे है। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते है।

आपकी मकर लग्न के कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं द्वादशेश है। गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पुखराज रत्न पहनने पर अनिद्रा रोग प्रभावी होकर आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकते है। कार्यो को पूर्ण करने के लिए आपको अधिक प्रयास करने पड़ सकते है। जिसके कारण आपको आराम के अवसर कम मिलेंगे। यह भी आपको अस्वस्थ करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप चिंता और अपमान से पीड़ित हो सकते है। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को यह रत्न बाधित कर सकता है। पुखराज रत्न आपके विदेश भाव को प्रबल कर आपको व्यर्थ की यात्राएं दे सकता है। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर

आपको आर्थिक दंड के रूप में टैक्स (कर) देने पड़ सकते है।

दशानुसार रत्न विचार

मंगल
(02/03/2024 - 03/03/2031)

मंगल की दशा में आपका नीलम, हीरा, लहसुनिया, मूंगा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(03/03/2031 - 03/03/2049)

राहु की दशा में आपका नीलम, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(03/03/2049 - 03/03/2065)

गुरु की दशा में आपका नीलम, हीरा, लहसुनिया व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, मोती व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(03/03/2065 - 02/03/2084)

शनि की दशा में आपका नीलम, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

बुध - 03/03/1981

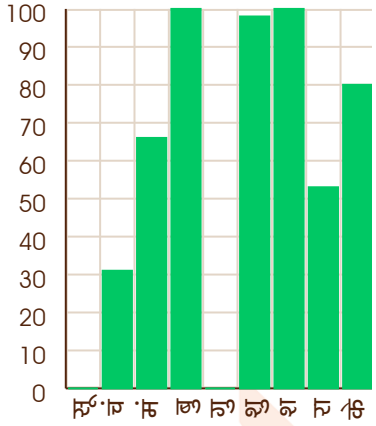

केतु - 02/03/1988

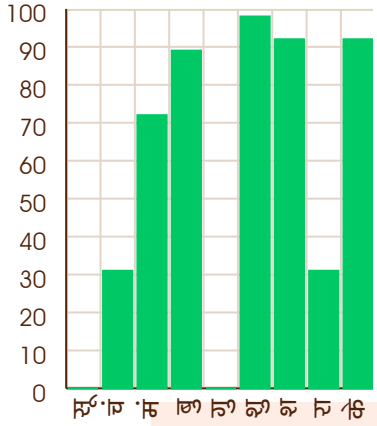

शुक्र - 02/03/2008

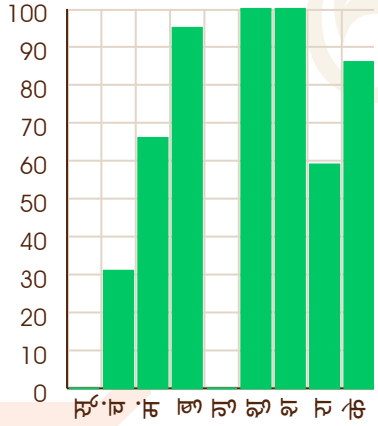

सूर्य - 03/03/2014

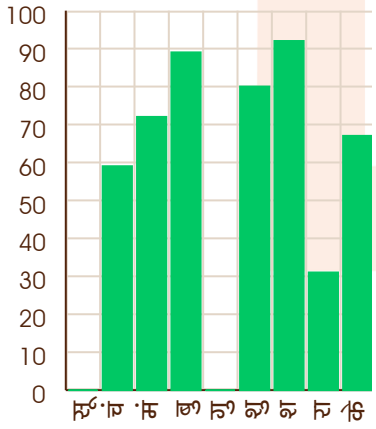

चन्द्र - 02/03/2024

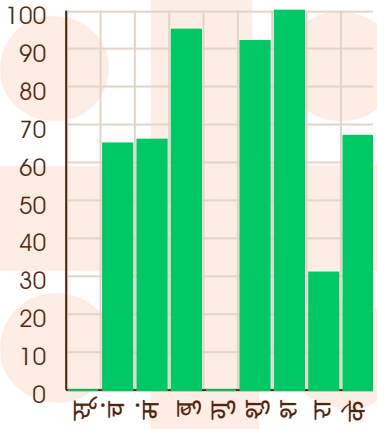

मंगल - 03/03/2031

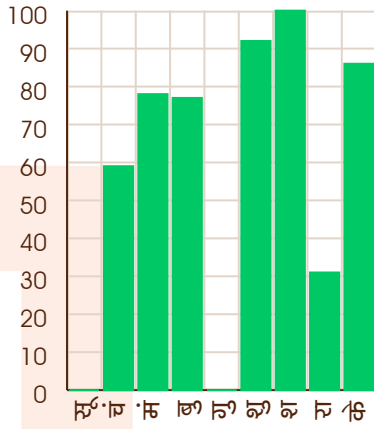

राहु - 03/03/2049

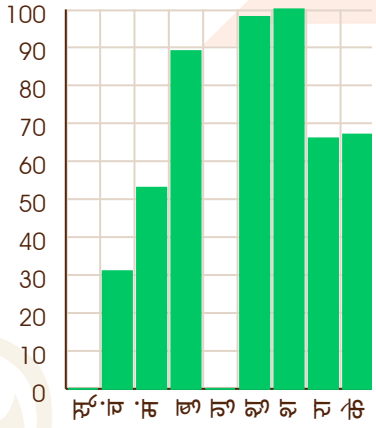

गुरु - 03/03/2065

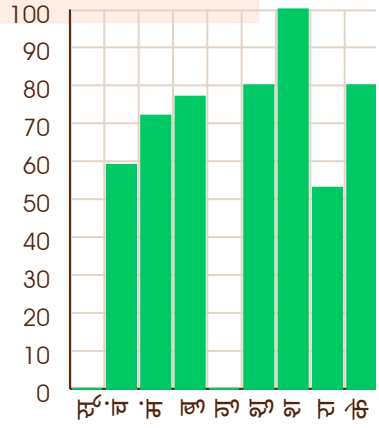

शनि - 02/03/2084

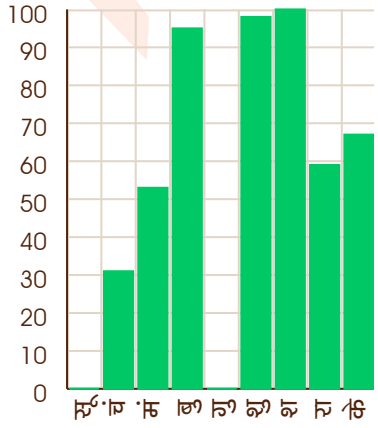

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - लापीज

आपका जन्म मकर राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में न्याय का प्रतीक व न्यायप्रिय माना जाता है तथा शनि को ज्योतिष में आध्यात्मिक ज्ञान के लिये शुभ माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मकर राशि के लग्न वाले जातकों को मकर राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये लापीज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शनि न्यायप्रिय एवं नौकरी का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को समाज में सम्मान तथा नौकरी पेशा लोगों के लिये अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग व सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा सेवकों का सहयोग भी प्राप्त होता है। शनि ग्रह एकाग्रता तथा आत्मिक शक्ति का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको कोर्ट कचहरी मुकदमे आदि से संबंधित परेशानी हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से समस्याओं से मुक्ति दिलवाता है।

लापीज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है । लापीज रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल सूर्यास्त के पश्चात होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त से एक घंटे के समय के अंदर इसको धारण करना होता है। लापीज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ. भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लापीज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सरसों का तेल, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो लापीज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और शनि देव की उपासना करें तो यह लापीज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव जी की उपासना करें तथा शनिदेव जी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मकर लग्न वाले जातक यदि लापीज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रूके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यो में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृति रखते है। साथ ही आप हंसमुख है। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता हैं। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हँसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रूचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते है। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते है। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते है। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता हैं। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते है। कुंडली के षष्ट भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती हैं। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशनियों का विचार किया जाता हैं। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता हैं। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता हैं।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

बुध आपके षष्टेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा हैं। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती हैं। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते है।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षो के उपरान्त आपको कार्यो में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यो पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 5 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धन
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में है अतः आप चन्द्र कुंडली से मांगलिक हैं। चूंकि यह योग भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों तथा चल एवं अचल सम्पति को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगी। शारीरिक रूप से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगी तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। इसके प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी रूकावटें उत्पन्न होंगी परन्तु अन्ततः इस में सफलता मिल ही जाएगी। आपके पति का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा लेकिन इसका दाम्पत्य जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सुख पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।

चतुर्थ भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में भौतिक सुख संसाधनों को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगी। इसकी सप्तम भाव पर दृष्टि से आपके पति का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में उग्रता रहेगी लेकिन सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में परिश्रमपूर्वक नित्य उन्नतिशील रहेंगी। साथ ही किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति भी हो सकती है तथा समाज से इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में भी आपको सफलता मिलेगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अनुकूल रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इसके अतिरिक्त परिश्रम पूर्वक आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी आप समर्थ रहेंगी।

मंगल की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली

में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपको इच्छित मात्रा में सांसारिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा चल एवं अचल सम्पति को बनाने में भी आप समर्थ रहेंगी। साथ ही सर्वत्र सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं जीवन में एक दूसरे को सुख तथा सहयोग प्रदान करके आप आत्मिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग अनुदित रूप में विद्यमान है। लेकिन यह राहु/केतु के साथ सूर्य/चन्द्र होने के कारण विशेष प्रभावशाली है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण रहता है। जीवन साथी से विछोह एवं प्रेम प्रसंग में असफलता मिलती है। जातक को प्रायः मनोनुकूल स्त्री का अभाव रहता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना अधिक रहती है तथा घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण साझेदारी के कामों में जातक को विशेष रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में व्यवधान आ जाता है। कभी-कभी बड़ा पद मिलते-मिलते रह जाता है। इस योग के प्रभाव से जातक लालची प्रवृत्ति के हो जाते हैं और लाटरी, जुआ, सट्टा आदि के शैकीन भी हो जाते हैं। जातक अनेक शत्रुओं से घिरा रहता है एवं वे लोग षड्यन्त्र रचते रहते हैं। जिसमें जातक को विशेष रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। यहाँ तक कि जातक को कारावास या जेलयात्रा करना पड़ती है।

इसके प्रभाव से जातक को इन्द्रियजन्य गुप्तरोग जीवन पर्यन्त परेशान करता रहता है। जिसमें अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है और जातक यदि किसी को धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान में दे देता है या वह स्वतः नष्ट हो जाती है। परिणामस्वरूप पैतृक धन का सुख प्राप्त नहीं होता। जातक को किसी न किसी कारण से मानसिक परेशानी व चिन्ता पीछा नहीं छोड़ती है। इस योग के प्रभाव से पुत्र सन्तान का अभाव रहता है तथा कन्या से मानसिकता जुड़ती नहीं है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रूख अपनाना चाहिये, तभी गृहस्थ जीवन सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. शुभ मुहूर्त में शिवलिंग पर ताम्बे का सर्प अनुष्ठानपूर्वक समर्पित करें।
3. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में मसूर की दाल सात बार प्रवाहित करें।
4. शुभ मुहूर्त में एकाक्षी नारियल अपने ऊपर से सात बार उतारकर सात बुधवार के दिन यमुना जी या बहते पानी में प्रवाहित करें।
5. प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित लहसुनिया धारण करें।
7. केतु मन्त्र का 18 अट्ठारह हजार (18000) जप करें या करवायें। केतु की दशा अन्तर्दशा में करवाना अधिक श्रेयष्कर है।

8. एक वर्ष तक गणपत्यथर्वशीर्ष का नित्यपाठ करें।
9. कम्बल, धूम्रवस्त्र, शस्त्र, सप्तधान्य, तेल आदि शुभ मुहूर्त्त में समय-समय पर दान करें।
10. सात शनिवार को देवदारु, सरसों तथा लोहवान इन तीनों को उबाल कर स्नान करें।
11. शयनकक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग जीवन भर करें।
12. सर्वतो भद्र मण्डल यन्त्र को पूजित कर धारण करें।
13. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें।काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक सात होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक सात होता है। अंक सात का अधिष्ठाता भारतीय मतानुसार केतु एवं पाश्चात्य मतानुसार नेपच्यून ग्रह को माना गया है। इन ग्रहों के थोड़े-बहुत प्रभाव आपके ऊपर आयेंगे। मूलांक सात के प्रभाववश आपके अन्दर कल्पना शक्ति की मात्रा अधिक रहेगी। काव्य रचना, गीत-संगीत सुनना, दूरदर्शन देखना आपकी अभिरुचि में समाहित रहेगा। ललित कलाओं, लेखन, साहित्य आदि में आपकी रुचि रहेगी। आर्थिक सफलताएं आपको अधिक नहीं मिलेंगी तथा धन संग्रह करना भी आपको मुश्किल लगेगा।

यात्रा, पर्यटन, सैर-सपाटा इत्यादि आपको विशेष अच्छा लगेगा। दूसरों के मन की बात समझने में आप निपुणता हासिल करेंगी एवं सामने वाले को अपनी ओर आकृष्ट करने की विशेष शक्ति भी आपके अन्दर रहेगी। धर्म के क्षेत्र में आप परिवर्तनशील विचारधारा की रहेंगी एवं पुरानी रूढ़ियों, रीतियों में अधिक रुचि नहीं लेंगी। आपको ऐसे रोजगार-व्यापार पसन्द आयेंगे, जिनमें यात्रायें होती रहती हों तथा दूर-दूर के देशों से सम्पर्क बना रहे।

आप ऐसा ही रोजगार चुनेंगी जिनमें यात्रा के अवसर अधिक मिलते रहें। अतीन्द्रिय ज्ञान की अधिकतावश जहाँ आप दूसरों के मन की बात को जान जायेंगी वहीं आपको स्वप्न भी अद्भूत प्रकार के आते रहेंगे। आपको विदेशों से, जहाज, मोटर इत्यादि वाहनों से विशेष लाभ प्राप्त होंगे।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है, अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकती हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचिपूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगी। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 7 है तथा भाग्यांक भी 7 है। मूलांक 7 एवं भाग्यांक 7 का स्वामी नेपच्यून हैं। मूलांक-भाग्यांक एक ही होने से आपको द्विगुणित मात्रा में इनके फल प्राप्त होंगे। इसके प्रभाववश आप एक अच्छी कल्पना के धनी, अधिक मात्रा में तथा शीघ्रातिशीघ्र उच्चता पाने की महत्वाकांक्षा रखेंगी। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप अधिक मात्रा में धन संग्रह करने में थोड़ी असुविधा महसूस करेंगी। आपकी उन्नति रुक-रुककर होगी। आपके जीवन में परिवर्तन कई बार आएंगे। आप पुरानी प्रथाओं के उन्मूलक रहेंगी तथा अपने विचारों के द्वारा नयी परंपराओं को स्थापित करेंगी। आपकी उन्नति धीरे-धीरे होगी और मध्य अवस्था के पश्चात

आपको अच्छे लाभ की प्राप्ति होगी। आप एक संघर्षशील एवं परिश्रमी महिला के रूप में अपनी छाप छोड़ेंगी तथा अपनी कला, बुद्धि-विवेक द्वारा किये गये परिश्रम से आपको यथोचित सम्मान प्राप्त होगा एवं भौतिक सुख-सुविधाओं का आप भरपूर उपयोग करेंगी। आपकी सामाजिक स्थिति मध्य अवस्था की अपेक्षा अंतिम अवस्था में श्रेष्ठ रहेगी एवं आप समाज में एक उच्च कोटि की महिला कहलाएंगी।

आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 34 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 43 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 7 की मित्राता 2 एवं 6 से है तथा भाग्यांक 7 की मित्रता भी 2 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 2, 6, 7 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपका मूलांक-भाग्यांक एक ही होने से मूलांक-भाग्यांक के फलों में द्विगुणित वृद्धि होगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन्, या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, जून, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 7 एवं भाग्यांक 7 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 6, 7 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 6, 7 होता है, आपके लिए शुभफलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

नेपच्यून (केतु) 21 जून से 25 जुलाई तक पाश्चात्य मत से, सूर्य कर्क राशि में रहता है तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक, भारतीय मत से सूर्य कर्क राशि में रहता है। इस समय जल तत्व की वृद्धि होती है। अतः उपयुक्त समय मूलांक सात के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिवस में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, अपने किसी अधिकारी से मिलना, पत्र व्यवहार आदि के कार्य प्रारंभ करना आपके लिए अनुकूल हैं। आप अपना कोई भी कार्य इन्हीं दिवसों में प्रारंभ करें।

शुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 आपके लिए विशेष महत्वपूर्ण होंगे। इन तारीखों में आप कोई भी नया कार्य, रोजगार-व्यापार, पत्र लेखन या उच्च अथवा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य संपन्न करेंगे तो वह अधिक सुविधाजनक एवं फलदायक रहेगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी माह की 1, 9, 10, 18, 19, 27 एवं 28 तारीखें प्रतिकूल हैं। इन तारीखों में रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार या कोई भी महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ करना आपके लिए अनुकूल नहीं हैं। अतः आप इन तिथियों के दुष्प्रभाव से बचें।

मित्रता या साझेदारी

आप अपनी मित्रता ऐसे व्यक्तियों से रखें जिनका जन्म 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 तारीखों को अथवा 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता घनिष्ठ रहेगी तथा वे रोजगार, साझेदारी के क्षेत्र में सहायक सिद्ध होंगे। ऐसे व्यक्ति आपके लिए विश्वसनीय रहेंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

यदि आपको प्रेम अथवा विवाह संबंधी संबंध स्थापित करना है तो आपके लिए ऐसी महिलाएं शुभ रहेंगी जिनका मूलांक 2, 6, 7 हो तथा जिनका जन्म किसी भी माह की 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 तारीखों में हुआ हो। ऐसी महिलाएं आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके मूलांक को देखते हुए आपके लिए हरा काफूरी, सफेद, हल्का तिल रंग शुभ फलदायक होंगे। इसलिए आप वस्त्रों के चयन के समय इन रंगों का ध्यान रखें। ये रंग आपके रोजगार-व्यवसाय तथा स्वास्थ्य के लिए भी अनुकूल रहेंगे। इन्हीं रंगों के तकिये, चादर आदि आपके लिए ठीक रहेंगे। आप इन रंगों का रुमाल अपने पास रखें, जो आपके स्वास्थ्य तथा आपके लिए मंगलमय रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपको ऐसा भवन जिसका मूलांक या नामांक 7 हो तथा वह नैऋत्य कोण दिशा में स्थित हो शुभ रहेगा। यदि आप मकान बनवाते हैं या खरीदने के इच्छुक हैं तो आपके लिए नैऋत्य कोण दिशा उपयुक्त रहेगी तथा आप अपने सभी आवश्यक कार्य इसी दिशा की ओर करें। अपने घर का फर्नीचर काफूरी सफेद, हल्के नीले रंग का खरीदेंगे तो पूर्ण फलदायी रहेगा।

शुभ वाहन नं

आप यदि स्वयं का वाहन आदि खरीदने के इच्छुक हैं तो उसके पंजीकरण के लिए आपके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंक ही अच्छे रहेंगे। आपका मूलांक 7 है, तब आपके लिए शुभ अंक 2, 6, 7 हो तो अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5236 =7 इत्यादि। यात्रा के वाहन, सीट क्रमांक के अंक भी यही होंगे तो आपकी यात्रा सफल रहेगी। यदि आप होटल में कमरा बुक करते हैं तब नंबर 106 = 7 आदि अंकों का चयन ही करें। यही आपके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तब आपको पेट दर्द, छूत के रोग, पसीने की अधिकता तथा दुर्गंध, आमाशय दोष, कब्जियत, नींद न आना, भूख न लगना, गुप्तांग संबंधित रोग, वात तथा गठिया इत्यादि रोग होते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय आपको नृसिंह भगवान की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए।

व्यवसाय

तैराकी, अभिनय, फिल्म व्यवसाय, वायु सेवा, पर्यटन, ड्राइवर का कार्य, बाबूगिरी, जल जहाज के कार्य, पत्रकारिता, संपादन कार्य, रबर, टायर, ट्यूब, प्लास्टिक वर्क, ललित कला संबंधी कार्य, राज्याधिकारी, जासूसी, तरल पदार्थों का क्रय-विक्रय, जादू के कार्य, कूटनीतिक कार्य, नियंत्रक, भूमिगत पदार्थों का व्यवसाय एवं ट्रांसमीटर, रेडियो, अनुवादक आदि के कार्य।

व्रतोपवास

शनिवार को नेपच्यून अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर, इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए लहसुनिया प्रमुख रत्न है। इसके न मिलने पर आप पीला हकीक भी धारण कर सकते हैं। इसे आप शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन, चौघड़िया मुहूर्त में, चांदी की अंगूठी में तीन से पांच रत्ती के लगभग, दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली में त्वचा को स्पर्श करते हुए धारण करें।

अनुकूल देवता

आप केतु ग्रह की उपासना करें अथवा नृसिंह भगवान की आराधना करें। नृसिंह भगवान के मंत्र 'ओम् ह्रीं उग्रं वीरं महा विष्णुं ज्वलंत सर्वतोमुखं नृसिंह भीषणं भद्र मृत्यु मृत्युं नमाम्यहं ह्रीं' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो आप विभिन्न रोंगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो नृसिंह भगवान के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए केतु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, केतु गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

केतु गायत्री मंत्र – ऊँ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप केतु का ध्यान करें, मन में केतु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ केतु को अनुकूल बनाने हेतु केतु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ सत्तर माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।। जप संख्या 17000।।

वनस्पति धारण

आप बुधवार के दिन एक इंच लंबी असंगध की जड़ ला कर आसमानी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे नेपच्यून/केतु के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपको प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में सहदेई, लज्जालु (लोबान), बला, मोथा, प्रियंगु और हिंगोठ आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ केतु/नेपच्यून के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आप कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

केतु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को केतु के पदार्थ कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कंबल, उड़द, वैदुर्य मणि, काले पुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा, शस्त्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

केतु को अनुकूल बनाए रखने हेतु केतु यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपके जन्मकालिक आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण में मकर लग्न में वृषभ राशि के नवमांश एवं वृषभ राशीय द्रेष्काण के उदय काल में हुआ था। आपके जन्म प्रभाव से ऐसी संभावनाओं का सृजन हो रहा है कि आपका जीवन धन प्रसन्नता से युक्त फलदायी एवं प्रसन्नतम होगा। आप इन बातों में विश्वास रखती हो कि किसी भी प्रकार की प्रतियोगिता में सफल होने के लिए धीमी गति क्यों न हो। नियमित एवं लगनशीलता से युक्त हो, तो मनुष्य अवश्य सफल होता है। आप अपनी साहसिक प्रवृति के प्रति आशान्वित रह सकती हो। अतएव आप शेष कार्यों के बाद योजनानुरूप लक्ष्य तक पहुंचने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत करती हो।

यदि आप ऐड़ी से चोटी तक पहुंचने के लिए उपयुक्त पथ पर चल रही हो, तो आप सर्वथा नाम, प्रसिद्धि एवं अतिरिक्त धन उपार्जित कर सकती हो। यदि आप गायन कला, गणित एवं ज्योतिष कला के प्रति रुचिवान बन कर सीखने के प्रति स्नेहशील रही तो आप प्रसिद्ध महिला बन कर किसी भी प्रकार की समस्याओं से निवृत्ति की राय दे सकती हो तथा समस्याओं का अन्वेषण करने की जमानत ले सकती हो। आपकी यह भी भूमिका रहती है कि आप अपनी इच्छानुसार उनके सहयोग के लिए अपने अतिरिक्त समय का उपयोग कर सकती है। आप सामाजिक कार्य में अपना बहुमूल्य समय का सदुपयोग करोगी। आप धीमी गति से अपने द्वारा संचालित सामाजिक कार्य में सफल हो सकती हो।

आपके जीवन का स्वर्णिम काल आपकी आयु के 19 वें वर्ष से 24 वें वर्ष के अंतराल में प्रमाणित होगा जब आपकी स्थिति अच्छी, व्यवसाय हेतु उत्तम एवं भरपूर लाभ हेतु सौभाग्यशाली समय होगा।

आप अपनी प्रतिभा के अनुरूप व्यवसाय का चयन कर लाभ प्राप्ति हेतु प्रस्तुत होंगी। अतएव आपके लिए सम्मतियुक्त विचारणीय यह है कि अपनी इच्छा के अनुरूप विस्तृताकार उपव्यवसाय यथा कृषि कार्य, खनिज, कोयला, खनन कार्य, पेट्रोल, तेल का (डीलरशीप) वितरण कार्य। रेफ्रिजेरेटर एवं कूलर का कार्यादि कर सकती हैं।

आपका घरेलू जीवन फलता फूलता हुआ दृष्टिगत होगा। आपके पति सुंदर एवं कठिन श्रम करने वाले तथा आपके बच्चे आपको अंगीकृत करने वाले होंगे। आपका घर शांत एवं सुखद वातावरण से युक्त होगा।

आप अपने पारिवारिक सदस्यों के लिए अंतर्मुखी होंगी तथा स्पष्ट रूप से अपने परिवार के समक्ष आपकी प्रवृति स्नेहपूर्ण रहेगा। तथापि वे आपके समक्ष किसी प्रकार की गलती नहीं करेंगे। बल्कि वे विशुद्ध आत्मा से आपका सहयोग करेंगे।

सामान्यतया आपका स्वास्थ्य एकरूपता लिए हुआ अच्छा रहेगा। परंतु कुछ वर्षों के पश्चात् कतिपय रोगादि से आप प्रभावित हो सकते है, यथा अपाचन क्रिया, कफ, सर्दी, जुकाम एवं चर्म रोगादि खुजली, खाज, बेचैनी आदि रोग। इसके विरुद्ध आपको अच्छी प्रकार

अपने घरेलू चिकित्सक से समय-समय पर विमर्श करना चाहिए। आप सर्वथा कुछ छोटे-छोटे शारीरिक दुर्घटना के प्रति सर्तक रहेंगी। इसलिए सावधानी पूर्वक चलना फिरना चढ़ना, उतरना अथवा सीढ़ी (जीने) पर चढ़ना-उतरना तथा ऊँची स्थान से छलांग लगाने की प्रवृति को बहिष्कृत करना होगा।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग सफेद, काला, लाल एवं नीला रंग भली प्रकार आपके अनुरूप है। परंतु आपके लिए रंग पीला एवं क्रीम रंग अव्यवहारणीय है।

आपके लिए वास्तविक रूप से अनुकूल अंक 6, 8 एवं 9 अंक भाग्यशाली है। परंतु अंक 3 आपके लिए निश्चित रूप से परेशानी उत्पन्न कराने वाला है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुक्रवार, शनिवार एवं बुधवार का दिन महत्वपूर्ण कार्य संपादन हेतु सर्वथा अनुकूल है। परंतु रविवार, सोमवार एवं गुरुवार का दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं हानिकारक है। अतएव इन दिनों का त्याग करें।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्त्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया मकर लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सदभावना का भाव विद्यमान रहता है। यद्यपि इनके चेहरे पर चैतन्यता एवं विचारशीलता के भाव की न्यूनता रहती है परन्तु गंभीरता का भाव बना रहता है। ये कार्यशील तथा परिश्रमी होते हैं तथा अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता प्रबल रहती है अतः जीवन में इसी से उन्नति तथा सफलता प्राप्त करते हैं।

सेवापरायणता का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है तथा समाज एवं देश सेवा के कार्यों में ये तत्पर रहते हैं। ये साहसी एवं संघर्षशील प्रवृति के महिला होते हैं तथा मन में उदासीनता के भाव की प्रबलता के कारण सुख दुख को समान मात्रा में स्वीकार करते हैं। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण अल्प रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये विज्ञान अनुसंधान या शास्त्रीय विषयों का ज्ञान अर्जित करके एक विदुषी के रूप में भी समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

इसके प्रभाव से आप स्वस्थ तथा बलवान होंगी तथा आदर्श वादिता का भाव भी रहेगा एवं स्वतंत्रता पूर्वक अपने आदर्शों का पालन करेंगी। आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगी तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से भी उदारता एवं विनम्रता का व्यवहार करेंगी फलतः वे भी आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही अपने सदगुणों से आप सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त करेंगी।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक उद्विग्नता से आप परेशानी की अनुभूति करेंगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक परिश्रमी महिला होंगी तथा परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी। कार्य क्षेत्र में भी आपके उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे। स्वभाव से आप तेजस्वी भी होंगी तथा तेजस्विता के साथ उग्रता का प्रदर्शन भी करेंगी फलतः इससे आपको सामाजिक तथा कार्यक्षेत्र में अनावश्यक परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। अतः यत्नपूर्वक ऐसी प्रवृतियों का आपको परित्याग करना चाहिए।

आर्थिक दृष्टि से आपके स्थिति अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगी एवं आयस्रोतों की वृद्धि भी समय समय पर होती रहेगी। भौतिक सुख संसाधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी तथा सपरिवार उनका उपभोग करेंगी परन्तु आप घर से दूर किसी अन्य स्थान पर निवास करके उन्नति मार्ग पर अग्रसर होंगी।

मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगी तथा उनसे आपको वांछित सहयोग एवं लाभ समय समय पर होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार पराक्रमी

परिश्रमी एवं तेजस्वी महिला होंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगी। आपकी प्रवृति स्पष्ट बोलने की रहेगी तथा जो कुछ भी आपके मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगी। साथ ही आप में निस्वार्थ का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अपने कार्य कलापों को इसी भाव से सम्पन्न करती रहेंगी परन्तु अन्य जनों की बातों में शीघ्र ही आएंगी जिससे यदा कदा आपको अनावश्यक समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है। आप एक कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा पारिवारिक जनों के प्रति आपके मन में पूर्ण लगाव रहेगा साथ ही घर को भी हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पसंद करेंगी।

पारिवारिक जनों के लिए आप अत्यधिक चिन्तित रहेंगी तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से आपका उनसे लगाव रहेगा। आप में अनावश्यक चंचलता के भाव का अभाव रहेगा तथा किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगी । आपकी वाणी में मधुरता रहेगी तथा विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना आपको रूचिकर लगेगा। साथ ही पारिवारिक जनों के साथ समय समय पर धार्मिक एवं शुभ कार्यो को सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित लाभ प्राप्त करेंगी तथा सज्जनों एवं महात्माओं का समय समय पर सत्कार करती रहेंगी। साथ ही परोपकार संबंधी कार्यो में भी आपकी रूचि होगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगी तथा आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र होगी तथा गहन से गहन विषयों को स्मरण रखने में समर्थ रहेंगी। आपकी बुद्धि उच्चशिक्षा, दर्शन या शोध कार्य के प्रति रूचिशील रहेगी तथा इस क्षेत्र में यत्नपूर्वक सफलताएं अर्जित करती रहेंगी। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही आपके प्रति वे आज्ञाकारी, कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा उन्नति के क्षेत्र में परस्पर आपका सहयोग रहेगा। इसके साथ ही पारिवारिक शान्ति एवं समृद्धि के लिए एक दूसरे की कमियों तथा गलतियों की उपेक्षा करेंगे इससे सौहार्द का भाव बना रहेगा।

आप में नेतृत्व के गुण विद्यमान रहेंगे। अतः समाज में मान सम्मान तथा ख्याति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही परिवार का स्तर बढ़ाने में भी तत्पर रहेंगी। आप में संगठन शक्ति भी रहेगी अतः किसी लाभदायक कार्य को देखकर आप तुरंत उसे करने के लिए तैयार हो जाएंगी। भौतिकता की प्राप्ति के लिए भी हमेशा यत्नशील रहेंगी। आधुनिक संचार साधनों यथा टेलीफोन, टेलीविजन, वाहन तथा अन्य उपकरणों से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही संगीत के प्रति भी रूचिशील रहेंगी एवं कला के लिए भी समय प्रदान करेंगी। दूर समीप की यात्रा करने से आपको ख्याति प्राप्त होगी तथा धार्मिक या सूचना संबंधी लेखों को पढ़ने में आपकी रूचि रहेगी। इसके अतिरिक्त आप धनवान, धर्मात्मा, अतिथि सेविका तथा सर्वजनों के प्रिय होकर सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी ।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है यद्यपि शनि नीचराशि में है लेकिन लग्नेश होकर सामान्यतया शुभफल ही प्राप्त होंगे। अतः सांसारिक सुखों को अर्जित करेने में समर्थ होंगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगी। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान महिला हैं। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगी।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध महिला की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख-सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगी। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगी तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रहेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करनें में समर्थ होंगी परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगी। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी। जिससे आप समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी। कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी बुद्धि के द्वारा शीघ्र कर देंगी। अतः अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरात्तव के क्षेत्र में आपका प्रबल आकर्षण एवं रूचि रखेंगी तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों के ज्ञानार्जन में प्रयत्न शील होंगी तथा किसी नवीन सिद्धांत का भी प्रतिपादन कर सकती हैं जिससे आपके सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में शुक्र की राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा ऐसे सम्बन्धों से आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। प्रेम के क्षेत्र में भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। आपका प्रेम मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि -कोण से युक्त होगा। अतः इसकी परिणीति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति प्राप्त होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगे। माता-पिता के प्रति उनके मन सामान्यतया आदर एवं सम्मान का भाव होगा परन्तु स्वतन्त्र प्रवृति के होने के कारण यदा-कदा वे किसी महत्वपूर्ण कार्य को बिना माता-पिता की सलाह या सहयोग से भी सम्पन्न कर सकते है लेकिन इससे आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए तथा उनकी योग्यता पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए। इससे आपकी सम्बन्धों में विश्वास, सदभाव एवं मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त वे वृद्धावस्था में आपकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इस प्रकार संतति पक्ष से सामान्यतया सुख एवं सहयोग ही अर्जित करेंगी तथा उनसे सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में वे योग्य एवं परिश्रमी होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक शिक्षा के क्षेत्र में वांछित उन्नति प्राप्त करके अपने उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दीक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त आपकी संतति पराक्रमी तेजस्वी एवं व्यवहार कुशल भी होगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य समाजिक जनों को भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ होगी फलतः सभी लोग उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। अतः बच्चों की उन्नति से आप सन्तुष्ट होंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपको खास सम्बन्धियों तथा घनिष्ट मित्रों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। आपके शत्रुवर्ग उच्चाधिकार व्यक्ति प्राप्त होंगे तथा समाज में कई क्षेत्रों में आपके शत्रु या विरोधी उत्पन्न होंगे। वे आपकी प्रसिद्धि को पसन्द नहीं करेंगे तथा आपकी वैभवशीलता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव रखेंगे। अतः आपको सामाजिक अवमानना तथा आर्थिक हानि प्रदान करने के लिए भी तत्पर रहेंगे परन्तु आप एक चतुर बुद्धिमती एवं प्रतिभाशाली महिला होंगी। अतः अपने कार्यकलापों से शत्रु एवं विरोधी पक्ष को पराजित करने में समर्थ रहेंगी तथा अपनी समस्याओं तथा परेशानियों का सफलता पूर्वक समाधान करेंगी। आप दीवानी तथा फौजदारी दोनों प्रकार के मुकद्दमों से सम्बन्धित रहेंगी। लेकिन इन कार्यो को आपको अत्यधिक बुद्धिमता एवं चतुराई से सम्पन्न करना चाहिए अन्यथा इनसे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। चूंकि आप अपने ही तरीके से किसी भी कार्य को सम्पन्न करेंगी तथा दूसरों को उसमें कोई महत्व नहीं देंगी तथापि अन्त में आपको इनमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा प्रसिद्धि भी मिलेगी।

आपका सेवक वर्ग अच्छा रहेगा तथा ईमानदारी से वे आपकी सेवा करेंगे साथ ही आज्ञा का पालन भी करते रहेंगे, लेकिन यदा कदा आपके गुप्त रहस्यों को वे अन्य जनों के समक्ष कहेंगे जिससे आपकी सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी अतः सेवक वर्ग के सम्मुख व्यक्तिगत वार्तालाप न करें। साथ ही नौकरों की पहुँच से कीमती सामान भी दूर ही रखें।

आप कई बार आय से अधिक व्यय भौतिक आराम की वस्तुओं पर कर देंगी जिससे आर्थिक विषमता होगी तथा आपको ऋण आदि लेना पड़ेगा। अतः आपको ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए। आपके मामा मामी तथा अन्य संबन्धी आपके लिए अनुकूल रहेंगे तथा मामा से आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभार्जन होता रहेगा। वृद्धावस्था में चिन्ता या रक्त चाप आदि से आप परेशान हो सकती है। अतः युवावस्था से ही खान पान पर नियंत्रण रखकर ऐसी समस्याओं से सुरक्षित रहना चाहिए।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा शुक्र भी सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है तथा शुक्र के प्रभाव से वह सुंदरता संगीत एवं कला प्रेमी, शिक्षित तथा कर्तव्य परायणता की भावना से युक्त रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे। सांसारिक कार्यो को करने में वह दक्ष होंगे तथा उनके बुद्धिमता पूर्ण कार्य कलापों से अन्य लोग भी उनसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। वह मृदु वाणी बोलने वाले तथा संगीत एवं कला के प्रति समर्पित होंगे शुक्र के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा तथा परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी ।

आपके पति सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण के व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी आकर्षक होगी तथा शरीर की पुष्टता दर्शनीय होगी इससे उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। शुक्र के प्रभाव से आधुनिक परिधानों से वह सुसज्जित रहेगे वह आधुनिक विचारों के व्यक्ति होंगे तथा पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति के प्रति उनके मन में आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह किसी महिला संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। शुक्र के प्रभाव से आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह भी कर सकती है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम की भावना रहेगी। एक दूसरे के सुख दुख को अपना ही समझेंगे इससे संबंधों में अपनत्व तथा मधुरता बनी रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को आप आपसी सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे जिससे विश्वसनीयता में भी वृद्धि होगी। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार से होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे प्रतिष्ठित होंगे। विवाह के पश्चात सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे नैतिक सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यो में एक दूसरे की सलाह भी लेंगे तथा एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास करेंगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति का पूर्ण सेवा एवं श्रद्धा का भाव होगा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे। साले एवं सालियां भी उनके सद्व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे जिससे पारिवारिक शांति बनी रहेगी। व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे लाभ होगा। यदि किसी मित्र से साझेदारी की जाए तो इससे व्यापार में सर्वत्र उन्नति होगी एवं आपस में भी विश्वसनीयता का भाव बना रहेगा।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म या ज्यौतिष आदि विषयों पर श्रद्धा रखेंगी तथा न्यूनाधिक रूप से इसका आपको ज्ञान भी रहेगा। साथ ही इन विषयों में किसी प्रकार का शोधकार्य आदि भी सम्पन्न कर सकती हैं। आप अपना अधिकांश समय आध्यात्मिक चिन्तन मनन में व्यतीत करेंगी तथा इसमें आपको ख्याति भी अर्जित हो सकती है। आप चल एवं अचल सम्पत्ति की स्वामिनी भी होगी तथा पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त करेंगी। अतः आपके पास विस्तृत भूमि तथा अन्य प्रकार की जायदाद रहेगी साथ ही जायदाद संबन्धी व्यवसाय या क्रय विक्रय से भी आप इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित कर सकती हैं। अतः समाज में आप एक आदरणीया महिला रहेंगी।

आपका ससुराल भी सुसम्पन्न परिवार होगा तथा सर्वप्रकार से वे खुशहाल होंगे अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। बीमा आदि के क्षेत्र में भी आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः आपको स्वयं का तथा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं का अवश्य बीमा करवाना चाहिए। यह बीमा आपका सुरक्षित पूंजी निवेश होगा तथा इससे आपको उचित लाभ मिलेगा। आपकी कुंडली में चोरी या दुर्घटना आदि का कोई विशेष योग नहीं है तथा सामान्य घटनाओं से किसी हानि या अनिष्ट की संभावना नहीं रहेगी तथापि शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको सतर्क रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपकी आयु भी अच्छी रहेगी तथा समस्त जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श तथा दयालु स्वभाव की महिला होंगी तथा पारिवारिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का पालन करने में तत्पर रहेंगी। साथ ही ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक धार्मिक प्रवृतियों या अनुष्ठानों को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसी परिपेक्ष्य में मन्दिरों या तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगी। गुरू एवं महात्माओं के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा उनकी सेवा करने में भी तत्पर रहेंगी। आध्यात्म संबंधी ग्रंथों का भी आपको ज्ञान रहेगा। साथ ही ध्यान एवं योग की क्रियाएं भी समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी।

आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी तथा पूर्वाभास या भविष्य वाणियां आपकी सत्य सिद्ध होंगी। अपनी ओर से आप अन्य जनों को हमेशा धर्म के मार्ग पर जाने के लिए प्रेरित करेंगी तथा सामूहिक रूप से उनको संबोधित भी कर सकती हैं। इन सब कार्यो से आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। व्यक्तिगत कार्यो की सिद्धि या अन्य लाभार्जन आदि के उद्देश्य से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं भी समय समय पर होती रहेंगी। साथ ही धर्म के पवित्र ग्रंथों का आप अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करेंगी तथा दीन दुःखियों को समय समय पर दान आदि भी देती रहेगी परन्तु ये सभी कार्य आप धन की अपेक्षा तन मन से करना अधिक पसन्द करेंगी। पौत्रों से आपको इच्छित सुख प्राप्त होगा तथा दैनिक पूजा भी आप नित्य सम्पन्न करेंगी एवं युवास्था के बाद आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी । इसके अतिरिक्त अपने पूर्व जन्म के किए गए पुण्यों के प्रभाव से वर्तमान में आप इच्छित धन ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगी तथा सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा मंगल भी दशम भाव में ही स्थित है। तुला राशि वायुतत्व एवं शुक्र जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा परन्तु श्रमसाध्य क्रिया भी इसमें विद्यमान होगी। साथ ही आप समय समय पर इसमें परिवर्तन भी करते रहेंगी इससे आपको लाभ होगा परन्तु अनावश्यक परिवर्तनों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

दशमभाव में तुला राशिस्थ मंगल के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र, डाक्टर, इंजीनियर, इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियर, पुलिस, सी आई डी, होटल प्रबंधन या कर्मचारी, अग्निशमन विभाग, पराक्रमी क्षेत्र, विद्युत ऊर्जा विभाग, विद्युत फैक्टरी आदि उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त विभागों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए शस्त्रों का व्यापार, धातु कार्य, इलैक्ट्रोनिक्स उपकरणों का क्रय विक्रय, विद्युत एवं इंजीनियरिंग उपकरण, कैमिस्ट, रासायनिक पदार्थ, होटल का स्वामित्व एवं जमीन जायदाद का क्रय विक्रय आदि से वांछित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा इन क्षेत्रों में इच्छित उन्नति प्राप्त करने में समर्थ होंगी। अतः यदि आप व्यापार की इच्छुक हों तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने कार्य का प्रारंभ करें।

दशमभावस्थ मंगल के प्रभाव से जीवन में आपको मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगी। आपके पिताजी एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व एवं स्नेह का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे समुचित प्रबंध करके आपको एक योग्य नागरिक बनाएंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा आप भी अपनी योग्यता एवं परिश्रम से पिता के सम्मान में वृद्धि के साथ साथ अपने क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। आपके आपसी संबंधों में मधुरता की अल्पता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक मतभेद बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में एक दूसरे का सहयोग कम ही लेंगे। अतः ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए एवं सामंजस्य बनाए रखना चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृति किसी भी क्षेत्र में अन्त तक संघर्ष करने की रहेगी जब तक की आपको उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति न हो जाए । अपनी इसी संघर्षशील एवं क्रियाशीलता के कारण आप जीवन में अधिकांशं रूप से अपनी महत्वाकांक्षाएं तथा मानसिक इच्छाओं एवं संकल्पों को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगी। इस प्रकार स्वपराक्रम एवं योग्यता से ही जीवन में उन्नति करेंगी तथा अन्य जनों के सहयोग की इसमें अल्पता रहेगी।

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए आप सौभाग्यशाली रहेंगी। आप होटल व्यवसाय, सोने का व्यापार अथवा भाइयों के प्रोत्साहन से जीवन में इच्छित मात्रा में लाभ एवं धनार्जन करेंगी यदि स्वयं कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त स्रोतों से आपके पति लाभार्जन करेंगे। इच्छित धन ऐश्वर्य से आप सर्वदा सम्पन्न रहेंगी तथा बड़े भाइयों से जीवन में आपको स्नेह, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन मिलता रहेगा तथा आप भी उनका पितृवत आदर करेंगी।

आप पराक्रमी सक्रिय बुद्धिमान एवं शिक्षित लोगों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगी यद्यपि आपकी प्रवृति स्वच्छन्द होगी फिर भी सामूहिक रूप से आपको कार्य करना रूचिकर लगेगा। आपका सामाजिक स्तर भी उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र या समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप सामाजिक जनों समय समय पर भलाई तथा सहायता करती रहेंगी जिससे जीवन में किसी विशिष्ट सम्मान को अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगी। साथ ही यदा कदा बाएं कान में परेशानी से कष्ट प्राप्त करेंगी। परन्तु सामान्य समय सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में मान सम्मान तथा ख्याति से युक्त रहेंगी एवं धनार्जन करने में भी सर्वदा तत्पर रहेंगी। इसके लिए आपको चाहे कितना ही परिश्रम क्यों न करना पड़े तथा परिश्रम पूर्वक अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर रहेंगी तथा ऐसे किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगी जिससे आपको उन्नति या लाभ मार्ग दिखता हो। धन के महत्व को आप अच्छी तरह जानेंगी अतः सावधानी तथा सतर्कता पूर्वक इसका उपयोग करेंगी। साथ ही इस विषय में कभी भी कोई खतरा नहीं उठाएंगी।

अर्जित धन से भविष्य में लाभ किस प्रकार अर्जित किया जाता है इसको आप अच्छी तरह जानती हैं। अतः आप इसका सदुपयोग किसी आदर्श कार्य या ख्याति प्राप्त बड़ी कम्पनी में पूंजी निवेश करके करेंगी। साथ ही जायदाद संबंधी क्रय विक्रय पर भी धन का व्यय कर सकती है। आपकी प्रवृति धार्मिक एवं उदार होगी अतः समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा दीन दुखियों की सेवा तथा सहायता करने के लिए भी धन खर्च करेंगी। आप मध्यवस्था में धनवान बनेंगी तथा सर्वत्र आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे एवं अपनी दयालुता तथा दानशीलता के कारण समाज में ख्याति तथा सम्मान भी अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त भौतिक सुख संसाधनों या आवास की साज सज्जा पर भी व्यय करेंगी ।

आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेंगी। इन पर व्यय करने के बाद आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आप व्यापारिक या कार्यवश विदेश यात्रा भी सम्पन्न कर सकती हैं जिससे आपको उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त होगी तथा आपका समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आपका जन्म आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी योनि मार्जार, वर्ग श्वान, वर्ण विप्र, गण राक्षस तथा नाड़ी अन्त्य होगी। आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "डो" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्र के अर्न्तगत की जाती हैं। चूंकि आप इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप पिता के लिए कष्टकारी होंगी। इसलिए जन्म समय में इस नक्षत्र की शान्ति पूर्ण शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान द्वारा अवश्य करा लेनी चाहिए जिससे अशुभ फलों का प्रभाव खत्म या न्यून हो सके। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करने चाहिए तथा 27 दिन बाद जब पुनः यह नक्षत्र आये तो जपे हुए मत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए।

मंत्र – ऊँ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अर्थात आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप यात्रा तथा भ्रमण करने में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करेंगी तथा कठोर कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आप अपने इन कठोर चेष्टाओ से अन्य जनों को भी दुःखी करेंगी। आप धनाभाव से ग्रस्त नहीं रहेंगी परन्तु अपने अर्जित धन को भी अनावश्यक कार्यों पर व्यय करेंगी। साथ ही विलासिता प्रबलता से भी आप युक्त रहेंगी।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट प्रकृति से लोगों को कष्ट देने वाला, अपने उत्तम धन को बुरे कर्मो में खर्च करने वाला, विलासी तथा कामातुर रहता है।

दूसरे लोगों की सुन्दर वस्तुओं के प्रति आप आकषित रहेंगी। शरीर से भी आप स्वस्थ ही रहेंगी। अन्य लोगों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार अल्प ही मानेंगी। आप पूर्व कृत कार्यों को भी करने वाली होंगी।

लुब्धः खञ्जः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।
आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।

अर्थात आश्लेषा में जन्मा मनुष्य लोभी, लंगड़ा, कमजोर शरीर वाला, कृतघ्न तथा किये गये कार्यों को करने वाला होता है।

खाने में भक्ष्याभक्ष्य का आप कोई भेद नही रखेंगी तथा एक प्रकार से सर्वभक्षी होंगी अर्थात सात्विक या तामसिक जो भी मिला उसे खाने की इच्छा करेंगी। आप कभी कभी कठोरकर्मों को भी सम्पन्न करेंगी। इसलिए सामाजिक जनों से आपका वैमनस्य भी रहेगा। अवसर के अनुसार आप कभी कभी मिथ्या भाषण का भी जीवन में आश्रय ले सकती हैं।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

अर्थात आश्लेषा में पैदा हुआ बालक सर्वभक्षी, कार्यकर्ता, कृतघ्न, ठग, दुर्जन तथा किये हुए कार्यों को करने वाला होता है।

आपकी ज्ञान प्राप्ति में रूचि अल्प मात्रा में ही रहेगी अतः बुद्धि भी मध्यम ही रहेगी। आपको क्रोध भी अधिक ही आएगा तथा आचरण से भी आप सामान्य ही होंगी। आपके अधिकांश कार्य कठोरता से युक्त रहेंगे। समाज से आपको सम्मान तथा सहानुभूति मिलती रहेगी।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

अर्थात् आश्लेषा में उत्पन्न जातक मूढ़मति कृतघ्नतापूर्ण वाणी बोलने वाला, क्रोधी तथा दुराचारी होता है।

आप ताम्रपाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप आजीवन धन धान्य से सुसम्पन्न रहेंगी। आप पति के रूप में श्रेष्ठ एवं गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी। साथ ही कई प्रकार के बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं तथा सोना, चांदी आदि से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विविध प्रकार से चल अचल जायदाद या सम्पति की स्वामिनी बनेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग कर सकेंगी। आप की समस्त पुत्र तथा कन्या सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी एवं जीवन में आप संतति सुख अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार आपका परिवारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपके हमेशा मधुर व्यवहार रहेगा।

कर्क राशि में जन्म लेने के कारण आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपने सभी

कार्यों को चतुराई के साथ सम्पन्न करेंगी। साथ ही धन का भी आपके पास अभाव नहीं रहेगा इससे हमेशा युक्त रहकर धनवान कहलाएंगी। समाज तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में आप शीघ्र सफलता प्राप्त करेंगी। धर्म में आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा नियमपूर्वक धर्म का पालन करने में हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी। आप अपने श्रेष्ठ संबंधियों तथा गुरूजनों की प्रिय तथा स्नेह की पात्र रहेगी तथा सभी से आपको पूर्ण सहयोग की प्राप्ति होगी। आप अत्यन्त ही बुद्धिमती होंगी तथा अपनी बुद्धिमता से अनेक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगी। यदा कदा आप में क्रोध की भी बहुलता दृष्टिगोचर होगी एवं कभी कभी आप अपने को अत्यन्त दुःखी तथा निराश अनुभव करेंगी। आप अच्छे मित्रों से भी सुशोभित रहेंगी तथा अन्य कार्यों को भी जानने वाली होंगी। आपके शरीर में बल का भी अभाव रहेगा तथा अपने घर से अन्यत्र कहीं जाकर प्रवास करेंगी।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वकः कर्कराशौ भवेन्नरः।।

मानसागरी

आप वात तथा कफ मिश्रित प्रकृति वाली होंगी तथा आपका सौन्दर्य अत्यन्त ही आकर्षक एवं दर्शनीय होगा। आप स्वयं धनार्जन करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी तथा विपुल धन से युक्त होकर धनाढ्य कहलाएंगी। ब्राहमण तथा देवताओं में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अवसरानुकूल इनकी सेवा तथा पूजा करने हेतु यत्नशील रहेंगी। श्रेष्ठकुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपके मन में असीम सेवा तथा सहयोग का भाव रहेगा। इनकी सेवा करके तथा उन्हें सहयोग प्रदान करके आप अत्यन्त शान्ति की अनुभूति करेंगी।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।

जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप रूचिशील रहेंगी तथा परिश्रम से इनका ज्ञान प्राप्त करेंगी साथ ही अन्य कलाओं के विषय में भी आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। आपका आचरण श्रेष्ठ तथा अन्य जनों के लिए अनुकरणीय होगा। आपको फूलों की सुगन्ध तथा जल में क्रीड़ा करने से प्रसन्नता की अनुभूति होगी। इसके अतिरिक्त अपनी बुद्धिमता से आप समाज में विख्यात होंगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।

जातकाभरणम्

आप पूर्ण रूप से पति को वश में रखेंगी। आपके समस्त मित्र सद्गुणों से युक्त होंगे तथा जलविहार करना आपका प्रिय शौक होगा। आप बहुत से भवनों के निर्माता होंगी अथवा बहुत से मकानों की स्वामिनी भी बन सकती हैं। आपका कद भी मध्यम रहेगा तथा वक्रगति से शीघ्र चलना आपको रूचिकर लगेगा। साथ ही संतति में पुत्रों की संख्या भी आपकी अल्प ही रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्र्धिनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोळल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार की सुखसम्पतियों का उपभोग करने वाली होंगी तथा ज्योतिष शास्त्र की आप ज्ञाता एवं श्रद्धालु रहेंगी तथा स्वभाव से भी सुशील रहेंगी। आप अपने सम्पूर्ण जीवन में चन्द्रकलाओं के समान क्षय वृद्धि को प्राप्त करती रहेंगी अर्थात् जीवन उतार चढाव से संघर्ष पूर्ण रहेगा। आप स्नेहाभिभूत होकर ही वश में की जा सकेंगी। दबाव या बलपूर्वक आपसे कोई कार्य नहीं करवाया जा सकेगा। मित्रों को आप पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगी फलतः मित्रों के प्रिय रहेंगे। आपकी रूचि जीवपालन, उद्यान तथा जलाशयादि के निर्माण में निरन्तर रहेगी।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्स्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

आप हमेशा सौभाग्य से युक्त रहेंगी तथा समस्त कार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी। साथ ही घर के सुख को प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगी। लेकिन आप अधिकांश समय भ्रमण तथा यात्रा पर ही रहेंगी। आपका लोगों से विनम्रता का व्यवहार रहेगा। फलतः सभी लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। सैक्स की प्रबलता से भी आप युक्त रहेंगी तथा उपकार करने वालो की आप पूर्ण कृतज्ञ रहेंगी। आप अपनी योग्यता तथा बुद्धिबल से राज्य में किसी भी उच्चाधिकार प्राप्त पद को सुशोभित करने में सक्षम रहेंगी। आप प्रयत्न पूर्वक सत्य तथा प्रियवाणी का प्रयोग करेंगी जो अन्य जनों को रूचिकर लगेगी।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलेंगी। साथ ही दया एवं करूणा का भाव भी आपके हृदय में अल्प ही रहेगा साहसिक कार्यों को करने में आप

सफल रहेंगी। छोटी छोटी बातों में क्रोध करना तथा उत्तेजित होना आपके स्वभाव का अंग होगा। अपने कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए आप किसी भी कार्य को करने के लिए तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी प्रवृति विवाद युक्त होगी अतः अन्य जनों से आपका वैमनस्य का भाव चलता रहेगा। अतः संयमपूर्वक अन्य जनों से वार्तालाप करना चाहिए।

आप उन्माद तथा प्रमेह से भी ग्रसित हो सकती हैं। आपका चेहरा सामान्य सुन्दर होगा तथा कटु शब्दों का आप कभी कभी प्रयोग करेंगी जिससे श्रोता आपसे प्रसन्न नहीं होंगे। अतः आपको मधुर शब्दों का यत्नपूर्वक प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मार्जार योनि में पैदा होने के कारण आप वीरता के गुणों से युक्त रहेंगी तथा अपने कार्यों को निपुणता से सम्पन्न करेंगी। आप मिष्ठान भोजन तथा मधुर पेय के अति शौकीन होंगी तथा इनके प्रयोग से आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। आप की प्रवृति निर्भीक होगी तथा बिना किसी भय के आप अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में कुटिलता या दुष्टता का समावेश हो जाएगा। अतः आपकी प्रवृति कठोरकर्मो की ओर प्रेरित होगी।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक

दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार, तृतीय प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होगे। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों तथा उपरोक्त योगों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही इन दिनोंमें शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखें। यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र चढाने चाहिए तथा सोमवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र, चांदी, श्वेत पुष्प, चावल आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव में कमी होकर शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य आठवें खाने में है। इसकी वजह से आप बहुत गुस्सा करेंगी। आप अधीर, पुरुषों के लिए लालायित, सच्चाई से आगे बढ़ने वाली, तपस्विनी होंगी। मरने के वक्त आपको भयानक रोग या कष्ट नहीं होगा। आपकी आयु की रक्षा होगी। बहन की ससुराल में रह कर चोरी न करें तो अच्छा फल मिलेगा। यदि आप चोरी न करें तो भाग्यशाली होंगी। आपके सामने किसी की मौत नहीं होगी। आप बीमार व्यक्ति के पास बैठें तो रोगी स्वस्थ हो जाएगा। आमतौर पर आपका जीवन सुखी रहेगा। आप सच्चे और नर्म स्वभाव की होंगी। कभी तिरस्कृत भी होना पड़ सकता है। आप हर काम करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। आपके धन का दूसरे लोग भी उपयोग करेंगे। आपका साधू स्वभाव होगा तो अपने लिये किये कार्यों को संसार को समर्पित करने की आप में भावना रहेगी।

यदि आपने पुरुषों से झगड़ा किया, माता-पिता, बहन-भाई को धन के लिए तंग किया, चोरी ठगी की नियत रखी, दक्षिण दिशा के मुख्य दरवाजे वाले मकान में रिहाईश की तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से गुप्त रोग से दुःखी/अस्वस्थ रहेंगी। सरकारी विभाग से परेशानी आर्थिक स्थिति खराब और आंखों की रोशनी कम हो सकती है। गंदी सोहबत में पड़ कर आप तबाह हो जाएंगी। आप पति के अलावा दूसरे पुरुष से संबंध रखेंगी तो आपके भाग्य में धोखा लिखा है। जहरीले जीव-जंतुओं से सावधान रहें ये आपके मौत के कारण हो सकते हैं। आपको पीठ में दर्द, रक्तचाप की बीमारी हो सकती है। आपको आर्थिक नुकसान की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. रसोई को अपवित्र न बनायें।
2. परपुरुष से अनैतिक संबंध न रखें।

उपाय :
1. बड़े भाई या गाय की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा सातवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको सुंदर पति का सुख प्राप्त होगा। आप नेता, वकील, व्यापारी बन सकती हैं। खेती की जमीन से भी लाभ मिलेगा। मध्यम पढ़ाई का योग है। आपके घर में जल तथा दूध की व्यवस्था हमेशा रहेगी। आप स्वयं लक्ष्मी अवतार होंगी। आपकी योगाभ्यास, शायरी और ज्योतिष विद्या में रुचि होगी। आप आस्तिक और ईश्वर भक्त होंगी। आप सरकारी सर्विस में होंगी तो प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी।

उत्तम वाहन सुख मिलेगा। दुनियादारी से मोहभंग हो जाएगा। आध्यात्म का फल श्रेष्ठ रहेगा। आप अपने पराक्रम से मिट्टी से सोने पैदा कर सकती हैं। धन-दौलत, जेवरात आदि की बरकत होगी। आपको सरकार से या किसी संस्था द्वारा सम्मान मिलेगा या आप विदेश में अधिक समय व्यतीत करेंगी। विदेश की यात्रा करेंगी। ईश्वर की भक्ति प्राप्त होगी। आपको जल से संबंधित चीजों से लाभ होगा। आप नये विषयों की खोज भी करेंगी।

यदि आपने परपुरुष से अनैतिक संबंध रखे, भूत-प्रेत की सिद्धि की, मादक द्रव्यों का प्रयोग किया। माता/सास या पति से झगड़ा किया, 24-25 वर्ष आयु में विवाह हुआ तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से 2 वर्ष तक माता/सास का स्वास्थ्य ढीला रहेगा या माता/सास से अलग रहना पड़ सकता है। विवाह के बाद माता/सास के सुख में कमी आ सकती है। माता/सास का विरोध करना आपके लिए अशुभ होगा। आपको 24वें वर्ष में विवाह करना भावी संतान के लिए प्रतिकूल होगा। आपका चाल-चलन संदेहपूर्ण होगा। दूध और पानी को बेचने से संतान सुख में बाधा हो सकती है। आपके पति और आपकी माता का आपस में झगड़ा रहेगा, पति से संबंध विच्छेद या दूरी का भय रहेगा या हो सकता है। मादक चीजों-द्रव्यों के प्रयोग से आपकी बर्बादी होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. दूध-पानी माल न बेचें।

उपाय :

1. दूध-पानी का दान करें।
2. विवाह के बाद पति के घर में जाने से पहले पति के घर में आपके वजन के बराबर चावल या दरिया का पानी कायम होना चाहिये।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा। 45 वर्ष की आयु तक संतान सुख के लिए समय मध्यम रहेगा। आपकी कमांडिंग बरकरार होगी। अगर आप सरकारी सेवा में रत होती हैं तो सेना या पुलिस में उच्च पद मिलेगा। आप एक जानी-मानी समाज सेविका होंगी। आप अवश्य ही धनवान होंगी। आप अच्छे या बुरे तरीके से भी धन कमा कर बड़ी जायदाद की मालकिन बनेंगी। 32 वर्ष से 64 वर्ष आयु तक खूब धन का आगमन होगा। आप राज सुख से युक्त या शाही जीवन बिताएंगी। आप पोते-पड़पोते का सुख भोगेंगी। आपके जन्म के बाद, आपके पिता/ससुर की माली हालत अच्छी होने की उम्मीद है। आप अपनी जायदाद बनाएंगी और आप कई मकान की मालकिन होंगी। आप अपनी मेहनत से दौलत पैदा करेंगी। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। गृहस्थ जीवन

आराम से गुजरेगा। आप में पूरी दिलेरी रहेगी और आपका हौसला बुलंद रहेगा। आपके यहां कई मांगलिक कार्य होंगे। मिला-जुला कर आपका जीवन बहुत सुखी रहेगा।

यदि आपने पुलिस सेना विभाग से झगड़ा किया, समाज विरोधी कार्य किये, परिवार के लोगों के साथ झगड़ा किया, नमक या नमकीन चीजों का अधिक प्रयोग किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से 22वां वर्ष खुद के लिए कष्टकारक होगा। आप खानदान को तोड़ने वाले होंगी। आप सोना बेचेंगी तो इसका बुरा असर औलाद पर पड़ेगा। आपकी बदनामी हो सकती है। चोरी का लांछन भी लग सकता हैं कभी जेल भी जाना पड़े, ऐसी आशंका है या आपको जेल विभाग में नौकरी करनी पड़ सकती है। ननिहाल में रहना आपको मंदा फल देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सोना न बेचें।
2. दूध उबल कर गैस चूल्हे/चूल्हे या अंगीठी पर गिर कर, न जले।

उपाय :
1. हिरण की पालना करें।
2. काने-काले, गंजे व्यक्ति की सेवा करें।

बुध

आपकी कुंडली में नौवे घर में बुध पड़ा है। इसकी वजह से संगीत या ज्योतिष में रुचि हो सकती है। आप परिवार का भरण-पोषण करती रहेंगी। आपको अपना भाग्य बनाने में अधिक समय लगेगा। धन-दौलत में बरकत होने में समय लगेगा फिर भी आप खुश रहेंगी। आपके काम-धन्धे पर तथा राजदरबार में आपका अच्छा असर रहेगा। जन्मस्थान से दूर विदेश तक की यात्रा करनी पड़ सकती है परंतु विदेश प्रवास का फल भी अच्छा या अनुकूल रहेगा।

यदि आपके घर में गाने-बजाने का सामान और रेडियो-घड़ियां आदि खराब पड़े होंगे, जुबान में तोतलापन, हरे रंग की चीजें अधिक होंगी या साधू-महात्मा आदि से ताबीज़ लेकर रखा तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपके काम से आपके पिता/ससुर की बदनामी हो सकती है। धोखेबाजी से कदम-कदम पर मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं। गृहस्थ जीवन और औलाद से संबंध में खराबियां पैदा होंगी। मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। अधर्म के कार्य करेंगी तो भाग्य में भी रुकावटें आती रहेंगी। जीवन में उत्थान-पतन से तंग आ जाएंगी। जीवन के हालात से तंग आकर साध्वी बनने की इच्छा होगी परंतु साध्वी बनना अच्छा नहीं होगा। आप पिता/ससुर के लिए मनहूस रहेंगी। पिता/ससुर के सुख का अभाव हो सकता है। आप अपने पिता/ससुर की आयु पर भारी हैं। पिता/ससुर के नौकरी-व्यापार में बाधा हो सकती है। जलील और खराब काम करना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. जल-भभुतिया, धागे-ताबीज़ आदि न रखें।
2. मकान की सीढ़ियां गिरा कर दुबारा न बनायें बल्कि उसकी मरम्मत करें।

उपाय :
1. गऊ ग्रास देवें।
2. लोहे की गोली पर लाल रंग करके पास रखें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति आठवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दीर्घायु, धनवान रहेंगी। आपकी और आपके पिता/ससुर की लंबी आयु होगी। आप चरित्रवान, शील स्वभाव से अच्छी, विवेकी एवं पूरे परिवार की विपत्ति को अपने सिर पर लेने वाली होंगी। धन और आयु वृद्धि होती रहेगी। अधिक कठिनाई में ईश्वर आपकी मदद करेंगे। आप आध्यात्मिक एवं गुप्त विद्या की माहिर होंगी।

यदि आपने दूसरे के धन का उपभोग किया, भलाई करने वाले का बुरा किया, दीन-दुःखियों को सताया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपको अपने पिता/ससुर से हमेशा दूर रहना पड़ सकता है। आप पिता/ससुर से अलग रहे तो आपका समय खराब होगा। आप अफवाहों की शिकार बनेंगी। आप यदि साध्वी हो जाएं तो दुःखी रहेंगी। आपके परिवार में कई प्रकार की मुसीबतें पैदा हो सकती हैं। कभी-कभी आपके हौसले मंदे पड़ जाएंगे। आपको मूत्र रोग आदि बीमारी या मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। आपको बार-बार जन्म लेना पड़ सकता है। मोक्ष मिलने की उम्मीद कम है। आपके कामों में अड़चनें आएंगी। आपके शरीर में सुस्ती रहेगी या हर समय मन बुझा-बुझा सा रहेगा। कोई दुर्घटना या बड़ी मुसीबत का योग बन सकता है। आप अपने जीवन में कुछ ऐसे कार्य कर बैठेंगी जिससे आपको बहुत पछतावा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. आवारा साधू का साथ न रखें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :
1. शरीर पर सोना पहनें।
2. दही, आलू, घी धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र सातवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से यह खुलासा हो रहा है कि आपकी माता/सास और पति में मां-पुत्र जैसा प्यार रहेगा। आपके घर में माया का अच्छा प्रभाव रहेगा। लक्ष्मी की बरकत कभी भी कम नहीं होगी। आपकी पच्चीस वर्ष की उम्र तक ही परेशानी रहेगी। इसके बाद समय जीवन भर सुख पूर्ण रहेगा। आपके कमाए हुए धन से पति पक्ष को लाभ होगा। आप विवाह में उपयोगी चीजों का कार्य, जैसे टैंट हाउस, ब्यूटी पार्लर, रेडिमेड गारमेंट्स चलाएं तो अच्छा लाभ होगा। आपको कृषि योग्य जमीन भी मिलेगी। आपका अच्छा भवन एवं वाहन सुख मिलेगा। काले पुरुष से लाभ होगा। 37 वर्ष की आयु तक पति सुख खूब मिलेगा। आपको जद्दी घर से दूर समुद्र की यात्रा द्वारा कमाई होगी। आपके अपने जन्म स्थान के शहर/गांव में रहकर अधिक लाभ नहीं मिलेगा। आप संसार में कहीं भी रहें मरने के समय जद्दी घर पर वापस आ जाएंगी।

यदि आपके पति का रंग गोरा हुआ, भाई/देवर के साथ साझेदारी की, चाल-चलन खराब रखा तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपके काम धंधे में भाई-बंधु, यार-दोस्त आपकी संपत्ति को लूटते रहेंगे। आपके कारोबार में यही लोग रुकावट डालेंगे। ससुराल वालों को कारोबार में साथ न रखें। वैवाहिक संबंध में तथा संतानोत्पति में गड़बड़ी रह सकती है। चमड़े के पर्स में रुपये-पैसे न रखें। आपके पति और आपकी माता की नहीं बनेगी या वह ग्रहचाल के कारण इकट्ठे नहीं रह पायेंगे। परपुरुष से इश्क के बुरे असर होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सफेद गाय की पालना या सेवा न करें।
2. बिल्ली की जेर चमड़े के पर्स में न रखें।

उपाय :
1. बिल्ली की जेर कंबल के टुकड़े में रख कर अपने पास रखें।
2. कांसे का बर्तन दहेज में जरुर लेवें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि नौवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप लोगों पर परोपकार करेंगी तथा इससे अच्छा लाभ भी आपको मिलेंगे। आप बड़े परिवार की सदस्या होंगी। आप भाई एवं मित्रों से सहयोग प्राप्त कर धनवान बनेंगी। आपको चलते-फिरते कामों से अधिक लाभ मिलेगा। आपको संतान का सुख होगा परंतु संतान के सुख प्राप्ति में विलंब हो सकता है। आपके पति धनी परिवार से होंगे। आपके पास प्रचुर मात्रा में धन रहेगा। आप धन के विषय में लापरवाह रहेंगी। आप उदार प्रवृत्ति की, जागीरदार, सदा सुखी होंगी। माता-पिता/सास-ससुर का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप विद्वान होंगी। आप पर कभी भी कर्ज

का बोझ नहीं पड़ेगा। आपका भाग्य अपने माता-पिता/सास-ससुर के भाग्य से अच्छा होगा। आपके पति भाग्यवान और अमीर खानदान के होंगे। आप पैसे के प्रति बहुत मोह नहीं करेंगी। तीर्थ यात्रा करेंगी जिससे भाग्योन्नति होगी। उससे अधिक शुभ फल प्राप्त होते रहेंगे। आप धार्मिक विचार वाली होंगी।

यदि आपने दूसरों के माल पर बुरी नजर रखी, तंबोला आदि खेला, बुरे काम किये, लोहा/मशीनरी के कार्य किये, घर में शीशम का पेड़ हुआ, जब आपके नाम 3 मकान बन जायें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप ब्याज का धंधा करें तो नुकसान होगा। आपके दिल में दूसरों से बदला लेने की भावना रहती है। अग्निकाण्ड की शंका है। आपको सांस या दमे की बीमारी हो सकती है। संतान सुख में विघ्न या पुत्र-पौत्र संतान की चिंता रहेगी। मंदे कामों से बदनामी भी हो सकती है। आंखों की दृष्टि खराब हो ऐसी आशंका है। अमीरों से धन लुटा कर गरीबों में बांटना, ऐसी आपकी सोच रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दूसरों के माल पर बदनीयत न करें।
2. घर की छत पर ईंधन-चौगाठ आदि न रखें।

उपाय :
1. माथे पर केसर का तिलक करें।
2. घर के अंत में अंधेरा कमरा बनायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से 21 वर्ष के पहले या 29वें वर्ष विवाह हो जाए तो बुरे फल की आशंका बनती है। आपका संबंध राजनीतिज्ञों से रहेगा। अगर आप सरकारी विभाग में सेवारत हैं तो सरकारी विभाग में पदोन्नति एवं पुरस्कार मिलने की आशा है। धन और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आप बिजली के काम, पुलिस या जेल विभाग की नौकरी से आजीविका चला सकेंगी। शेयर/लाटरी में दिवालिया हो सकती हैं। आपको कन्या संतान का सुख विवाह के बाद जल्द ही परंतु पुत्र सुख में विलंब हो सकता है। विदेश की यात्रा भी हो सकती है। आप जन्म स्थान से बाहर रह कर ही सुखी रह सकेंगी। आप अपने धन पर यदि नियंत्रण नहीं रख सकीं तो सगे-संबंधी निश्चित रूप से धन की क्षति करने में पीछे नहीं रहेंगे।

यदि आपने अपने पास दोहता रखा या कुत्ता पाला, समाज में बदनामी के कार्य किये, पति से मार-पीट की तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से भाई-बन्धु आपकी संपत्ति खा जाएंगे। भाई द्वारा भी आपके धन का दुरुपयोग हो सकता है। आपको साझेदारी के व्यवसाय, बिजली के सामान की

दुकानदारी या व्यवसाय से हानि की आशंका है। पुलिस, जेल विभाग की नौकरी में धोखा-धड़ी करेंगी तो आपकी आयु क्षीण होगी। पति से मन-मुटाव रह सकता हैं इसका कारण आपका शंकाग्रस्त रहना बताता है। पति से जुदाई, मुकद्दमेबाजी हो ऐसी शंका है। आपको राजदरबार से परेशानी या काम काज में रुकावट नहीं आएगी। जीवन में आपकी बदनामी भी हो सकती है। जीवन में संघर्ष रहेगा। पारिवारिक दशा बहुत अच्छी नहीं रहेगी। धन-संपत्ति एवं पति के सुख में अभाव रह सकता है। कोई गर्भपात संभव है। पति को सिरदर्द की बीमारी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर में कुत्ता न पालें।
2. पुलिस व जेल विभाग में काम न करें।

उपाय :

1. घर में 2 चांदी की ईंटें कायम करें।
2. नारियल का दान करें।
3. चांदी की डिब्बी में चांदी का चौरस टुकड़ा रख कर गंगा जल भर कर रखें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पहले खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप सुखी, धनी, मेहनती होंगी। आपकी तरक्की अधिक तबदीली कम रहेगी। आप अपने पिता/ससुर के लिए वरदान सिद्ध होंगी। आप पिता/ससुर की सेवा करेंगी। आप सरकारी विभाग में सेवारत होंगी तो अच्छी सरकारी आफिसर हो सकती हैं। यात्रा का आदेश पत्र प्राप्ति के बावजूद यात्रा न होगी। आपकी आजीविका निरंतर चलती रहेगी। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में भी हो सकता है। आपको शक्ति मिलेगी। आपके भाग्य में शुभ फल प्राप्त होगा। पति का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। माता/सास पर भी अच्छा ही प्रभाव रहना चाहिए। परंतु यह कोई जरूरी नही है कि माता/सास पर शुभ प्रभाव ही पड़े। आप लाखों का लेन-देन करेंगी परंतु धन जमा होने में आशंका है। आप गुरु-पिता की सेविका होंगी।

यदि आप अपने पिता/ससुर से दूर रहे, रिश्तेदारों को बर्बाद करने की कोशिश की या मकान को बिना कारण बेचा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से जहां आपका जन्म होगा या रिश्तेदार तबाह हो जाएंगे। आपके मन में काल्पनिक फिक्र पैदा हो सकती है। पुत्र को कोई कष्ट उत्पन्न होगा। आप पर बुरा असर पड़ सकता है। आपकी गृहस्थी पर कुछ बुरा प्रभाव पड़े ऐसी आशंका है अर्थात् नाभि के नीचे की बीमारियां होंगी या आप को गुप्तांग में बीमारी हो सकती है। आपकी लंबी या विदेश की यात्रा बीच में छोड़ कर वापिस आना पड़ सकता है। आपको संतानोत्पत्ति की चिंता बनी रहेगी। पोते के जन्म के बाद सेहत खराब हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और

उपाय करें।

परहेज :

1. बकरी न पालें या बकरी की सेवा न करें।
2. गली के आखिर के मकान में रिहाईश न करें।

उपाय :

1. लाल रुमाल पास रखें।
2. काले-सफेद कुत्ते की सेवा करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि तृतीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि छठे भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि छठे भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की अवश्यकता है। कार्य स्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

14 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बन रहे हैं। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तिओं को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

14 मई के बाद कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी पर आपका धन व्यय हो सकता है। किसी को ऋण न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी।

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भधान के लिए समय शुभ चल रहा है। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद आपको सामाजिक पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति

होगी। छोटे भाई-बहनों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा एवं बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

14 मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक रोग, सांस या पेट से संबंधित रोग हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्ति के इच्छुक विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राएं कराते रहेंगे। नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक गतिविधियों तथा तीर्थ यात्रा के भी योग बन रहे हैं। 14 मई के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तुओं का दान दें।
- माता-पिता, गुरु, साधू-संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे अतः आप दुष्ट मनुष्यों की संगति को प्राप्त करेंगी तथा व्ययाधिक्य भी रहेगा जिससे आप मानसिक रूप से असन्तुष्ट रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य काफी परिश्रम करने के पश्चात भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे। धर्म के प्रति भी इस समय आपकी आस्था में न्यूनता आएगी जिससे देवता एवं ब्राहमणों का आप उचित सम्मान नहीं करेंगी। साथ ही अन्य कई प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकती हैं। इस समय आपके मित्रों एवं सम्बन्धियों से परस्पर सम्बन्ध तनावपूर्ण रहेंगे तथा नौकरी या व्यापार सम्बन्धी कार्यों में भी आप अनावश्यक बाधाएं प्राप्त करेंगी।साथ ही शत्रु पक्ष भी इस मास आपका प्रबल रहेगा फलतः उनकी ओर से भी आप चिन्तित रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप जिस भी कार्य को प्रारम्भ करेंगी उसमें परिश्रम पूर्वक ही सफलता मिल सकेगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त जनित दोषों से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय रूधिर विकार का भी योग बनता है अतः सोच-समझ कर सावधानीपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें तथा शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। आपके पराक्रम में इस समय वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष निर्बल होगा एवं लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। साथ ही नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगी जिससे आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न तथा सुदृढ़ रहेंगी। सामाजिक जनों,बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपसी सम्बन्धों में भी प्रगाढ़ता रहेगी। इस मास में आपका भाग्य भी प्रबल रहेगा तथा जिन शुभ कार्यों की सिद्धि करने में विलम्ब हो रहा हो वे इसी मास में पूर्ण होंगे। साथ ही अन्य कार्यों में भी आप सफलता अर्जित कने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से आप अनुकूल सहयोग प्राप्त तथा वे आपसे प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा पुरूष वर्ग से भी आपको सकारात्मक सहयोग प्राप्त होगा। इस समय आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी करेंगी जिससे आप सुखानुभूति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप धर्मानुपालन में भी तत्पर रहेंगी एवं समाज तथा बन्धु वर्ग से प्रतिष्ठा अर्जित करेंगी।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सुख एवं शान्ति प्रदान करने वाला होगा। इस समय आप अपने पूर्ण उत्साह से धनार्जन करेंगी एवं अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सफल रहेंगी। साथ ही समाज में भी आपके यश में वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग में आप प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी एवं उनसे आपके मधुर सम्बन्ध स्थापित होंगे। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग का आपको संरक्षण प्राप्त होगा जिससे आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्य सिद्ध होंगे। साथ ही इनसे आपको उचित सहयोग भी प्राप्त होगा। इस समय आप मिष्ठान्न का उपभोग अधिक मात्रा में करेंगी। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा फलतः शारीरिक शक्ति में वृद्धि होगी। इस समय आप शत्रुओं को पराजित करने में भी सफल रहेंगी। अतः उनसे आप निश्चिन्त रहेंगी। पति से भी आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख अर्जित करेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों से भी आप धनार्जन करेंगी। इस प्रकार आपका सम्पूर्ण मास सुख एवं प्रसन्नतापूर्व व्यतीत होगा।

साथ ही इस मास में आप पुरुष वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा तथा सम्पूर्ण मास प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगी। धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा के भाव का प्रदर्शन करेंगी एवं समाज से पूर्ण यश तथा सम्मान अर्जित करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप उत्तम फलों को प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा अपने पराक्रम एवं प्रभाव से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में भी सफल रहेंगी। इस समय समाज में आपके यश एवं सम्मान में आशातीत वृद्धि होगी जिससे आप मानसिक रूप से अत्यंत ही प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं पूजन का भाव उत्पन्न होगा तथा अन्य जनों की भलाई के लिए भी कार्य करने के लिए तत्पर रहेंगी ।आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं उच्चाधिकारी वर्ग का आप आश्रय प्राप्त करेंगी एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल बनाएंगी। समाज, मित्र तथा बन्धु वर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा भाइयों से भी आप अनकूल सहयोग एवं सहायता प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को पूर्ण करने में भी आप समर्थ रहेंगी।

साथ ही इस मास में अन्यत्र भी शुभ फलों में वृद्धि होगी जिसके प्रभाव से आपके शरीर में स्वस्थता, मन में संतोष तथा बुद्धि में वृद्धि होगी। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ होगा एवं प्रसन्नतापूर्वक आप इसे व्यतीत करेंगी।

मई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप मिलेजुले फलों को प्राप्त करेंगी। अतः आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय आपके शत्रु भी बलवान रहेंगे तथा समय समय पर आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न

करेंगे। पारिवारिक जनों से भी आपके विशेष मधुर सम्बन्ध नहीं होंगे जिससे परिवार में अशान्ति का वातारण बनेगा। व्यापार या कार्यक्षेत्र में इस मास में किसी भी प्रकार से न्यूनता आ सकती है। या कार्य क्षेत्र में परिवर्तन या अलगाव हो सकता है। समाज में मित्र या बन्धुवर्ग के मध्य भी आप तनावपूर्ण सम्बन्ध रखेंगी। जिससे मान प्रतिषठा में अल्पता का आभास होगा। इसके साथ ही शरीर में रूग्णता तथा अनावश्यक रूप में धन हानि का योग भी बनता है।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी सम्पन्न होंगे। जिसके द्वारा आप उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्राप्त करेंगी तथा दूर समीप की यात्रा भी सम्पन्न कर सकती हैं। साथ ही आपको नवीन वस्त्र या आभूषण आदि की भी प्राप्ति होगी तथापि मध्यम रूप से आपका यह मास व्यतीत होगा।

जून 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में वृद्धि होगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। साथ ही आप संततिपक्ष से सुख प्राप्त करेंगी तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी कर सकती हैं। आपके प्रभुत्व को इस समय सभी समाजिक जन स्वीकार करेंगे तथा समाज से आपको पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही आप अच्छे समाचारों को भी प्राप्त करेंगी तथा अपने सभी शुभ एवं सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा यत्नपूर्वक इनका सम्मान तथा पूजन करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग के आश्रय से आप लाभार्जन भी कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त आपको अपनी विगत आशाओं में भी सफलता प्राप्त होगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पुरूष वर्ग से सहयोग तथा लाभार्जन करने में भी सफल रहेंगी तथा पति का सुख एवं सहयोग भी पूर्ण रूप से प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी। इस प्रकार आपका यह मास अत्यंत ही शुभ एवं आनंददायक रहेगा।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को प्राप्त करेंगी। आपके शरीर में इस समय रूग्णता के कारण निर्बलता रहेगी तथा शत्रु भी प्रबल होंगे एवं आपके लिए अनावश्यक रूप से भय तथा चिन्ता उत्पन्न करेंगे। इससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगी। आपके घर में इस समय चोरी आदि भी हो सकती है अतः सावधान रहें। यदि आप कहीं कार्य कर रही हों तो आपको अपने उच्चाधिकारियों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अन्यथा आप दंडित हो सकती हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे साथ ही धन का भी आप अनावश्यक रूप से व्यय करेंगी। इस मास आप किसी कठोर कार्य को करने के लिए भी प्रेरित हो सकती हैं। जिससे बाद में आपको पछताना पड़ेगा अतः कोई भी कार्य

आपको सोच समझ कर सम्पन्न करना चाहिए। आपके मित्रों तथा सम्बन्धियों से सम्बन्धों में तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही समाज में आपके सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आपकी आशाएं भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगी। इससे आप पति या पुरूष वर्ग से लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा स्वबुद्धि चातुर्य से अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगी एवं किसी धार्मिक उत्सव को सम्पन्न करेंगी। इस प्रकार यह मास आप मध्यम रूप से ही व्यतीत करेंगी।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप कठिनाइयों की अनुभूति करेंगी। बन्धु वर्ग से इस समय आपके सम्बन्ध तनावपूर्ण रहेंगे एवं इनसे आप कष्ट प्राप्त करेंगी। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी प्रबल रहेगा जिससे उनकी ओर से आप चिन्तित एवं भयातुर रहेंगी। आपके उत्साह में भी इस मास न्यूनता परिलक्षित होगी तथा व्यय भी आवश्यकता से अधिक होगा जिससे आप आर्थिक रूप से परेशानी प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा लालची प्रवृति की प्रधानता रहेगी। स्वबन्धुवर्ग एवं मित्रों से आपके तनावपूर्ण संबंध रहेंगे जिससे मित्र गण भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे अतः आप स्वयं को मानसिक रूप से अस्वस्थ महसूस करेंगी। इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से भी विवाद या संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होगी। अतः सावधानीपूर्वक समय के अशुभ प्रभाव को मध्य नजर रखते हुए अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी तथा पित्तजनित दोषों से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगी एवं रक्त सम्बन्धी विकार से भी कष्टानुभूति करेंगी। इसके अतिरिक्त शारीरिक सुर क्षा का ध्यान रखें तथा दुर्घटना से भी बचें। इस समय अग्नि से भी किसी प्रकार की हानि हो सकती है। इस प्रकार यह मास आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक रहेगा।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

आपका यह मास मध्यम रूप से व्यतीत होगा तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार से फलों की प्राप्ति होगी। इस समय शत्रु पक्ष से आप काफी भयभीत एवं चिन्तित रहेंगी तथा घर में चोरों के द्वारा किसी प्रकार से हानि की भी सम्भावना रहेगी। इस मास में आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे धनाभाव की स्थिति उत्पन्न होगी एवं धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में न्यूनता का भाव आएगा इसके साथ ही विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। जिससे शारीरिक बल में अल्पता का आभास होगा। इस मास में आप दूर या समीपस्थ किसी स्थान की यात्रा भी कर सकती हैं। इस समय सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप अपने को असमर्थ समझेंगी जिससे आपके मन में तनाव उत्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय होगा अतः सोच समझकर ही कार्यों को सम्पन्न करें।

लेकिन इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगी जिससे आप पति तथा संतति से पूर्ण सुखी एवं प्रसन्न रहेंगी। साथ ही इस समय आप नवीन वस्त्र या आभूषणों को भी प्राप्त कर सकती हैं जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आपके लिए शुभ फल अधिक होंगे परन्तु अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय धनार्जन पूर्ण मात्रा में होगा तथा आपके उच्चाधिकारी वर्ग या अन्य जन आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगे। आपके घर में इस समय कोई धार्मिक कार्य भी सम्पन्न होगा जिससे आपके मन में धर्म के प्रति श्रद्धा में वृद्धि होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी आप यथोचित सम्मान तथा पूजन करेंगी। संतति पक्ष से भी आप प्रसन्न रहेंगी एवं उनसे पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्य भी आप प्रारम्भ करेंगी। साथ ही इस समय यात्रा से भी लाभार्जन कर सकती हैं। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप मान सम्मान अर्जित करेंगी तथा मित्र एवं बन्धु वर्ग से भी आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे। इस प्रकार आप सर्वत्र माननीय एवं प्रतिष्ठित महिला समझी जाएंगी।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी होंगे। अतः आप किंचित मात्रा में वायु द्वारा उत्पन्न रोग से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी धन हानि की संभावना रहेगी अतः कार्यों को बुद्धिमतापूर्वक सम्पन्न करें।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

आप इस मास में शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में ही होंगे। अतः इसके शुभ प्रभाव से आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी तथा मान एवं प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं वे आपसे प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों की भलाई के कार्यों को भी आप यत्नपूर्वक सम्पन्न करेंगी तथा उनसे यथोचित सम्मान एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी साथ ही आपके परस्पर सम्बन्ध भी मधुर रहेंगे। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सफल होंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी तथा इनकी सेवा एवं पूजन में तत्पर रहेंगी। संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख अर्जित करेंगी तथा बन्धु एवं मित्र वर्ग में आप प्रतिष्ठत एवं सम्माननीया रहेंगी इसके अतिरिक्त आपकी अधिकांश असफल आशाएं भी इस समय पूर्ण होगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगी।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ आपको अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः वायु से उत्पन्न रोगों से पीड़ित रहेंगी। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको धन सम्बन्धी हानि हो सकती है। अतः बुद्धिमता से आप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत शुभ एवं सुखदायक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल होंगी तथा सौभाग्य से भी युक्त रहेंगी। पति से या पुरूष वर्ग से आपको लाभ एवं उचित सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी यथा सम्भव सिद्ध होंगे। जिससे आप मानसिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस मास में आप शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगी साथ ही अध्ययन या ज्ञानार्जन में भी आप रूचिशील रहेंगी। मित्र तथा बन्धुवर्ग का आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा इनके मध्य आप उचित मान प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगी। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगी एवं किसी प्रकार से चिन्ता नहीं होगी। साथ ही इच्छित वस्तुओं की भी आप प्राप्ति करेंगी। इसके अतिरिक्त विगत असफल आशाओं में भी आपको सफलता मिलेगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा विद्याध्ययन में भी आप उन्नति करेंगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र तथा स्वर्णादि के आभूषणों को भी प्राप्त कर सकती हैं। इस प्रकार आप इस मास को अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगी।

इस वर्ष मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु छठे भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारणआप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमे आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगेउसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा,जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार-चढाव की संभावन बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चो पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते है।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

02 जूनके बाद आपके बच्चे के लिए समय अच्छा हो रहा है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपकी छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिएवर्ष के पूर्वार्द्ध में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ मे नहीं लगेगापरन्तु 02 जूनसे गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने

जीवनसाथी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप मध्यम रूप से व्यतीत करेंगी अर्थात शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों के सम्पर्क में आएंगी जिससे आप धन हानि की संभावना रहेगी। शारीरिक रूप से भी आप पूर्ण स्वस्थ नहीं रहेंगी तथा निर्बलता की अनुभूति करेंगी। अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए आप पूर्ण परिश्रम करेंगी फिर भी अल्प मात्रा में ही आपको सफलता मिलेगी। इससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में उपेक्षा का ही भाव रहेगा साथ ही अन्य प्रकार से भी आपके धन हानि के योग बनेंगे। अपने मित्रों एवं सम्बन्धियों से आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा जिससे परस्पर उचित सहयोग प्राप्त करने में आप असमर्थ रहेंगी। आप अपने कार्य क्षेत्र में इस समय विघ्न बाधाएं प्राप्त करेंगी तथा शत्रु पक्ष से भी नित्य भयभीत एवं चिन्तित रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके द्वारा किए गए अधिकांश कार्य इस मास अपूर्ण ही रहेंगे।

परन्तु इस समय अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगी तथा बुद्धि में भी निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी जिससे धन लाभ भी अनूकूल होगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप सुखार्जन कर सकेंगी तथा समाज में कीर्ति प्राप्त करेंगी।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस समय आप शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगी तथा मानसिक रूप से भी शान्त रहेंगी। साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा अपने शत्रुओं का दमन करने में आप सफल रहेंगी एवं लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे। इस समय नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आय के अन्य स्त्रोंतो से आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करेंगी। इस मास आपके भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे तथा ऐसे कार्यों की भी सिद्धि होगी जिनकी आप दीर्घ समय से प्रतीक्षा कर रहीं थीं। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर सम्बन्ध होंगे तथा उनसे पूर्ण मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी इस मास सफलता प्राप्त करेंगी राज्य या सरकार के उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।अतः उनसे आप पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्राप्त करेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी एवं बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा सम्पूर्ण मास प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी। इस समय धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी। इसके अतिरिक्त समाज एवं समाजिक जनों में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं अनुकूल रहेगा।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह एवं परिश्रम द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगी तथा समाज से यश एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। बन्धु वर्ग एवं मित्रों से आपके सम्बन्धों में मधुरता रहेगी तथा उनसे आप उचित सहयोग तथा सम्मान प्राप्त करेंगी। सरकार के उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा वे लोग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न का भी अधिक मात्रा में प्रयोग करेंगी तथा शरीर से आप पूर्ण स्वस्थ्य रहेंगी। आपके शत्रु इस समय आपसे कमजोर रहेंगे अतः उन्हें पराजित करने में आप सफल रहेंगी। पति से आप पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा व्यापारादि कार्यों में भी आप उचित लाभार्जन करके धन प्राप्त करेंगी। इस प्रकार यह मास आपके लिए शुभ लाभदायक रहेगा।

साथ ही इस मास में आप पुरूष वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभार्जन करने में भी सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन लाभ होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती हैं। इसक अतिरिक्त समाजिक जनों के मध्य भी आप माननीया समझी जाएंगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करेंगी तथा विविध प्रकार के सुख संसाधनों को प्राप्त करने में भी समर्थ सिद्ध होंगी। साथ ही समाज तथा समाजिक जनों के मध्य यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगी एवं इनसे आप उचित आदर एवं सम्मान भी प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना विद्यमान होगी तथा अवसरानुकुल आप इनको श्रद्धा तथा आदर प्रदान करेंगी। साथ ही दूसरे लोगों की भलाई के कार्यों को करने में भी आप तत्पर होंगी। शारीरिक रूप से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होगा। उच्चाधिकारी वर्ग का आश्रय भी आप प्राप्त करेंगी एवं उनके द्वारा समाज में प्रतिष्ठा होगी। मित्र वर्ग तथा भाई बहिनों से आपको इस मास उचित सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप सरकार या अपने वरिष्ठ अधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगी जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। इस समय आप दूर या समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र एवं स्वर्णादि के आभूषण भी प्राप्त कर सकती हैं। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नतादायक रहेगा।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी विशेषतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में होंगे। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार

से आपको शारीरिक कष्टानभूति होगी। इस समय आपका शत्रुपक्ष भी प्रबल रहेगा फलतः इनके कारण भी आप चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी। पारिवारिक जनों से आपके संबन्धों में तनाव का भाव विद्यमान रहेगा अतः परिवार में अशान्ति रहेगी जिससे आप मानसिक रूप से भी दुःखी होंगी। इस समय आपके व्यापारिक या आजीविका सम्बन्धी कार्य में न्यूनता रहेगी एवं आपका कोई कार्य छूट भी सकता है। साथ ही अन्य सामाजिक जनों से आपका वाद विवाद भी होगा जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी तथा मान सम्मान में भी अल्पता आएगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि के योग बन सकते हैं तथा शरीर भी किसी रोग से ग्रसित हो सकता है।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में आपको शुभ फल भी प्राप्त होंगे। जिसके प्रभाव से आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी बुद्धि में भी निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी जिससे आप अपने बुद्धि बल से लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धार्मिक भावना का उदय भी आपके मन में होगा तथा किसी धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए आप उद्यत होंगी।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप विशेष शुभ फल तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता बढ़ेगी तथा इसी बुद्धि बल से आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इस मास में आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगी एवं पुत्र सुख भी आपको प्राप्त होगा। साथ ही आपकी प्रभुता में वृद्धि होगी तथा सभी पारिवारिक एवं समाजिक लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे। आप इस समय शुभ कार्य सम्पन्न करेंगी तथा शुभ समाचार भी आपको प्राप्त होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा यत्नपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इसके साथ ही इस मास में आप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से उचित लाभ अर्जित करेंगी एवं समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस प्रकार मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी एवं अपनी बुद्धिमता से कई महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। धर्म के अनुपालन में आपकी श्रद्धा रहेगी तथा इस समय किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने में भी सफल हो सकेंगी। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक कष्टानभूति प्राप्त करेंगी जिससे शरीर में दुर्बलता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होगी। इस समय आपके कई शत्रु उत्पन्न होंगे तथा आप इनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी साथ ही आपके घर में चोरी भी हो सकती है। अतः चोरों से सावधान रहना चाहिए। नौकरी या व्यवसाय में आप सरकार या

उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा आप किसी भी प्रकार से दंडित हो सकती हैं। इस मास आपके शुभ कार्य अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा अनावश्यक रूप से धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके अतिरिक्त आपकी बुद्धि कठोर कार्यों की ओर भी प्रवृत होगी जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। आपके मित्रों तथा सम्बन्धियों से संबधों में तनाव उत्पन्न होगा जिससे आपस में अनबन रहेगी तथा आपकी आशाएं भी अल्प मात्रा में ही फलीभूत होंगी।

साथ ही इस मास में गर्मी या पित्तादि दोष से उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति होगी एवं किसी प्रकार से रक्त विकार आदि की भी सम्भावना हो सकती है। अतः दुर्घटना आदि से भी सावधान रहने की आवश्यकता है। इस प्रकार आपको लिए यह मास समान्यतया अशुभ फलदायक ही रहेगा।ह

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अनुकूल नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शुभ फलों के मध्य अशुभ फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय पति तथा बन्धु वर्ग से आपको कष्टानुभूति होगी या आपके पति या बन्धु वर्ग को किसी भी प्रकार का कष्ट हो सकता है।साथ ही आपके शत्रु भी इस मास बलवान होंगे तथा उनकी तरफ से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस समय आपके उत्साह में भी कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे मानसिक रूप से तनाव की अनुभूति करेंगी। साथ ही आर्थिक स्थिति में भी शिथिलता आएगी। आपके मन में लालच के भाव की भी वृद्धि होगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय बन्धुजनों से भी आपके सम्बन्ध विशेष मधुर नहीं रहंगे तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी वाद विवाद की आशंका बनी रहेगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आपको शुभ फल की भी प्राप्ति होगी। अतः आप पति एवं पुत्र से सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगे तथा इनसे आपको सन्तुष्टि प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को प्राप्त करने में भी सफल सिद्ध होंगी। इस प्रकार आपका यह मास शुभाशुभ फलों से युक्त होकर व्यतीत होगा।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यता कष्टकारी रहेगा तथा शुभ फलों की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी। इस समय शत्रु पक्ष से आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगी तथा उनके द्वारा आपके लिए समय समय पर अनावश्यक सम्स्याएं उत्पन्न होंगी जिससे आप चिन्तित रहेंगी। आपके घर में इस मास चोरी भी हो सकती है अतः आपको सतर्क रहना चाहिए। साथ ही आपका व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक स्थिति में शिथिलता आएगी। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसके अनुपालन में कोई रूचि लेंगी। इस महीने आपका स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से शारीरिक कष्ट

प्राप्त करेंगी जिससे शारीरिक बल में न्यूनता आएगी। इस मास आप दूर की यात्रा भी कर सकती हैं। इस समय सांसारिक कार्य भी प्रायः असफल होंगे एवं मुकद्दमे आदि में भी आप धन को व्यय करेंगी अतः बुद्धिमता से कार्यों को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप वातजन्य रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी एवं किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न कर सकती हैं जिससे आपके सम्मान तथा प्रतिष्ठा में कमी आएगी। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको धन हानि की आशंका रहेगी। अतः सोच समझ कर सावधानी पूर्वक समय व्यतीत करें।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही प्रसन्नता प्रदान करने वाला तथा भाग्यशाली रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी एवं अपने उच्चाधिकारियों को पूर्ण रूपेण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफल रहेंगी। जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। सन्तति पक्ष से इस मास आप पूर्ण सुख एवं सहयोग को प्राप्त करेंगी तथा घर में किसी प्रकार के धार्मिक उत्सव का भी आप आयोजन करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं इनकी आप हार्दिक पूजा तथा आदर करेंगी। इस मास में आप अपने सत्कार्यों से समाज में दूर दूर तक कीर्ति अर्जित करेंगी। साथ ही आपके भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में भी इस समय उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त आप घर से दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न करेंगी। अपने उच्चाधिकारी वर्ग से आपको यथोचित सहयोग एवं सम्मान प्राप्त होगा तथा मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर एवं घनिष्ठ सम्बन्ध रहेंगे। इस प्रकार आप इस समय सर्वत्र मान प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगी।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के मध्य आपको समय समय पर अशुभ फल की भी प्राप्ति होगी।अतः आपका स्वास्थ्य वात जन्य रोगों से अस्वस्थ रहेगा तथा इससे आप कष्ट प्राप्त करेंगी ।अतः सावधानी से अपन कार्य कलापों को सम्पन्न करें। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आपको हानि की सम्भावना हो सकती है।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय आपके उच्चाधिकारी तथा वरिष्ठ सहयोगी जन आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आप प्रोन्नत भी हो सकती हैं।मित्रों एवं बन्धुजनों से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी एवं उनकी भलाई के लिए कार्यों को करने में रूचिशील रहेंगी।आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सम्पन्न होंगे तथा मानसिक रूप से आप प्रसन्न रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं उनकी पूजा एवं सेवा करने में आप तत्पर रहेंगी। इस समय समाजिक जनों में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा समाज में यश भी प्राप्त होगा साथ ही अन्य प्रकार से भी धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल रहेंगी इसके अतिरिक्त पिछली असफल आशाओं में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में आप पति एवं पुत्रों से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी एवं बुद्धि में भी निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों या स्वर्णादि के आभूषणों को अर्जित करने में भी सफल होंगी। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही अनुकूल तथा शुभ रहेगा।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपके सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। साथ ही आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगे।पति या पुरूषवर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा लाभार्जन करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति आपकी इच्छा जाग्रत होगी एवं इसमें आप सफल रहेंगी ।मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा इनसे अपेक्षित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस मास आप वांछित पदार्थों की भी प्राप्ति करेंगी एवं सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगी। संतति पक्ष से भी आप सन्तुष्ट रहेंगी एवं उनसे वांछित सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी। इस समय समाज में आपका यश दूर दूर तक फैलेगा एवं सर्वत्र आपको उचित मान प्रतिष्ठा की प्रप्ति होगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतःआपको गर्मी या पित्त दोष के द्वारा शारीरिक रूप से कष्टानुभूति होगी एवं रक्त विकार की भी सम्भावना रहेगी तथा अग्नि से भी धन हानि हो सकती है। अतः सोच समझ कर अपने कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष लग्न स्थान में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता-पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

26 जून के बाद आपको संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। 26 नवम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्वराशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा

प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि की नवम भाव पर दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पत्नी के साथ हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। जून के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाऐंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या लोहे केतवे का दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और व्रत रखें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रूकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य-कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधिक काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई-बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपको बच्चों के बारे में शुभ समाचर मिलेंगे। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे।

सन्तान इच्छुक जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाई महसूस करेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

यह परिर्वतन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। 26 जून के बाद आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा परन्तु फरवरी के बाद मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई के बाद पंचम भाव

पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। 29 मार्च के बाद भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में गुप्त शत्रु विघ्न उत्पन्न कर सकते है जिसके कारण आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजयी प्राप्त करे लेंगे और आपके कार्यों पर कोई नकारात्म प्रभाव नहीं पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानी आ सकती है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्धिमानी से काम लें। 05 अक्टूबर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। द्वादशस्थ राहु के कारण अचानक कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। 29 मार्च के बाद अपने बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे।

25 अगस्त से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के

संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

25 अगस्त से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मार्च के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्रप्ति होगी। शिक्षा-दीक्षा के प्रति इनकी रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

08 अगस्त के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण मानसिक पेरशानी बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता व सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

25 अगस्त से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है या मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आपको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। 29 मार्च के बाद विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों को करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। 29 मार्च के बाद छोटी यात्राएं होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल व उन्नति कारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा-पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। 25 अगस्त से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रथम तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए श्रेष्ठतम रहेगा। जो आप चाहते हैं उसे पाकर ही रहते हैं यही बात आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। मई के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी में परिवर्तन चाहते हैं उनके लिए मई का महीना बहुत अच्छा रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपकी आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम माह छोड़ दिया जाए तो पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे और इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। मई के बाद रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तओं की प्राप्ति हो सकती है। आप कागजी कार्यवाही या फिर किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। नई योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंगें। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। शनि ग्रह के गोचर के बाद घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाएंगे। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

23 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। समाज में पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपकी सन्तान की शिक्षा-दीक्षा में सुधार व पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से उन्नति भी होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का शनि गर्भवती स्त्रियों के लिए अच्छा नहीं है। संतान के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आ सकती है। संतान के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा।

स्वास्थ्य

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति हैं जिसके कारण आप स्वस्थ्य रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

17 अप्रैल के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके लिए समय कुछ तनावपूर्ण हो सकता है। अपनी चिंता और व्याकुलता विजय पाने के लिए आप ध्यान या योग का सहारा ले सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर ईर्ष्या, प्रतिशोध और विश्वासघात जैसी बुरी भावनाओं को खत्म कर आपके अन्दर सकारात्मकता प्रदान करेगा जिससे आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी। आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती ही रहेंगी साथ ही सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक प्रतिकूलता के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 17 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का पाठ आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं, वो काबिले तारीफ है। 18 फरवरी से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। हालाँकि जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा वैसे ही आपकी जिन्दगी एक तेज गति पकड़ लेगी और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। राहु ग्रह का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए आप अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी। जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने कर्जे से मुक्ति मिल सकती है। फरवरी के बाद आपको अचानक धन लाभ भी होगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य में भी आपका पैसा खर्च होगा।

15 अक्टूबर के बाद आपको आर्थिक मामलों में ज्यादा सावधान रहना चाहिए। निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से दूर रहें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली बनी रहेगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

गुरु का गोचर आपकी माता के लिए काफी शुभ रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहार दोनों में बदलाव आएगा। 14 जुलाई के बाद प्रेम संबंधो में भी सफलता मिलेगी। किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। आपको मित्रों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्षारम्भ आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेगा परन्तु 18 फरवरी से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान सुख में कमी कर सकता है। अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रूकावटें आ सकती है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 15 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। 18 फरवरी से द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगा जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परिक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। 18 फरवरी से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहे तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु 18 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में मन्त्र जाप या साधना के प्रति आपकी रुचि अधिक रहेगी। आपकी अपने ईष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरु दीक्षा भी लेंगे। अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं पंचम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नति के लिए सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे।5 मार्च के बाद अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा।

मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान बढ़ेगा। आप से बड़े अधिकारी आपके कामों से संतुष्ट रहेंगे। 23 अक्तूबर के बाद अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति होगी। इस समय के अंतराल में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है जिससे आप अपने व्यापार को ऊँचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिये जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकीआर्थिक मेंवृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 31 मईसे शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रशस्त होंगे।

12 अगस्त से गुरु का गोचर द्वादश स्थान में हो रहा है। उस समय आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आर्थिक मामलो में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए और किसी प्रकार के जोखिम भरे कामों में धन निवेश नहीं करना चाहिए। 23 अक्तूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। चतुर्थस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगी। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर

सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा।

आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। आपकेजीवनसाथी के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाई-बहनोंके साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नही तो उनकी संगत गलत हो सकती है।5 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके बच्चों कीशिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच-बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो वे अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान केगुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ या पेट संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। 5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

31 मई से छठे स्थान के शनि आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति का विकास करेंगे जिससे आप स्वस्थ्य बने रहेंगे परन्तु 23अक्तूबर के बाद आप छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी या सर्दी-जुखाम से परेशान हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि वर्षारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकीशिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है।उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

मई से छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करा सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

5 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं

होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

12 अगस्त से द्वादशपर गुरुएवं शनि ग्रह की संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं और विदेशी संपर्कों से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन गणेश जी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

  ॐ गं गणपतये नमः।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं दशम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए यह वर्ष बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रहों का गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। आप अपने सभी अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

वर्ष के मध्य में द्वादश स्थान का मंगल आपके व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगी, अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरु हो जाएगी। इस समय के अंतराल में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 18 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। अपनी पारिवारिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक वातार्वरण के लिए उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी। परिवार में सुखी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

तृतीयस्थ केतु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके छोटे भाई बहनों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके पिताजी के स्वास्थ्य में भी उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय उत्तम है।

बच्चों के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी, जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी ऊर्जा मे वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नई गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना आदि।

व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपनी सेहत पर ध्यान नहीं देंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। परीक्षार्थियों को सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति अभी नौकरी की तलाश में है। उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी एवं बड़े अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। जो व्यक्ति व्यापार शुरु करना चाहते हैं। उनके लिए सुनहरा अवसर चल रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्रा या धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

वर्ष के मध्य में द्वादशस्थ मंगल पर शनि ग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मार्च के बाद आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है, जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रूद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र पूजाघर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्य उपासना करें या प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगा। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्य स्थल पर मान सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। इस समय को आप अपने जीवन का सबसे बेहतर समय बना सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु का संयुक्त गोचरीय प्रभाव व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अत्यधिक शुभ हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। यह उपलब्धी नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। आपके कार्य व्यवसाय में जीवनसाथी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होंगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। जिससे पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्त होंगे। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों का सलाह अवश्य लें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक लेन-देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझकर धन का उपयोग करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। कोई नया कार्य प्रारम्भ करने के लिए बेहतर समय नहीं है इसलिए कोई भी बड़ा निर्णय न लें। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में तत्पर रहेंगे। वाहन व भूमि

क्रय-विक्रय करते समय सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि अच्छी नहीं होती।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 28 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का माहौल बनेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अनावश्यक वाद-विवाद बहुत अधिक होंगे। तर्क-वितर्क की प्रवृत्ति आवश्यकता से अधिक हो सकती है जिसका सीधा नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार वालों पर तथा आपके जीवनसाथी पर पड़ेगा, साथ ही उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं भी बढ़ सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न करा सकता है। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो, इस पर विशेष ध्यान दें।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगा। 28 मार्च के बाद गुरु ग्रह क गोचर आपके दूसरे बच्चे के लिए काफी शुभ है। बच्चों के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। यदि दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो इस वर्ष अवश्य विवाह हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना आदि। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

13 जुलाई से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती हैं या प्रारम्भ हो सकती हैं। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान-पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर अपने लक्ष्य में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नए-नए तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासन, शिक्षण कार्य से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रैनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यापार में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 28 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे। नवमस्थ राहु के कारण आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। किसी प्रकार की यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना इत्यादि का योग बना है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ राहु के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर प्रसाद वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन करें। इसके प्रभाव से ग्रह जनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि सप्तम भाव में और सिंह राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं चर्तुथ भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण व्यापार में नए साझेदार मिल सकते हैं। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहने वाला है।

अष्टम भाव में राहु ग्रह का गोचर आपके व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके ला सकता है। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किए अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। किसी को लंबे समय से दिया हुआ धन वापस मिलने का योग है। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रही है। आयात-निर्यात करने वालों व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपके आय के स्रोतों में वृद्धि करेगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

6 अप्रैल के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ राहु के कारण धोखा या धन हानि का योग बन रहा है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। माता पिता की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अनावश्यक तनाव और विवाद की स्थिति बनेगी। शत्रु भी सर उठायेंगे और उनके कारण आप अशान्त रह सकते हैं। साथ ही करीबी लोगों का उतना साथ नहीं मिलेगा जितना आप उम्मीद लगाए बैठे हैं। कोई साथ का व्यक्ति जो आपके कार्यस्थल से सम्बंधित है धोखा दे

सकता है या उसके कारण आपको कुछ परेशानी उठानी पड़ सकती है। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। परिवार में एक-दूसरे के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है। परन्तु सास-ससुर को शारीरिक कष्ट होगा। समाज में आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। नाम प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। परन्तु दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। आपकी दूसरे बच्चे के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। यदि वे विवाह के योग्य है तो उनका विवाह हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद आपके दूसरे बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न कर सकती है, जिससे रक्तचाप, मधुमेह, एलर्जी या मस्तिष्क सम्बन्धी किसी बीमारी से परेशान हो सकते हैं। अतः अत्यधिक सावधानी बरतें और अपना ख्याल रखें। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अनावश्यक यात्राएं होंगी और उसमें भी शारीरिक कष्ट की सम्भावना रहेगी। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान कर सकते हैं।

अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करे। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। अप्रैल के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिए समय काफी शुभ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं, तो यह समय आप के लिए श्रेष्ठ हैं। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे

निकलना चाहते हैं, तो आपको अपनी नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव व भण्डादि कार्यों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। मार्च के बाद आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है इस उद्देश्य को मानेंगे और दूसरे को भी यही उपदेश देकर कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष शनिवार की प्रातः धारण करें। आपको राहु की शुभता प्राप्त होगी।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर सुबह-सुबह उसका दर्शन करें एवं ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 15 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह सब आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तम स्थान में राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अचानक आपके व्यापार में रुकावट उत्पन्न कर सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहें है तो यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

27 अगस्त के बाद समय और भी ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपके कार्यों में प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर अच्छा होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारंभ में चतुर्थ स्थान के गुरु आपको भूमि, भवन, वाहन के साथ संचित धन की प्राप्ति करा सकते हैं। माता से धन लाभ होने का अच्छा योग बन रहा है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत तो बढ़ेंगे परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर भी ज्यादा खर्च होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में कहीं से वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है। 27 अगस्त के बाद लेन देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। क्योंकि शनि ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। 15 अप्रैल से समय और भी अच्छा हो रहा है।

राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा, जिससे परिवार में किंचित नकारात्मक परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

15 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का बहुत ही शुभ समय चल रहा है। आपके बच्चे अनुकूल कार्य करेंगे। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। आर्थिक स्थिति को लेकर ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव से भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। 13 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। क्योंकि लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

27 अगस्त के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अष्टम स्थान का शनि कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है। अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापवाही न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 15 अप्रैल के बाद समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय बहुत अच्छा है। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। लेकिन 27 अगस्त के बाद करियर में उन्नति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। इस वर्ष आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

15 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी अधिक करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 15 अप्रैल के बाद आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी। साधना, योग व ध्यान आप अधिक करेंगे। अपने गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ायें और सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- बुधवार व शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें (तांबे की लोटे में चावल डालकर)।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। काम काज में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के कारण कुछ ऐसी परेशानी आ सकती है जिसका समाधान निकालने में अपने को असमर्थ समझेंगे। अप्रैल के बाद समय और भी प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

सितम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। फिर भी किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह के बिना महत्वपूर्ण फैसले न लें। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण सतर्कता बरतने की जरूरत है। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। इस बात को न भूलें की जल्दबाजी में लिए गए फैसले अक्सर गलत ही होते हैं। आपका कोई करीबी या कोई अन्य आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकता है। कारोबार से संबंधित सभी कार्यों में एहतियात बरतें और जो भी लेन-देन करें लिखित रूप में ही करें तो ज्यादा बेहतर होगा।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी है। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु 26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऐसे में आप लेन-देन के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अनुकूल करने में धन व्यय होगा। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

सितम्बर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होगा। फिर भी जोखिम उठाना कदापि उचित नहीं होगा। शेयर बाजार से दूरी बनाना निश्चित तौर पर आपके लिए लाभदायक होगा। बिना सोचे-समझे कहीं भी निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई व बच्चों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी अच्छा है।

26 अप्रैल के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अपनी वाणी पर नियंत्रण रखते हुए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें नहीं तो स्थिति और प्रतिकूल हो सकती है। सितम्बर के बाद धर्म पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर रहेंगे। मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय शुभ है। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही अनुकूल है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी उम्मीत रखते हैं वे उससे भी अच्छा करने वाले हैं।

26 अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। उस समय उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। सितम्बर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। नियमित व्यायाम करते रहेंगे। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करेंगे, जिससे अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

26 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि अचानक कोई बड़ी बीमारी दे सकती है। इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। तुला दान या महामृत्यंजय जाप आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। पंचम स्थान का गुरु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। गुरु ग्रह का गोचर आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

26 अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आपकी उन्नति रुक सकती है। प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती हैं। जिन लोगों को अभी तक नौकरी नही मिली है उनको सितम्बर तक इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि लम्बी यात्रा का योग बना रही है। धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे।

अप्रैल के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना इत्यादि। अप्रैल के बाद सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं। उस समय मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन नहीं लगेगा। आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें या मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढाएं।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित कर नित्य उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं अष्टम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं है। इस अवधि में आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे। सप्तम स्थान पाप कर्तरी योग में होने से प्रत्यक्ष एवं गुप्त शत्रुओं की वृद्धि होगी। वे आपको किसी षड्यन्त्र में फंसाने का प्रयत्न करेंगे और आप उनके बीच फंसा हुआ महसूस कर सकते हैं। परन्तु 11 मई से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके विरोधी एवं प्रतिद्वंदी शान्त होंगे तथा आपकी सफलता का मार्ग खुलेगा।

अक्टूबर के बाद आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। कुछ अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न होगा। यही आपकी व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपसे खुश रहेंगे। फिर भी किसी पर अत्यधिक विश्वास करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा क्योंकि अष्टम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। परिवार में रोग होने के कारण भी आपके व्यय अधिक होंगे, जिससे मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। परन्तु 11 मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। धनागम में निरंतरता होने के कारण पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

अक्टूबर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकते है। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे। बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से बचें।

घर-परिवार, समाज

मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम

लेना होगा। सप्तम स्थान पाप कर्तरी योग में होने से आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें। आपकी रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद-विवाद करने से परहेज करें। 11 मई से मित्रों व पत्नी के साथ संबंधो में सुधार होगा।

तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे खुशनुमा माहौल बना रहेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। परन्तु अक्टूबर के बाद अचानक आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उनको किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

संतान

छठे स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव उनके शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। 11 मई से समय उत्तम हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय उत्तम रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस वक्त बच्चों पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि 11 मई से समय किंचित अच्छा हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी, जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे।

7 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य सुख में कमी आ सकती है। यदि आपने छोटी मोटी बीमारियों को अनदेखा किया तो यह बड़ी चिंता जनक बनकर सामने आ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए समय समय पर चिकित्सक की सलाह का लाभ उठाना लाभकारी रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय शुभ नहीं है। परिश्रम के अनुसार परिणाम नहीं मिलेगा परन्तु आप अपने लक्ष्य के पथ

पर अग्रसर रहेंगे तथा सफलता की उम्मीद को लेकर आगे बढ़ते रहेंगे। 11 मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपका रुझान राजनैतिक, तन्त्र, यन्त्र, मन्त्र, विद्या, सिद्धि एवं चमत्कारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक होगा।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनके लिए यह समय शुभ है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अच्छी उन्नति करेंगे। अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप खुश नहीं रहेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। मई के बाद छोटी-माटी यात्राएं होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी अधिकांश यात्राएं अचानक होंगी।

सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यावसायिक यात्राएं होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अक्टूबर के बाद दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्यता के कारण कर नही पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्म को ही पूजा समझेंगे। 11 मई से धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में शुभ ग्रह स्थित होने से मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को हंसी खुसी के साथ मनाएंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में रुके हुए कार्य पूरे हो सकते हैं। व्यापार में मन्द गति से वृद्धि होने की संभावना बन रही है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय काफी शुभ है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 3 मार्च के बाद किसी के साथ मिलकर कार्य करने का प्रबल योग बन रहा है। लेकिन यह साझेदारी आपके लिए अच्छी नहीं रहेगी। अतः आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा।

5 अप्रैल से अष्टमस्थ शनि के कारण कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास नहीं करना चाहिए। उच्चाधिकारियों का सहयोग समय पर न मिलने के कारण परेशानियां बनी रहेंगी। आप अधिकारों व शक्तियों का दुरुपयोग करने से बचें। व्यावसायिक तथा सामाजिक स्तर पर उत्थान के लिए प्रयास अधिक लगन से करें। देर से ही सही आपको इस संबंध में सफलता अवश्य प्राप्त होगी। स्थितियों को सरलता से संभालने की आपकी कला का परिणाम, प्रशंसा तथा वित्तीय लाभ हो सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय अधिक अनुकूल हो रहा है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण कोई भी कार्य करेंगे तो उसमें सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लेन देन व निवेश के मामले में सावधान रहें तथा इस समय के अंतराल में अपनी आत्मशक्ति बढ़ाएं। 3 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। एकादश स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेगी, जिससे आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक मामलों के लिए सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में अधिक व्यय होगा। पंचमस्थ राहु के कारण पुत्र के रोग-व्याधि में भी आपके पैसे खर्च होंगे। यदि आप कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो 4 नवम्बर के बाद समय शुभ हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। परिवारिक विषयों को लेकर चिंताएं बनी रहेंगी। नवमस्थ शनि के कारण पिता जी के स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद विवाद सामने आ सकते हैं। परन्तु 3 मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। आपके भाईयों की उन्नति होगी। जीवनसाथी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। परिवार का सहयोग आपके साथ पूरी तरह से बना हुआ है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

साल का उत्तरार्द्ध आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित परेशानी बढ़ेगी। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। जितना हो सके पारिवारिक मतभेदों से दूर रहें। 4 नवम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान संबंधित चिंताए बनी रहेंगी। बच्चों की पढ़ाई लिखाई व उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। 7 अप्रैल से समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा।

पंचम स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों के लिए ज्यादा खराब है। उनको अपने खान पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा नहीं तो गर्भपात हो सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति की कमी होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। 4 नवम्बर के बाद आपके स्वास्थ्य में फिर से सुधार होगा। अर्थात वर्षान्त आपके लिए श्रेष्ठ है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए साल का प्रारम्भ श्रेष्ठ है। छठे स्थान के राहु अचानक प्रतियोगिता में उन्नति के मार्ग खोलेंगे तथा आपको प्रतियोगिता में इच्छित सफलता मिलेगी। 7 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। वर्ष का उत्तरार्द्ध उनके लिए काफी श्रेष्ठ है। यदि आप विदेश जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु एवं राहु की संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। नवम स्थान के शनि लम्बी लम्बी यात्राएं कराते रहेंगे। 5 अप्रैल के बाद सामुद्रिक यात्रा का भी आन्दन लेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप संतुष्ट रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्यता व दीर्घसूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। 7 अप्रैल के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी आस्था एवं विश्वास में कमी कर सकता है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना के प्रति आप आकर्षित होंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मो पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- वीरवार का व्रत करे एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलेगी तथा अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। आमदनी के स्रोत बढ़ेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद व्यावसायिक स्थिति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं। काम धंधे में भी रुकावटें आ सकती हैं, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। लेकिल 28 जून के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे तथा उन्नति के मार्ग पर फिर से अग्रसर होंगे।

लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि नवीन विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगी, जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सफल बनाएंगे। आय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलेगी तथा 3 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें क्योंकि 6 अप्रैल से आपका अनावश्यक खर्च बढ़ने वाला है। इस समय के अंतराल में आर्थिक हानि होने के प्रबल योग बन रहे हैं। लेन देन के मामले मे सावधान रहें तथा जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए फिर से शुभता का संकेत ले कर आ रहा है। शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने की संभावना बन रही है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 3 दिसम्बर के बाद अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन का व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 6 अप्रैल के बाद आपके माता पिता जी

के लिए भी समय शुभ नहीं रहेगा। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। दोस्ती में भी दरार आ सकती है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

28 जून से समय अच्छा हो रहा है। पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। 3 दिसम्बर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा तथा परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए उत्तम रहेगा। वे अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। संतान संबंधित चिंताएं बढ़ेंगी। आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

गर्भवती स्त्रियों को बड़े ध्यान से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है। 28 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो वर्षान्त में विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको अपने खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी होगी। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

28 जून से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में फिर से सुधार होगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे भी वृद्धि होगी। जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह योगा व व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 28 जून के बाद नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ आपकी धार्मिक यात्राएं भी खुब होंगी।

इन यात्राओं के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है। यह

मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 3 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही श्रेष्ठ है। दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में भी आपका मन कम ही लगेगा। 28 जून से समय फिर से शुभ हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- केला, बेसन के लड्डू व पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार को व्रत रखें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में प्रवाहित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं। ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष कार्य व्यवसाय के लिए अनुकूल रहेगा। व्यापारी बंधु अपनी कर्तव्य-निष्ठा व परिश्रम के कारण अपनी आमदनी बढ़ाने में सफल रहेंगे। लंबे समय से रुके हुए आपके कार्य अब तेज गति पकड़ेंगे। आप नए कार्यों में हाथ डालने के लिए आतुर रहेंगे। लेकिन जल्दबाजी करने से बचें व सोच-समझकर धन निवेश करें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है। यदि आप नौकरी में हैं तो वर्षारम्भ में कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। स्थानान्तरण का भी योग बन रहा है। भूमि, भवन व वाहन से जुड़े लोगों को 6 मई के बाद नुकसान हो सकता है। अतः खरीद-बेच करते समय कागजी कार्यवाही पर पूर्ण ध्यान दें।

मई से जुलाई तक अपने सहकर्मियों के साथ उचित तालमेल बना कर चलना आपके लिए फायदेमंद रहेगा। कार्यस्थल में व्यर्थ वाद-विवाद से बचें। वर्षान्त आपके लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। अपने उच्च अधिकारियों की तरफ से आपको मान-सम्मान, पुरुस्कार या शाबाशी मिल सकती है। शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको वांछित पद की प्राप्ति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। आय में निरंत्रता बनी रहेगी परन्तु पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। 6 मई के बाद जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश करने व किसी को पैसे उधार देने से बचें। दीर्घकालीन निवेश के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा।

उत्तरार्द्ध में हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति करा सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। माता की बीमारी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान का राहु घर परिवार के लिए अच्छा नहीं है। कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंच सकती हैं तथा परिवार में कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर

प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार वैमनस्यपूर्ण भी रह सकता है। आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपके सम्बन्धों में खटास आ सकती है। मई से जुलाई तक का समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है।

यदि आपने निष्ठा के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास किया तो आपके संबंध संतोषप्रद रह सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। सामाजित पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनके दिल में स्नेह, आदर्श व सम्मान का भाव बढ़ेगा। आप लोगों के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। 6 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों की उन्नति में सहायक होंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्षान्त बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकी शिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं। अतः इस अवधि में उन पर विशेष ध्यान देना होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत के लिए अच्छा है। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसमजनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। 6 मई के बाद आप योग क्रियाओं के द्वारा मन को एकाग्र करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी।

25 सितम्बर के बाद चोट व दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव भी रह सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 6 मई के बाद समय शुभ हो रहा है। इस अवधि में आपको इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो यह समय उत्तम है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 25 सितम्बर के बाद वांछित सफलता मिलेगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

यात्रा-तबादला

शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से इस वर्ष छोटी-बड़ी यात्राएं खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

सितम्बर के बाद विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें तथा किसी के साथ मित्रता न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। 25 सितम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन नीली वस्तु का दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं दशम भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह वर्ष अति उत्तम होगा। अच्छे मुनाफे मिलने के आसार हैं। हर हाल में आपको लाभ होने वाला है। चतुर्थस्थ राहु के कारण वर्ष के पूर्वार्द्ध में व्यावसायिक सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। जून के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे। कारोबार का विस्तार होगा तथा सरकारी ठेके मिलेंगे। इसके साथ ही कारोबार में पूंजी लगाने वाले लोग भी मिलेंगे। कुल मिलाकर आपके लिए समय अनुकूल है, उसका लाभ उठाएं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सेवारत लोगों को अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान-सम्मान बढ़ेगा। नई व बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावन है। नौकरी से संबंधित आपकी सभी ख्वाहिशें पूरी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में चतुर्थस्थ राहु के कारण कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन 22 जून के बाद तीव्र गति से लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। आपकी राह की सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन निर्वाध रूप से होगा। लेकिन इसके लिए आपको अपनी दिनचर्या में कुछ आधारभूत बदलाव करने होंगे।

22 जून के बाद आपकी जमापूंजी में तेजी से वृद्धि होगी। कुल मिलाकर आर्थिक रूप से यह वर्ष बेहतर साबित होगा। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें। यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु अचानक पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। 22 जून तक परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। माता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

22 जून को राहु ग्रह के गोचर के साथ परिवार में आपसी सद्भाव का माहौल

बनेगा। पारिवारिक रिश्ते बेहतर होंगे तथा समय आनन्द के साथ व्यतीत होगा। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। जिन्दगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद भी करेंगे। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि सामाजिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

आपके बच्चे हर प्रकार की प्रतियोगिता परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। धन प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त होंगे। आपकी सन्तान को पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होने का पूर्ण योग बन रहा है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी सन्तान सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लेगी। उनके पराक्रम, प्रभाव तथा आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त वे परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपकी सेहत अच्छी रहने वाली है। कोई बड़ी समस्या नहीं की उम्मीद नहीं है। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे वृद्धि होगी। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा।

राहु के कारण मौसम संबंधित बीमारी परेशान कर सकती हैं, परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। रहन-सहन व दिनचर्या में सुधार करें तथा सुबह शाम व्यायाम करना भी आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता के तैयारी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय अत्यधिक अनुकूल है। यदि आप कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं या शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है।

22 जून को तृतीय स्थान में राहु का गोचर प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं अधिक होंगी। जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको

इच्छित लाभ मिलेगा ।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षा व साक्षातत्कार के लिए यात्रा हो सकती है। आध्यात्म की प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थलों की यात्रा कर सकते है। देश विदेश घूमने के अवसर भी मिलेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप कोई विशेष पूजा अनुष्ठान करेंगे। जैसे अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण या अन्य कोई हवन इत्यादि, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी एवं आपका मान सम्मान बढ़ेगा।

दुर्गा बीसा यंत्र धारण करने से चतुर्थस्थ राहु के गोचर से उत्पन्न होने वाली परेशानियों के निदान हेतु सहायता मिलेगी।

- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं। ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य क्षेत्र में इस वर्ष आपको एक नई दिशा मिलेगी। आपकी कार्यक्षमता और रचनात्मक ऊर्जा बहुत अच्छी बनी रहेगी। इसका सदुपयोग करें। आय के नए स्रोत खुलेंगे। अवसर का पूरा फायदा उठाएं। कार्यक्षेत्र में आपके विचारों की सराहना होगी। बड़े अधिकारी आपके काम से प्रसन्न रहेंगे। यदि अपना व्यवसाय आरम्भ करना चाहते हैं तो यह उचित समय है। अवसर और साधन आसानी से प्राप्त होंगे। नए कारोबारियों से आपका संपर्क बनेगा। उनके साथ काम करके आप नई ऊँचाईयों को छूएंगे। विशेषतः भविष्य में आर्थिक उन्नति के लिए अभी धन का निवेश करेंगे जिसका आने वाले भविष्य में अच्छा लाभ मिलेगा।

नौकरी करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। दशमस्थ शनि के कारण नौकरी बदलने के ढेरों नए अवसर मिलेंगे, मनचाही नौकरी मिलेगी और पदोन्नति भी होगी। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ परेशानियां आएंगी। लेकिन 30 जुलाई के बाद से समय आपके अनुकूल हो जाएगा। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं। इसे नजरअंदाज न करें तथा अपने शत्रुओं से सावधान रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध अधिक खर्च वाला होगा। इस समय धन का आगमन तो होगा परन्तु अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारो के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय भी होगा। साथ ही जो व्यक्ति मकान, भूमि या वाहन की सोच रहे हैं उनके लिए यह समय ज्यादा खर्च वाला है। घ ार के पुनर्निमाण पर भी खर्च बढ़ेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक रूप से उत्तम रहेगा। धन की चिंता से मुक्ति मिलेगी तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई या मित्र से लाभ प्राप्त होगा। भौतिक सुख सुबिधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। निवेश के लिए यह समय काफी अनुकूल है। यदि इस समय आपने निवेश किया तो आपको इच्छित लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार

में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे तथा सभी कार्यों में उनका सहयोग मिलता रहेगा। विवाहित लोगों के लिए संतान प्राप्ति का योग बन रहा है। तृतीय स्थान का राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रभावित रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं आ सकती हैं। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा में व्यवधान आने की संभावना बन रही है तथा उनके उन्नति के मार्ग भी प्रभावित होंगे। इस समय के अंतराल में उनको सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

30 जुलाई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च स्तरीय शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश होगा। आप अपने बच्चों पर गुरुर करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उत्तम समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण आपको पित्त या पेट संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद परिस्थितियां सामान्य हो जाएंगी।

आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि किसी कार्य में विलम्ब भी हो तो उसे ईश्वर के शुभ संकेत के रूप में स्वीकार करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सितम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में आपको विशेष सफलता नहीं मिलेगी, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है।

आप पढाई-लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते

हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है तथा आप किसी भी प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की पूर्ण संभावना है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी। अपने कार्य में विस्तार हेतु या विद्यार्थी वर्ग उच्च शिक्षा की प्राप्ति हेतु विदेश जा सकते हैं।

आपके पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण के योग हैं। परिवार में किसी यादगार यात्रा एवं सुखमय यात्रा का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। विभिन्न व्यक्तियों एवं कार्यशालाओं जो धर्म पर आधारित हों उनमें भाग लेंगे। साथ ही वृद्धाश्रम एवं मंदिर के निमार्ण हेतु दान भी करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण आप निःस्वार्थ भाव से पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे।

- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- अपने पूजाघर में श्वेतार्क गणपति स्थापित करें।
- पांच मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए वर्षारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 16 फरवरी के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आप अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापार में आपको भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। इस अवधि में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है तथा इस ब्राण्ड नेम से आपको भविष्य में अत्यधिक लाभ मिलेगा। द्वितीय स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर कोई नकारात्मक प्रभाव नही पड़ेगा तथा आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे।

नौकरी करने वाले लोगों की पदोन्नति का पूर्ण योग बन रहा है। समय समय पर आपको बड़े अधिकरियों का सहयोग मिलता रहेगा तथा कार्यस्थल पर सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे।

धन संपत्ति

शुरु के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आर्थिक स्थिति के लिए अनुकूल बना रहेगा। एकादशस्थ शनि के कारण पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। आय के मार्ग की सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्य के प्रति सजग रहेंगे। 16 फरवरी के बाद आपकी आर्थिक स्थिति अधिक सुदृढ़ होगी। लेकिन आंख बंदकर किसी पर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है, क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु आपके लिए अच्छा नहीं है।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में इस वर्ष अधिक खर्च होंगा। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप शेयर बाजार, लॉटरी व सट्टा इत्यादि से जुड़े हैं तो इस वर्ष ज्यादा सावधान रहने की आवश्यकता है। किसी तरह का जोखिम न लें।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। घरेलू मामलों में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं, टालने की कोशिश करें। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्टकारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद करने से

परहेज करें नहीं तो मानसिक अशान्ति बढ़ सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद करेंगे। आपके भाई-बहन आपको आर्थिक रूप से सहायता कर सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए भी यह साल श्रेष्ठ है।

संतान

वर्ष के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपकी संतान के लिए श्रेष्ठ है। 16 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए शुभ है। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे तथा उनकी शिक्षा के स्तर में सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष विवाह होने का पूर्ण योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

वर्ष के दो माह जनवरी व फरवरी छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन प्रसन्नचित्त बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में खूब मन लगेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने के लिए आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे।

द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ शारीरिक कष्ट हो सकते हैं तथा बदलते मौसम के कारण भी आप बीमार हो सकते हैं लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। इस वर्ष आपकी वजन बढ़ने की संभावना लग रही है अतः मक्खन, घी और मिठाई का सेवन कम करें तथा नियमित रूप से व्यायाम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा कहा जा सकता है। तकनीक व विज्ञान से जुड़े विद्यार्थियों के लिए इस वर्ष सफलता के योग बने हुए हैं। करियर में आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे।

नौकरी व करियर में अधिकारी से तनाव होने की संभावना है। व्यापार में आप नई तकनीक, हुनर व मशीनरी का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा इसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही नौकरी करने वाले व्यक्तियों का तबादला होगा तथा यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि आप विदेश जाना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

16 के बाद धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। व्यापारिक या शैक्षणिक कार्यों हेतु आपकी यात्रा समीपवर्ती क्षेत्रों में होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

16 फरवरी के बाद आपका मन पूरी तरह से धार्मिक कार्यों में संलग्न होगा एवं इसमें आपको अपने परिवार का भी पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

- प्रतिदन गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें तथा बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा (घास) चढ़ाएं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजन घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालिसा का पाठ करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(02/03/2024 - 03/03/2031)

मंगल की महादशा 02/03/2024 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 03/03/2031 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल सप्तम भाव में अपनी ही राशि में स्थित है और आपकी कुण्डली में अति शक्तिशाली रुचक योग की रचना कर रहा है। मंगल की दृष्टि चतुर्थ, पंचम और प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। चन्द्र के लग्न का स्वामी होने के कारण आपको सम्पत्ति, आरम्भ, सुख और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, उच्च सम्मान की प्राप्ति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें स्फूर्ति और पहलशक्ति होगी और आप पूरी दशा के दौरान सक्रिय रहेंगे। आप प्रतिस्पर्धी तथा स्वतंत्र होंगे और आप में रोगों से लड़ने की क्षमता होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको तापसंबंधी बीमारी, फोड़ा या संक्रामक बीमारी हो सकती है। आपकी कुछ छोटी मोटी दुर्घटनाएं हो सकती हैं। उन्हें छोड़कर आमतौर से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ होगा। आपकी खुद की कमायी सम्पत्ति होगी। आपको जमीन-जायदाद तथा माता से लाभ होगा। इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा, शक्ति और अधिकार में उन्नति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी। आपको सफलता, ख्याति तथा सम्मान मिलेगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय या पुलिस क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। आप योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में अच्छा करेंगे। आप सामुद्रिक पदार्थों तथा कुटीर उद्योग अपना सकते हैं। आप एक सफल सर्जन या देतचिकित्सक हो सकते हैं या आपकी एक सफल तकनी की अथवा कृषि वृत्ति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता मिलेगी और आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा।

व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी, कर्मचारियों की आय में वृद्धि, लाभ की प्राप्ति तथा पद में उन्नति होगी। व्यवसाय में प्रगति और उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप अपने वाहन को बदल कर नया ले सकते हैं। बुध की अन्तर दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी। जमीन-जायदाद के मामलों के लिये यह दशा उत्तम है। आपको जमीन जायदाद तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। जमीन-जायदाद के सारे मामले आपके लिये लाभदायक होंगे।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षा में सफल होंगे और किसी प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। तकनीकी विषय आपके लिए शुभ होंगे। आप विज्ञान, गणित, इन्जीनियरिंग, प्रौद्योगिकी आदि पसन्द करेंगे। आप उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और उसमें बहुत अच्छा करेंगे। इस दशा के दौरान आप व्यवसायिक प्रशिक्षण ग्रहण कर सकते हैं। आपकी नेतृत्व तथा संगठन क्षमता सामने आएगी।

परिवार :

परिवार में आप के सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपको आपके बच्चे से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सुन्दर रहेगा। आपके जीवन साथी की जीवन वृत्ति सक्रिय होगी, आय में वृद्धि और लाभ की प्राप्ति होगी। अपने परिवार की शान्ति के लिए व्यवहार कुशलता तथा शान्ति से कार्य लेना होगा। आपकी माता को कुछ स्वस्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें लाभ का अवसर मिलेगा। आपके पिता को लाभ, समृद्धि तथा सम्पत्ति को प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में परिवर्तन, अचानक धन तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। बड़ों का व्यय, यात्रा तथा परिवर्तन होगा। आपके मित्रों तथा परिचितों की संख्या विशाल होगी। आपको ख्याति मिलेगी और आप अपनी नेतृत्व व संगठन की क्षमता के कारण जाने जाएंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके व्यवसाय में प्राप्ति होगी और आपको यश, ख्याति, प्रतिष्ठा और बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति, जमीन-जायदाद तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन, स्वास्थ्य-समस्या और साझेदारी में लाभ मिलेगा। इसके बाद बुध की अन्तर्दशा के कारण आपकी यात्रा और व्यय होगा जबकि केतु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मानसिक तनाव होगा। शुक्र की अन्तर्दशा के कारण सुख, परिवार का आनन्द और लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा आपको आराम और धन का लाभ दिलायेगी जबकि चन्द्र यश, ख्याति, सफलता तथा सुख देगा।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(29/07/2024 - 17/08/2025)

आपके लिए मंगल की महादशा 02/03/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 29/07/2024 को प्रारंभ होकर 17/08/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपके विदेशियों से व्यापारिक संबंध बन सकते हैं। शत्रुओं पर विजय होगी। विपरीत लिंग के लोगों से लाभ हो सकता है। जनसंपर्क बढ़ेगा। विवाह हो सकता है। विवाह से धनलाभ होगा। जीवन में खूब तरक्की होगी। आप साहसी और तीव्रता से निर्णय लेने वाले होंगे। सम्मान और उच्चपद का संकेत है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता धनार्जन करेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी; उनके धन में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहन निवेश और सट्टेबाजी से लाभ कमा सकते हैं।

आपकी संतान को परिश्रम करना होगा। उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर से कार्यरत हैं तो खूब धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता तरक्की करेंगे। व्यापारी धनी बनेंगे और अनुबंधों पर हस्ताक्षर करेंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(17/08/2025 - 24/07/2026)

आपकी मंगल की महादशा 02/03/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/08/2025 को प्रारंभ होकर 24/07/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप कुछ धन बिना परिश्रम के भी प्राप्त कर सकते हैं। अचानक धन आ सकता है। आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। अध्यात्म या पराविद्या में रुचि हो सकती है। उत्तम भोजन और वस्त्र उपलब्ध रहेंगे, परिवार में वातावरण मधुर रहेगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता से लाभ होगा। समाजसेवा में भाग लेंगे। शुभ कार्यों पर धन खर्च होगा।

आपके जीवनसाथी खूब धन प्राप्त करेंगे। आपके पिता धर्म और अध्यात्म में रुचि लेंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, वे शत्रुओं पर विजयी होंगी। आपके भाई-बहनों के

कार्यालय उत्तम होंगे, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी, कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी; शिक्षा के लिए उत्तम समय है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, लघु यात्राएं हो सकती हैं। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा, मगर उदर रोगों से बचाव आवश्यक है। मामूली व्याधिओं को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शनि
(24/07/2026 - 02/09/2027)

आपके लिए मंगल की महादशा 02/03/2024 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 24/07/2026 को प्रारंभ होकर 02/09/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपको पुत्रों से धन और खुशी की प्राप्ति होगी। आपका मन अध्यात्म और दान-धर्म में लगेगा। ज्योतिष का अध्ययन कर सकते हैं। धन, सम्मान, और सफलता का संकेत है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आय में वृद्धि होगी। आपकी कार्यक्षमता की तारीफ होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। ठेकेदारी, नौकरी आदि से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी उत्साही रहेंगे। आपके पिता के कार्य पूर्ण होंगे। माता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। भाई-बहनों की साख में वृद्धि होगी, विवाह हो सकता है, यात्रा और अनुबंधों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं।

वातजन्य रोग, गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए भैरवजी के रूप में शिवजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - बुध
(02/09/2027 - 29/08/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 02/03/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 02/09/2027 को प्रारंभ होकर 29/08/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपकी लंबी यात्रा हो सकती है। प्रकाशन कार्य के लिए समय शुभ है। पत्रलेखन से लाभ होगा। उच्च शिक्षा के अवसर मिलेंगे। बहुत से मित्र होंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिलचस्पी बढ़ेगी। शिक्षा, विज्ञान या धर्म से संबंधित यात्रा हो सकती है। भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। धन कमा सकते हैं। जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी विचारों की उत्तम प्रस्तुति द्वारा या कमीशन कार्य से धन कमा सकते हैं। आपके पिता समृद्ध और प्रसन्न होंगे। माता समाजकार्य में रुचि लेंगी। भाई-बहनों को भागीदारी, व्यापार, विवाह से लाभ हो सकता है। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपकी संतान को उच्चशिक्षा में सफलता मिलेगी, भाग्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी, कार्य में प्रगति करेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को यात्रा और व्यापार से लाभ होगा।

स्नायविक थकान और पैरों की व्याधि से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मूंग की दाल दान में दें।

अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(29/08/2028 - 25/01/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 02/03/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/08/2028 को प्रारंभ होकर 25/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। मानसिक शांति, प्रसिद्धि और धनलाभ का योग है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। घरेलू सुख मिलेगा, संतान से खुशी मिलेगी। आप स्वभाव से मददगार हैं। किसी फैसले को करने से पहले गहन विश्लेषण करते हैं। आप साहस का परिचय देंगे। लाभकारी यात्राएं हो सकती हैं। व्यापार में लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपकी माता की तीर्थयात्रा हो सकती है; उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके भाई-बहनों के सम्मान में वृद्धि होगी। उन्हें सफलता और समृद्धि मिलेंगी, बाधाओं को पार करेंगे।

आपकी संतान के पिता के साथ मधुर संबंध रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो यात्रा हो सकती है; भाग्यशाली रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं; अप्रत्याशित धन मिल सकता है। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी होंगे; सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

उदर रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को उपवास करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शुक्र
(25/01/2029 - 27/03/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 02/03/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 25/01/2029 को प्रारंभ होकर 27/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन सुखी रहेगा; जीवनसाथी के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। व्यापार में लाभ हो सकता है, सौभाग्यशाली होंगे। किसी और को दिया धन वापस आ जाएगा। कला और संगीत में रुचि होगी। उच्चपद और प्रसिद्धि की प्राप्ति होगी। सत्कार्यों में भाग लेंगे और साख में वृद्धि होगी। भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। समाजसेवा से सुख मिलेगा।

आपके जीवनसाथी का भाग्य उत्तम होगा, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। आपके पिता सुख-सुविधाओं, भूमि और वाहन आदि से युक्त रहेंगे। माता के परिवारजनों और मित्रों से संबंध मधुर रहेंगे। भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, संतान से सुख मिलेगा, निवेश से लाभ होगा, यात्राएं होगी, जीवनसाथी से सुख मिलेगा।

आपकी संतान की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। अगर वे सेवारत हैं तो धन कमाएंगे, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को प्रसिद्धि और धन का संकेत है। व्यापारी धन कमाएंगे। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उदर रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - सूर्य
(27/03/2030 - 02/08/2030)

आपकी मंगल की महादशा 02/03/2024 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 27/03/2030 को प्रारंभ होकर 02/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपको किसी अप्रत्याशित स्थान से धन प्राप्त हो सकता है। सेवानिवृत्त होने वालों को पेंशन, ग्रेच्युटी आदि प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी मगर उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी जिससे आपको भी लाभ पहुंचेगा। शिक्षा उत्तम होगी। धन प्राप्त हो सकता है। वाक्शक्ति से दूसरों को प्रभावित करने में सफल होंगे।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी, उच्चपद प्राप्त होगा। पिता के खर्चे बढ़ेंगे, शत्रुओं पर विजयी होंगे। भाई-बहनों को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा,

महादशा :- राहु
(03/03/2031 - 03/03/2049)

राहु की महादशा 03/03/2031 को आरम्भ और 03/03/2049 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति, साझेदारों से लाभ और स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या हुई होगी। राहु की इस दशा में आपको यात्रा तथा वाणिज्य-व्यवसाय में लाभ तथा विदेश में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको पित्तरोग, उदररोग, ज्वर, सरदर्द, फोड़ा-फुन्सी, व्रण (फोड़ा), अल्सर आदि रोग हो सकते हैं। सन्तुलित भोजन तथा अन्य उपायों से इनमें से बहुतों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको वाणिज्य-व्यापार, यात्रा तथा विदेश से लाभ होगा। किसी भी अनुबंध या समझौते के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। आपको सट्टे तथा निवेश में पर्याप्त लाभ होगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए दवा, कम्प्यूटर, रसायन, वैमानिकी, उड्डयन तथा मशीन से संबंधित क्षेत्रों का चयन कर सकते हैं। दवा, एण्टीबायोटिक, यंत्र-उपकरण, मंशीनरी आदि का व्यापार-लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को पर्याप्त लाभ मिलेगा और पदोन्नति तथा स्थानान्तरण होगा। आपको अपने सहायकों व सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों की जीवन-चर्या में प्रगति होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा व्यापार में विस्तार होगा। जीवन चर्या में प्रगति के लिए यह दशा अत्यन्त सुन्दर है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख प्राप्त होगा। आपको जमीन जायदाद से लाभ तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको भू-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आप प्रेरित और दृढ़निश्चय होंगे और बड़ी संख्या में शिक्षा से अलग गतिविधियों में भाग लेंगे। दवा, कम्प्यूटर-विज्ञान, गणित, विज्ञान, इन्जीनियरिंग आदि विषयों में आपकी रुचि होगी। आप में नेतृत्व-गुण विद्यमान हैं जो इस दशा के दौरान सामने आएंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की छोटी यात्रा, उत्तम

स्वास्थ्य और जीवन-चर्चा में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी को सम्पत्ति, कुछ मामूली सवास्थ्य-समस्या और वाणिज्य-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपकी माता की अचल सम्पत्ति का संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। जबकि पिता को समृद्धि, सम्पत्ति तथा अर्थ प्राप्ति के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, आय में अचानक वृद्धि और शिक्षा में समस्या होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को ख्याति, यश, पद और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा, जीवनचर्या में उन्नति और विवाह होगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, मामूली स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों पर विजय मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में उत्तम शिक्षा, बच्चों से सुख, सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा के दौरान खुशहाली, लम्बी यात्रा और पिता से लाभ मिलेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न करेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में चौतरफा समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा सफलता मिलेगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में हर प्रकार का लाभ मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान प्रगति और जीवन में सफलता मिलेगी जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, व्यवसाय में प्रगति और व्यापार में लाभ होगा।

अंर्तदशा :- राहु - राहु
(03/03/2031 - 13/11/2033)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/03/2031 को प्रारंभ होकर 03/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 03/03/2031 को प्रारंभ होकर 13/11/2033 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी रुचि ऐशो-आराम और अय्याशी में हो सकती है। निम्न कोटि के या विदेश के विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध हो सकते हैं। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - गुरु
(13/11/2033 - 08/04/2036)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/03/2031 को प्रारंभ होकर 03/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 13/11/2033 को प्रारंभ होकर 08/04/2036 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 12, 2, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अप्रसन्न रह सकते हैं पर दयालु होंगे। पापकर्म में रुचि हो सकती है पर दिखावा ऐसा करेंगे जैसे बहुत धर्मात्मा हों। बुरी आदतों के शिकार हो सकते हैं। विपरीत लिंग के बदनाम लोगों से संबंध हो सकते हैं। सावधान रहना आवश्यक है वर्ना बुरे फंस सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के तांत्रिक मंत्र के 76000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - शनि
(08/04/2036 - 13/02/2039)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 03/03/2031 को प्रारंभ होकर 03/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 08/04/2036 को प्रारंभ होकर 13/02/2039 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 11, 3, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके पेट में फोड़ा हो सकता है। आप साहसी होंगे, एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। धर्म में रुचि कम होगी, घरेलू जीवन में मितव्ययी हो सकते हैं। दान-धर्म की संस्था के व्यवस्थापक बन सकते हैं। शनि आपको धैर्यवान बनाएगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए नीलम चांदी या सोने की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार के दिन पूजा के बाद दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में, अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर शनि के वैदिक मंत्र का उच्चारण करते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(13/02/2039 - 01/09/2041)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/03/2031 को प्रारंभ होकर 03/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 13/02/2039 को प्रारंभ होकर 01/09/2041 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान बनेंगे, विज्ञानादि विभिन्न विषयों का ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। विभिन्न नगरों में व्याख्यान दे सकते हैं। पिता और गुरु से संबंध मधुर रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(01/09/2041 - 20/09/2042)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/03/2031 को प्रारंभ होकर 03/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 01/09/2041 को प्रारंभ होकर 20/09/2042 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

लग्न में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप किसी व्याधि से ग्रसित हो सकते हैं। शरीर दुर्बल हो सकता है। फोड़े-फुंसी हो सकते हैं। साख में गिरावट आ सकती है। मष्तिष्क बेचैन रह सकता है। उत्तेजना अधिक रहेगी। इस कारण विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है। यह अंतर्दशा अशुभ हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 8000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(20/09/2042 - 19/09/2045)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/03/2031 को प्रारंभ होकर 03/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 20/09/2042 को प्रारंभ होकर 19/09/2045 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव, लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी विषय-वासनाओं में रुचि हो सकती है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक हो सकता है मगर आपकी दिलचस्पी मौज-मस्ती और सुरापान में हो सकती है। आपके बहुत से मित्र होंगे, लोकप्रिय बनेंगे। विवाहेतर संबंध हो सकते हैं, जिस कारण कोई गुप्त रोग पनप सकता है। विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ साझेदारी वाले व्यापार में लाभ हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें

- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

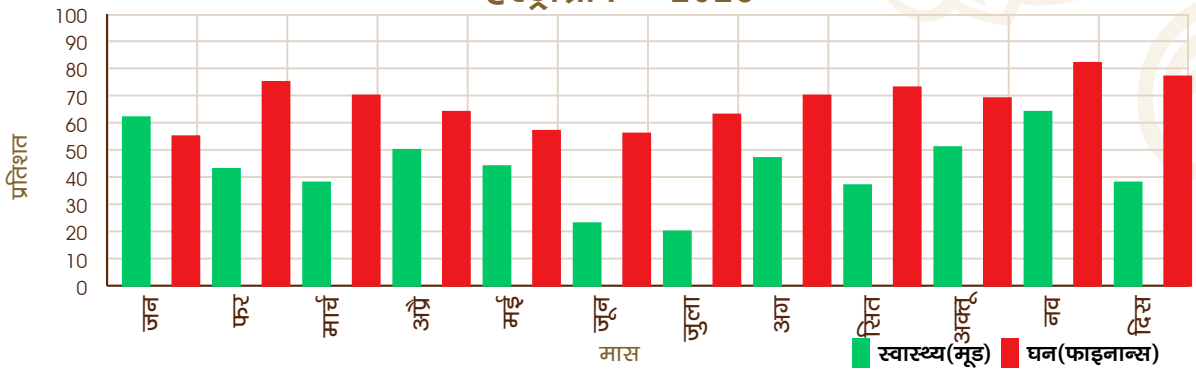

एस्ट्रोग्राफ - 2026

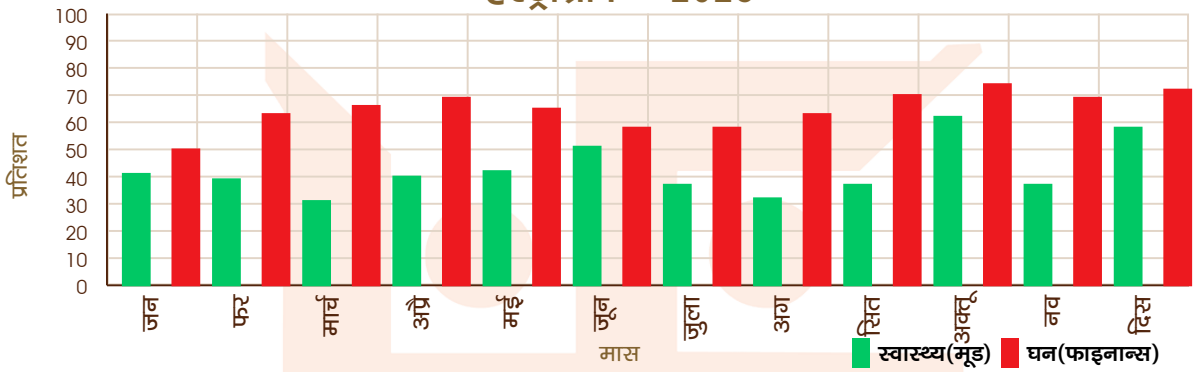

एस्ट्रोग्राफ - 2027

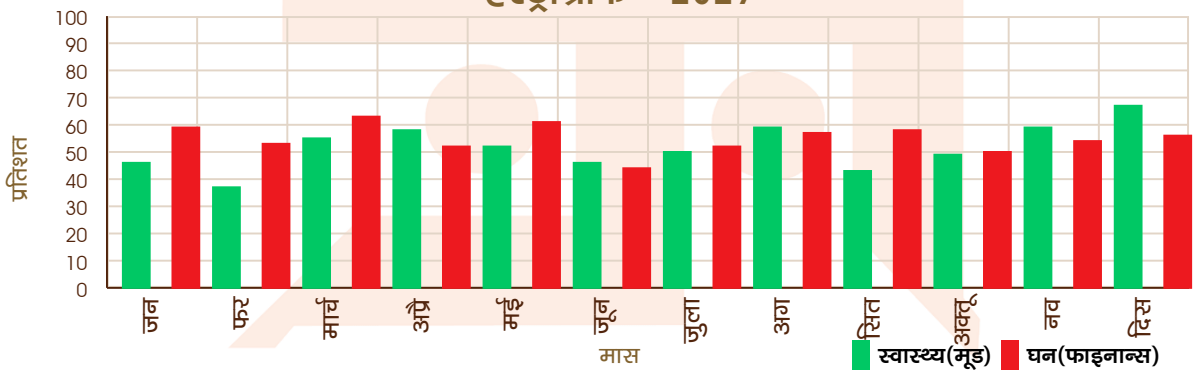

एस्ट्रोग्राफ - 2028

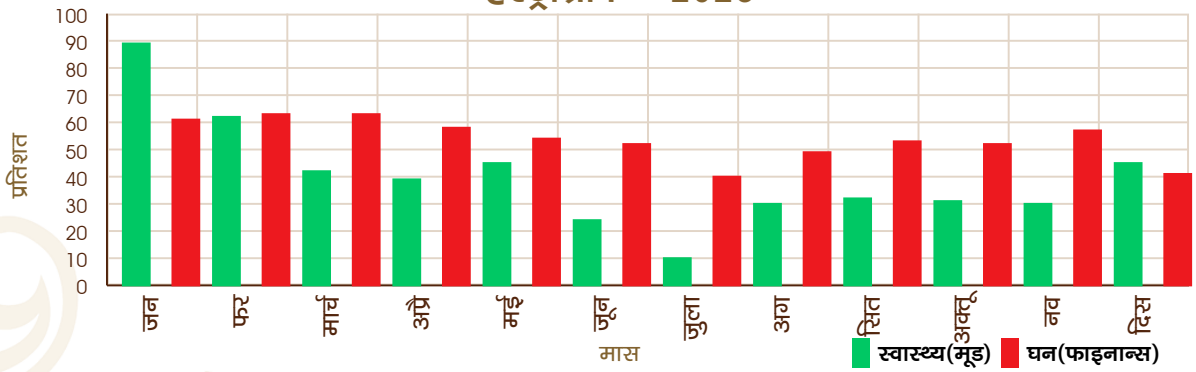

एस्ट्रोग्राफ - 2029

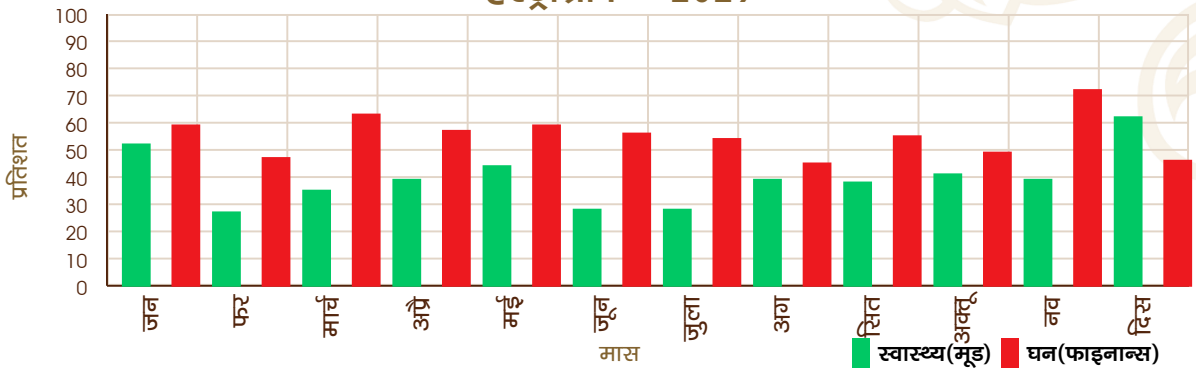

एस्ट्रोग्राफ - 2030

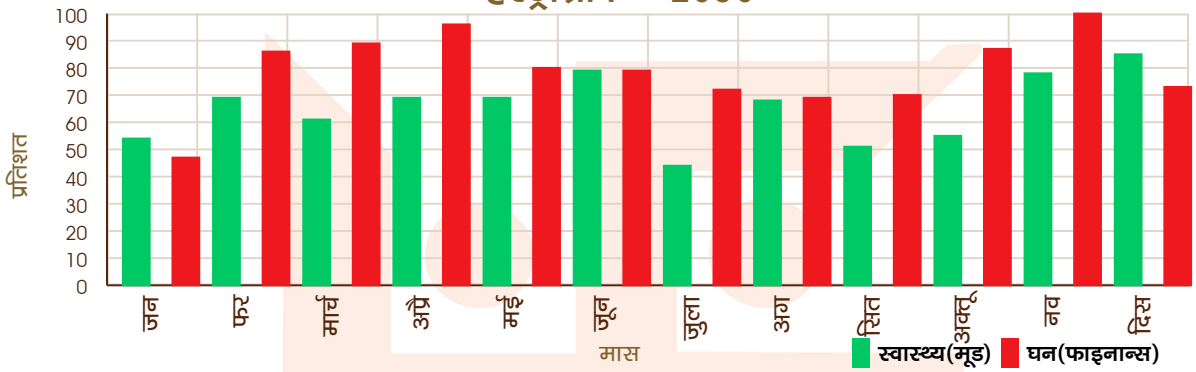

एस्ट्रोग्राफ - 2031

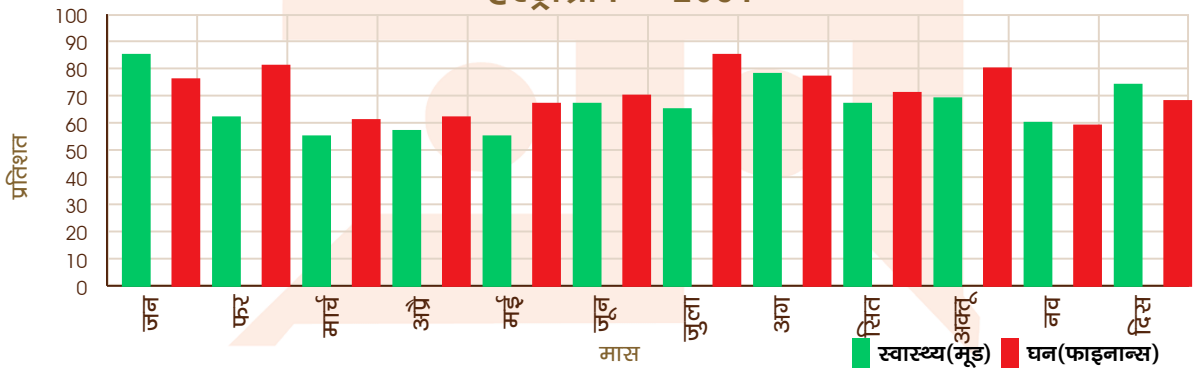

एस्ट्रोग्राफ - 2032

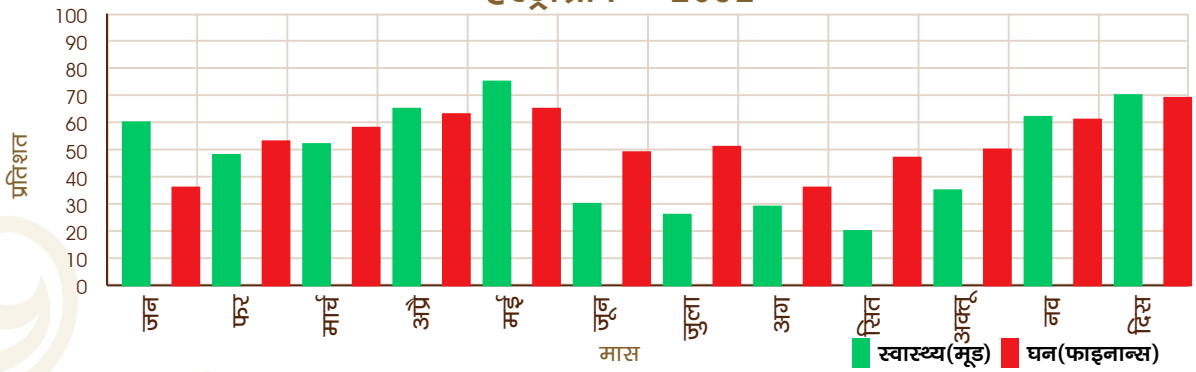

एस्ट्रोग्राफ - 2033

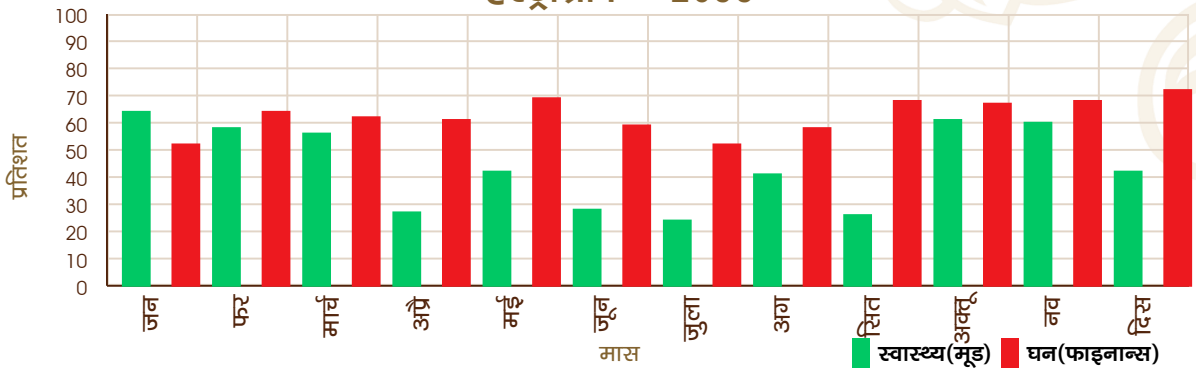

एस्ट्रोग्राफ - 2034

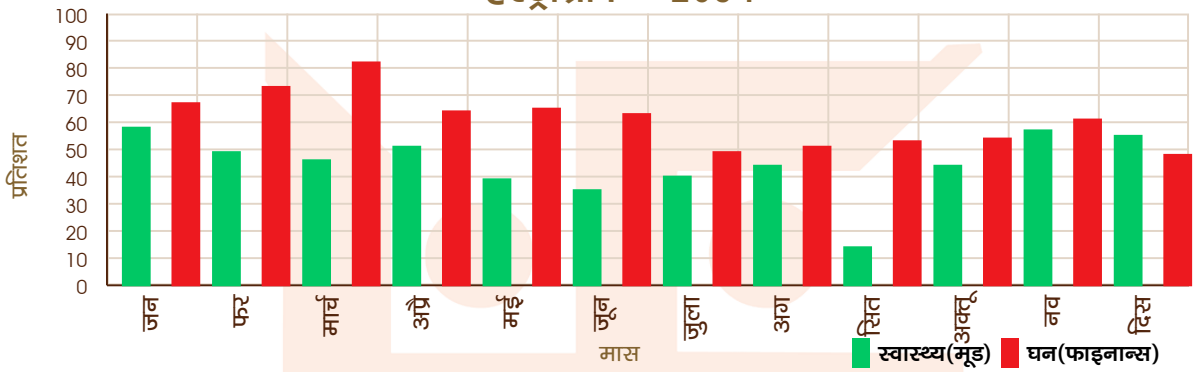

एस्ट्रोग्राफ - 2035

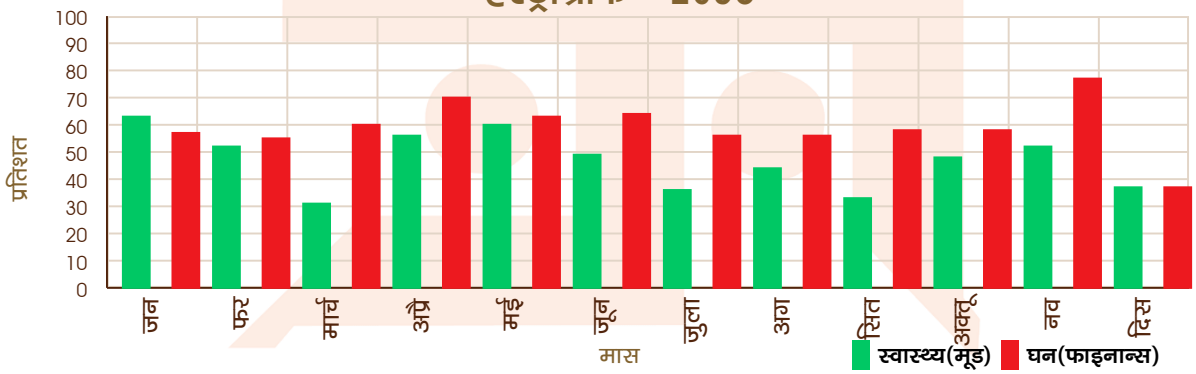

एस्ट्रोग्राफ - 2036

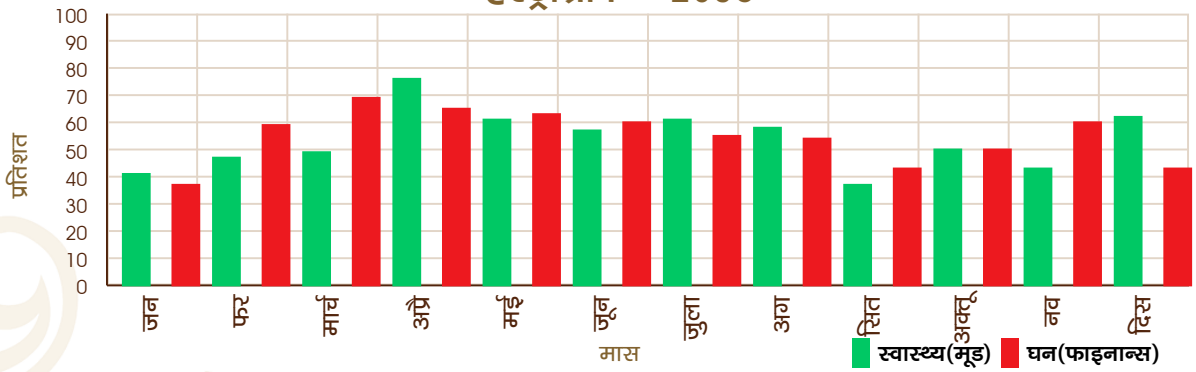

एस्ट्रोग्राफ - 2037

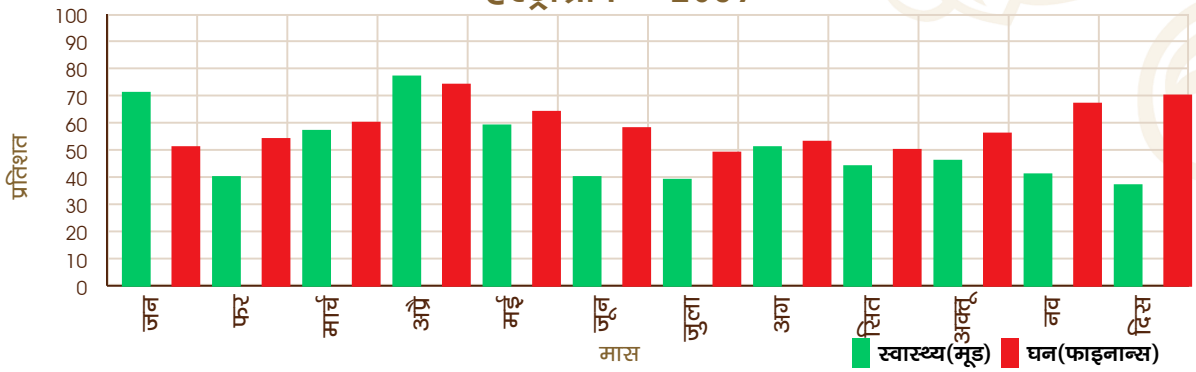

एस्ट्रोग्राफ - 2038

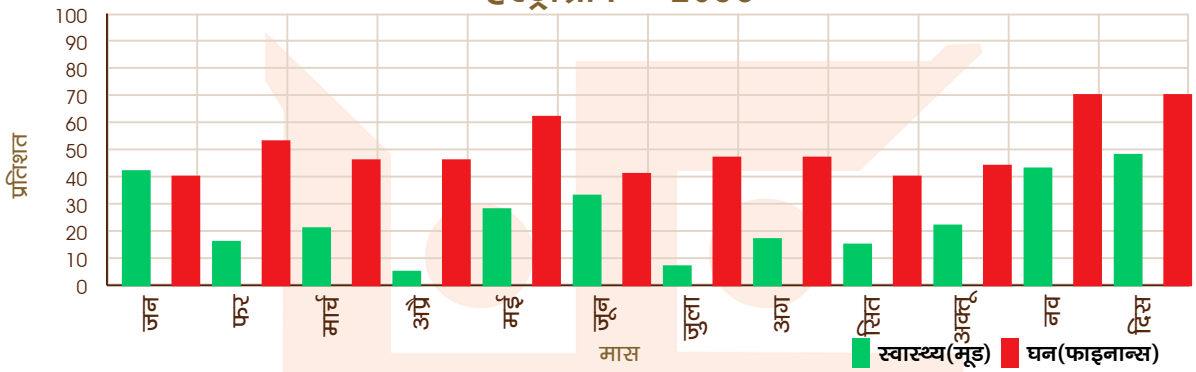

एस्ट्रोग्राफ - 2039

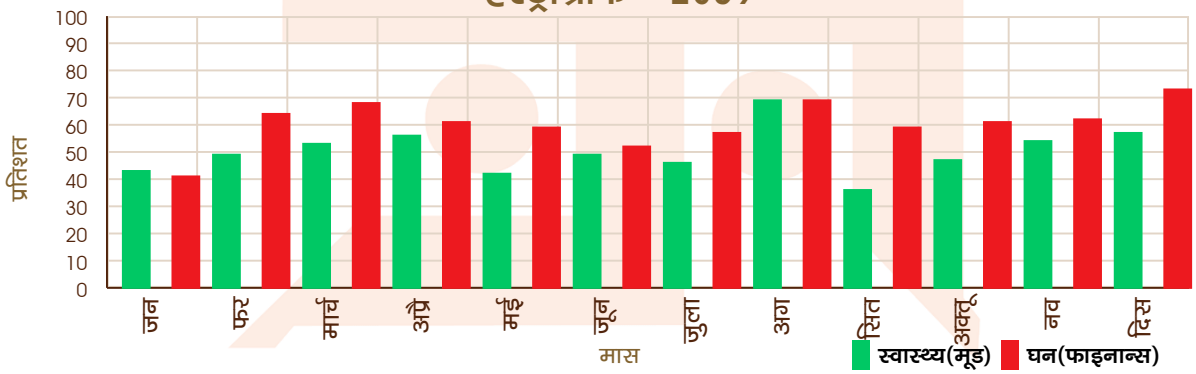

एस्ट्रोग्राफ - 2040

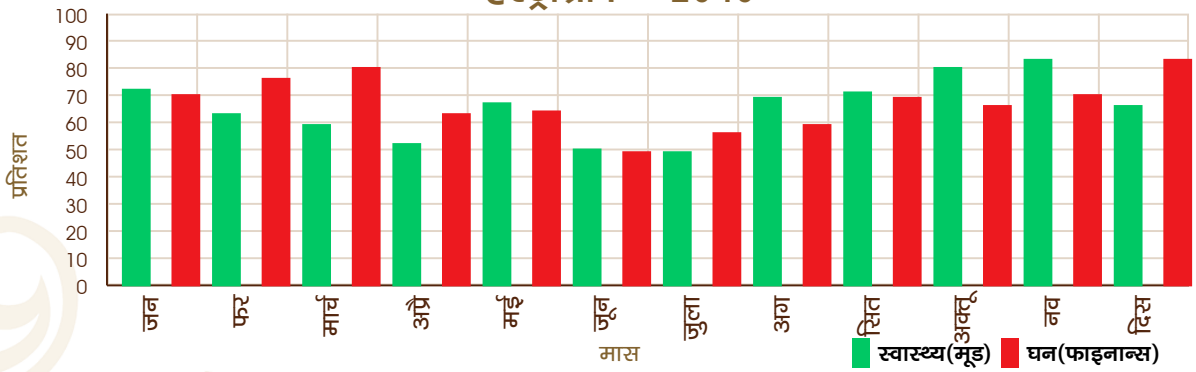

एस्ट्रोग्राफ - 2041

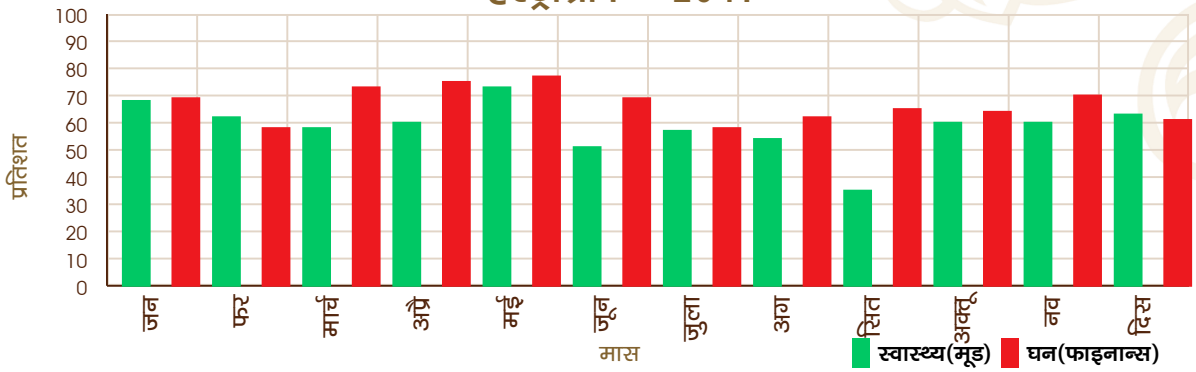

एस्ट्रोग्राफ - 2042

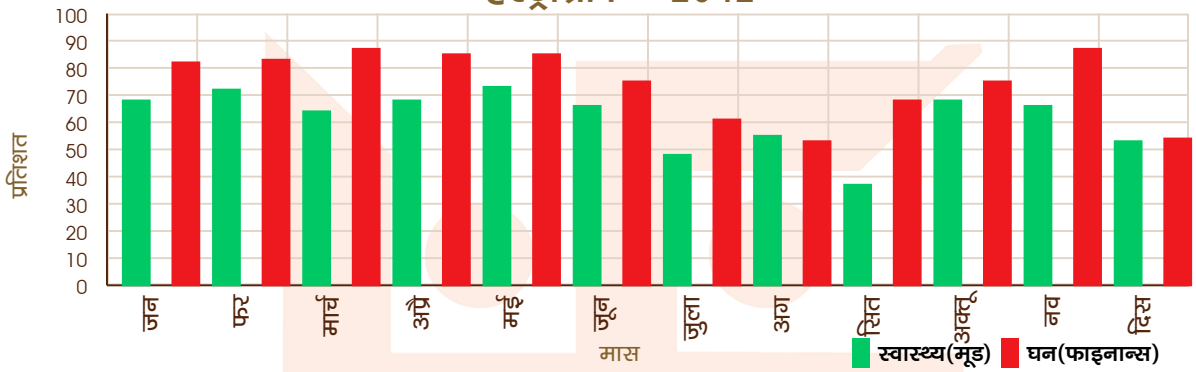

एस्ट्रोग्राफ - 2043

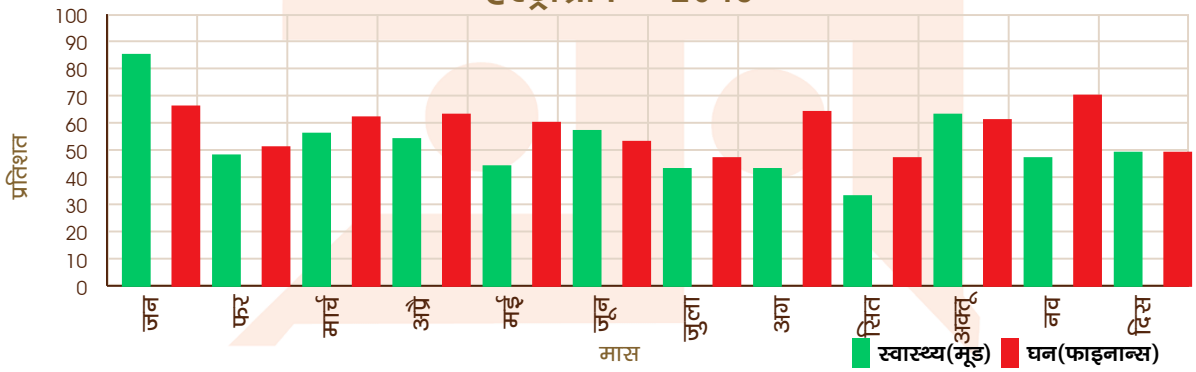

एस्ट्रोग्राफ - 2044

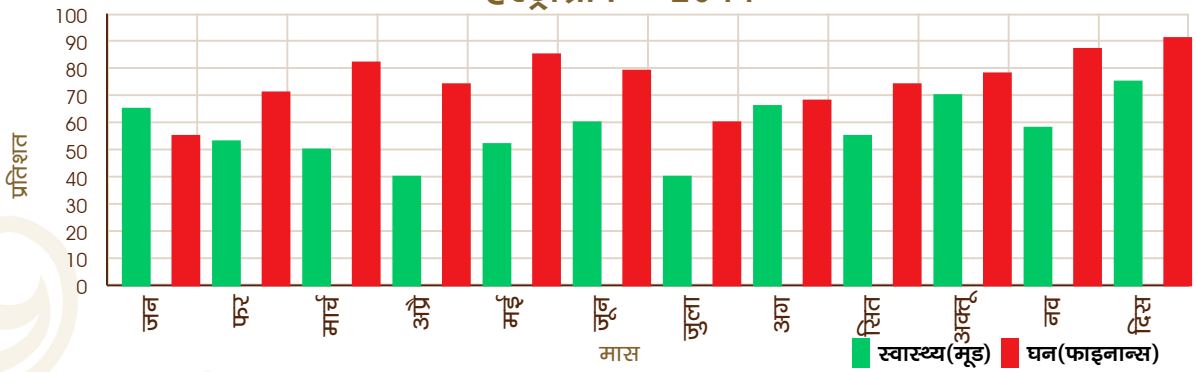

योग

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्र्याद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,बुध — योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : मंगल — योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

पर्वत योग

लग्नाधिप्राप्तभूपतिस्थितराशिनाथः
स्वोच्चस्वभेषु यदि कोणचतुष्टयस्थः।
योगः स पर्वताख्यः।
स्थिरार्थसौख्यः स्थिरकार्यकर्त्ता क्षितीश्वरः पर्वतयोगजातः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 35, 36।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका सुख और धन दोनों स्थिर रहेगा। आप स्थिर कर्म करेंगे। मकान बनवाना, बाग लगाना, कल-कारखाने की स्थापना आदि आपके स्थिर कार्य होंगी,

काम योग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
परदारपराङ्मुखो भवेद्वरदारात्मजबन्धुसंश्रितः।
जनकादधिकः शुभैर्गुणैर्महनीयां श्रियमेति कामजः।।
।। फलदीपिका।। अ. 6 / श्लोक 44, 51।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा सप्तम स्थान में शुभ ग्रह बैठे हो एवं सप्तम भाव का स्वामी स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो कामयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दूसरे के स्त्री में आसक्त नहीं होंगे और आपको उत्तम जीवनसाथी, सन्तान और बन्धुओं का सुख

प्राप्त होगा। आप शुभ गुणों से युक्त लक्ष्मीवान् होंगे। आप अपने पिता से अधिक उच्च पद प्राप्त करेंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

भूप योग

तुङ्गव्योमचरे तपःस्थलगते भूपः शुभालोकिते।
।। जातकपारिजात ।। अ. 14/श्लोक 73 ।।

यदि अपनी उच्च राशि में नवम राशि गत कोई ग्रह हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक भूप होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि,केतु योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप राजकीय सुखों से युक्त होंगे।

गदायोग

केन्द्रप्रत्यासन्नैर्भवनद्वयगैर्गदा नाम ।।
सततं मानार्थपरा यज्वानः शास्त्रयोगकुशलाश्च।
धनकनकरत्नसम्पत्संयुक्ता मानवा गदायान्तु।।
।। सारावली ।। अ. 21/श्लोक 13, 32।।

सप्तम से दशम में सभी ग्रह हो तो गदा योग का निर्माण होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,मंगल,बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 16384 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप युद्ध

निपुण, गायन कला में पारंगत, धार्मिक, धन एवं यश प्राप्ति हेतु उत्कंठित एवं सुखी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप ल क्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विद्वान योग

सुखेशे केन्द्रभावस्थे तथा केन्द्रे स्थितो भृगुः ।
शशिजे स्वोच्चराशिस्थे विद्वान्पण्डित एव सः ।।
।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-6

यदि जन्मपत्रिका में सुखेश केंद्र में हो और शुक्र भी केंद्र में हो तथा बुध अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पंडित एवं विद्वान होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,बुध — योग की संभावना : 108 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पंडित एवं विद्वान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विद्यावाहन सम्पत्ति विपुल धन योग

स्वोच्चराशिगतश्चान्द्रिः केन्द्रकोणसमन्वितः ।
विद्यावाहनसम्पत्तिं करोति विपुलं धनम् ।।
।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.-107 ।।

जन्मपत्रिका में बुध यदि केंद्र या त्रिकोण में अपनी उच्च राशि का हो तो विद्या, वाहन, संपत्ति और विपुल धन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध — योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको विद्या, वाहन, संपत्ति और विपुल धन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,राहु,गुरु — योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र — योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-30 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री रत योग

जीवज्ञौ यदि वा निशाकरसितौ कामे बहुस्त्रीरतः।
।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-4।।

यदि जन्मपत्रिका में बुध और गुरु सप्तमस्थ हों अथवा चंद्रमा और शुक्र सप्तमस्थ हों तो बहुस्त्रीरतयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बहुत विपरीत लिंगी से युक्त रहेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

जायेशे शुभयुतेरिनीचगे सप्तमेपापे द्विभार्यः।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त होकर अपनी शत्रु या नीच राशि में हो और सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शनि योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,बुध,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र,राहु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।